यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 49, सं. 3 VOL.XXXXIX NO. 3, मुंबई जुलाई-सितंबर, 2022

जम्मू - कश्मीर एवं लेह विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

अनुक्रमणिका Contents

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
लाल सिंह

Chief General Manager (HR)
Lal Singh

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे

Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
ए. के. विनोद
शैलेश कुमार सिंह

Editorial Advisors
A. K. Vinod
Shailesh Kumar Singh

Printed and published by **Dr. Sulabha Kore** on behalf of Union Bank of India and printed at **UCHITHA GRAPHIC PRINTER PVT. LTD.** 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013. and published at Union Bank Bhavan, Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - **Dr. Sulabha Kore**
E-mail : sulabhakore@unionbankofindia.bank
Our Address : Union Dhara,
Ground Floor, Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.
E-mail : uniondhara@unionbankofindia.bank
Mob. No. 9820468919
Tel.: 022-22896517

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at
UCHITHA GRAPHIC PRINTERS PVT. LTD.,
Mumbai-400 013

यूनियन धारा UNION DHARA

जुलाई-सितंबर, 2022 July-September, 2022

प्रकाशन तिथि : 15.11.2022

- परिदृश्य 3
- क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ / क्षेत्र प्रमुख, अमृतसर का संदेश 4
- संपादकीय 5
- जम्मू-कश्मीर व लेह लद्दाख - अतीत से अब तक की यात्रा 6-7
- जम्मू-कश्मीर, लेह की विशेषताएं 8-9
- साहित्य साहित्य - डॉ. शाद रमज़ान 10-11
- काव्य धारा 12-13
- जम्मू-कश्मीर के दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थान 14-15
- Famous writers of Jammu - Kashmir & Leh laddakh 16
- डोगरी, हिन्दी एवं उर्दू का अविस्मरणीय हस्ताक्षर - पद्मा सचदेव 17-18
- Artificial Glacier 19
- Food & clothing of J - K & Leh 20-22
- Folk Music of Jammu-Kashmir & Leh 23-24
- विशेष साक्षात्कार - डॉ. सतीश विमल 25-27
- जम्मू-कश्मीर और लेह के मुख्य त्योहार 28
- जम्मू-कश्मीर के मंदिर 29-30
- स्वर्ग सा सुंदर श्रीनगर 31-32
- जम्मू-कश्मीर की प्रसिद्ध हस्तियां / समोवर 33-35
- जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोग 36-38
- Rajtaringini 39
- सिंधु दर्शन महोत्सव / Dachigam National Park 40
- बाल प्रतिभा / हमें गर्व हैं 41
- What's new 42-43
- सेंटर स्प्रेड : सफर-ए-जन्नत 44-45
- Economy of Jammu-Kashmir & Leh 46-47
- जम्मू-कश्मीर एवं लेह का युवा 48-49
- शिखर की ओर / शुभमस्तु 50-51
- Kashmiri Apple 52-53
- उमलिंग-ला - एक ठंडा रेगिस्तान 54-55
- Agriculture of Jammu-Kashmir & Leh 56-57
- घाटी में आतंकवाद का चेहरा 58-59
- हमारे महत्वपूर्ण ग्राहक 60-61
- Industrial development in Jammu and Kashmir 62-64
- नई प्रतियोगिता / परिणाम 65
- सेवानिवृत्त जीवन से 66-67
- Face in UBI Crowd 68-70
- जीवन के लिए जागरूकता 71
- पुरस्कार और सम्मान 72
- समाचार दर्शन 73-85
- हेल्थ टिप्स / व्यंजन 86
- आपकी पाती 87
- बैक कवर 88

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय यूनियनाइट्स,

हमारी द्विभाषी पत्रिका यूनियन धारा के माध्यम से एक बार फिर आपको संबोधित करने में मुझे अत्यंत खुशी हो रही है. सर्वप्रथम, मैं यूनियन धारा के सभी पाठकों को एक खुशहाल और समृद्ध नव वर्ष की शुभकामनाएं देती हूं.

मुझे खुशी है कि यूनियन धारा का वर्तमान विशेषांक जम्मू और कश्मीर (J&K) को समर्पित है. मुझे उम्मीद है कि यह विशेषांक देश के लिए जम्मू-कश्मीर के समृद्ध सांस्कृतिक, पारंपरिक और आर्थिक महत्व को पर्याप्त रूप से उजागर करेगा. कश्मीर को अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पहाड़ों, स्मारकों, हस्तशिल्प और मेहमाननवाज लोगों के लिए **'धरती पर स्वर्ग'** के रूप में जाना जाता है. यह अपनी संरक्षित संस्कृति और आत्मसात आध्यात्मिकता के लिए भी एक जीवंत स्थान है. जम्मू और कश्मीर मुख्य रूप से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है जिसकी अधिकांश आबादी कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से जुडी हुई है. जम्मू-कश्मीर के लोगों ने विविध चुनौतियों का सामना करने के लिए साहस और जुझारूपन दिखाया है. सरकार विभिन्न विकास गतिविधियों को अंजाम दे रही है और पूर्व की इस रियासत के विकास के लिए प्रतिबद्ध है. हम एक बैंक के रूप में जम्मू-कश्मीर की उभरती वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं. यूनियन बैंक की जम्मू-कश्मीर में 19 शाखाएं और 17 एटीएम हैं. उपस्थिति सीमित होने के बावजूद, हम जम्मू-कश्मीर की प्रगति और विकास के लिए सेवाओं की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित कर रहे हैं.

मुझे यह देखकर भी खुशी हो रही है कि 'यूनियन धारा' को इन-हाउस पत्रिका श्रेणी के लिए पीआरसीआई गोल्ड अवार्ड मिला है. मैं इस उपलब्धि के लिए टीम को बधाई देती हूं.

बैंक ने वर्तमान वर्ष के दौरान कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है कि हमें चालू वित्त वर्ष की पहली दो तिमाहियों के लिए लगातार EASE सुधार सूचकांक में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के बीच दूसरे रैंक से सम्मानित किया गया है. प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बैंक को आईबीए द्वारा भी सम्मानित किया गया है. ये पुरस्कार कारोबार के विभिन्न क्षेत्रों में बैंक द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों की पहचान हैं.

हम वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं और परिचालन लाभ में 15% की वृद्धि के साथ हम 19 ट्रिलियन के कारोबारी लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. हमें व्यापार में निरंतर और स्थिर वृद्धि सुनिश्चित करने की आवश्यकता है. इसलिए हमारे लिए हर दिन महत्वपूर्ण है. आइए, हम अपना संपूर्ण प्रयास करें और शानदार उपलब्धि हासिल करें.

शुभकामनाओं सहित,

Dear Unionites,

It is my pleasure in reaching out to you once again through our bi-lingual journal Union Dhara. First and foremost, I wish all the readers of Union Dhara a happy and prosperous new year.

I am happy that the present edition of Union Dhara is dedicated to Jammu & Kashmir (J&K). I hope that this edition will adequately highlight the rich cultural, traditional and economic significance of J&K for the country. Kashmir is very rightly referred to as the **'paradise on earth'** for its scenic beauty, mountains, monuments, handicrafts and hospitable people. It is also a lively place for its preserved culture and imbibed spirituality. J&K is predominantly an agrarian economy with majority of its population engaged in agriculture and allied sectors. The people of J&K have shown courage and resilience in the face of various challenges. The Government is undertaking various developmental activities and are committed towards the development of the former princely state. We,as a Bank are continuously striving to meet the emerging financial needs of J&K. Union Bank has 19 branches and 17 ATMs in J&K. Though limited in presence, we are ensuring seamless flow of services to the growth and development of J&K.

I am also happy to see that `Union Dhara' has received PRCI Gold award for In-house magazine category. I compliment the Team for their achievement.

The Bank has taken many important steps during the year and it is a proud moment for all of us that we have been awarded the 2ndRank among PSBs in the EASE Reforms Index, consecutively for the first two quarters of the current financial year. The Bank has also been awarded by IBA in the field of technology. These awards are a recognition of the continuous efforts put in by the Bank, under different business areas.

We have now entered the last quarter of the financial year and are marching towards our business target of Rs.19 trillion with a 15% growth in our Operating Profit. We need to ensure a consistent and steady growth in business. Therefore, each day is vital for us. Let us put all our efforts and come out with flying colours.

With Best Wishes,

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

(A. Manimekhalai)
Managing Director & CEO

क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ का संदेश...

Message from Field General Manager, Chandigarh

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि बैंक की कॉर्पोरेट पत्रिका 'यूनियन धारा' का सितंबर 2022 तिमाही अंक दुनिया का स्वर्ग कहे जाने वाला स्थान 'जम्मू और कश्मीर' पर प्रकाशित हो रहा है. यह चंडीगढ़ अंचल के लिए बड़े ही सौभाग्य और सम्मान की बात है कि केंद्रीय कार्यालय से प्रत्येक तिमाही में प्रकाशित की जाने वाली 'यूनियन सृजन' का पिछला अंक हरियाणा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया था तथा 'यूनियन धारा' का यह अंक चंडीगढ़ अंचल के अंतर्गत जम्मू और कश्मीर पर प्रकाशित किया जा रहा है. मैं इस अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चंडीगढ़ की ओर से यूनियन धारा के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ. मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि जम्मू और कश्मीर का यह विशेष अंक आप समस्त पाठकों को बेहद पसंद आएगा. इस अंक में जम्मू और कश्मीर के सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक पहलुओं को विस्तृत रूप से समाहित किया गया है. जम्मू और कश्मीर के तीन मुख्य अंचल हैं: जम्मू, कश्मीर और लद्दाख. यहाँ के अधिकांश जिले हिमालय पर्वत से ढके हुए हैं.

क्षे.म.प्र.का. चंडीगढ़ का कार्य क्षेत्र चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर व लद्दाख तक फैला हुआ है. इसके अंतर्गत कुल 8 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जिसके अंतर्गत कुल 516 शाखाएँ हैं. बैंक का ऊर्जावान कार्यबल अंचल में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है. यहाँ पदस्थ समस्त स्टाफ सदस्य सदैव बढ़-चढ़ कर बैंक की प्रगति में अपना योगदान देते रहे हैं. इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'यूनियन सृजन' के 'हरियाणा विशेषांक' से स्टाफ सदस्यों में उत्साह व गौरव का माहौल सृजित हुआ है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी अंचल के समस्त स्टाफ सदस्यों के अंदर एक नई ऊर्जा का संचार करेगा जो भविष्य में कारोबारी लक्ष्यों की प्राप्ति में निश्चित रूप से सहायक होगा.

आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं.

अरुण कुमार
क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़

I am extremely happy to know that the September 2022 quarterly issue of Union Dhara, the Bank's corporate magazine, is being published on Jammu and Kashmir, a place called the paradise of the world. It is a matter of great privilege and honor for Chandigarh Zone that the previous issue of 'Union Srijan' quarterly journal of central office was published as Haryana Special issue and this issue of Union dhara is being published on Jammu and Kashmir under Chandigarh Zone. On this occasion, on behalf of the Field General Manager's Office, Chandigarh, I heartily congratulate all the readers of Union dhara. I am not only hopeful but fully confident that this special issue of Jammu and Kashmir will be well liked by all readers. In this issue, the social, literary and cultural aspects of Jammu and Kashmir have been included in detail. Most of the districts here are part of the snow capped Himalayan Mountain remain.

Field General Manager's Office Chandigarh's jurisdiction extends to Chandigarh, Haryana, Himachal Pradesh, Punjab and Union Territories of Jammu Kashmir and Ladakh. There are a total of 8 regional offices under it, which consists total 516 branches. The energetic work force of the bank is committed to provide excellent service to the region. All the staff members posted here have always been actively contributing to the progress of the bank. There is no doubt that the Haryana special issue of Union Srijan has created an atmosphere of enthusiasm and pride among the staff members. I am fully confident that this issue will also infuse a new energy within the staff members which will definitely help in achieving business goals in future.

My best wishes to all of you.

Arun kumar
Field General Manager, Chandigarh

क्षेत्र प्रमुख, अमृतसर का संदेश

Message from Regional Head, Amritsar

सर्वप्रथम, बैंक की लोकप्रिय गृह-पत्रिका 'यूनियन धारा' का सितंबर 2022 अंक 'जम्मू-कश्मीर एवं लेह' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने के लिए यूनियन धारा के संपादक मंडल का हार्दिक आभार. इस क्षेत्र की सभी शाखाएं क्षे.का. अमृतसर के अंतर्गत आती हैं. यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता अत्यंत रमणीय हैं. साथ ही यहाँ की संस्कृति, संगीत, पहनावा, धार्मिक आस्थाएं आदि भी बहुत विशिष्ट हैं.

मैं आश्वस्त हूँ कि यह अंक न केवल आपको रोमांचित करेगा बल्कि आपको सपरिवार जम्मू, कश्मीर एवं लेह के भ्रमण के लिए भी प्रेरित करेगा.

पत्रिका को पढ़िए और आनंद लीजिए.

संसार चंद
क्षेत्र प्रमुख, अमृतसर

At the outset, heartfelt gratitude to the Editorial Board of our Bank's popular House Magazine 'Union Dhara' for publishing the September 2022 issue as a special one on Jammu Kashmir & Leh. All the branches of this area come under R.O. Amritsar. The natural beauty of this area is breathtaking. The various dimensions of the region's culture, music, clothing, religious beliefs etc. are very unique.

I am confident that this issue will not only enthrall you but also inspire you to make a trip to Jammu, Kashmir & Leh along with your family.

Happy reading.

Sansar Chand
Regional Head, Amritsar

संपादकीय
EDITORIAL

शानदार रंगों वाले खूबसूरत गुलाब पूरी तरह खिले हुए हैं. सड़कों पर पेडों के पीले और नारंगी पत्ते झर रहे है. पहाड़ बर्फ से ढके हैं, डल झील का पानी बर्फ बन गया है. गरमागरम कहवा ठंडे मौसम में भाप के साथ अपनी सुगंध छोड़ रहा है. गुलाबी गालों वाले बच्चे खुली जगहों पर खेल रहे हैं और स्थानीय लोग ऊनी पोशाक पहने अपने रोजमर्रा के काम पर जा रहे हैं.

हालांकि सड़कों पर पुलिस की गाडियां दिख रही हैं और चारों तरफ सेना के सिपाही पहरा दे रहे हैं, फिर भी इन सबके बीच सैलानियों की चहल-पहल और हंसी-मजाक के नजारे भी दिख रहे हैं. यह एक ऐसी जगह है जिसे धरती पर स्वर्ग के नाम से जाना जाता है. वैसे तो हम नहीं जानते कि वास्तव में स्वर्ग क्या होता है लेकिन जब हम अपनी कल्पना की उड़ान भरते हैं तो यह जगह सही मायनों में पृथ्वी पर स्वर्ग प्रतीत होती है. जी हां, हम भारत के अपने जम्मू-कश्मीर और लेह के बारे में बात कर रहे हैं - जो कि हमारी सबसे अनूठी सुंदर भूमि है. यह भूमि आपको प्रतिभाशाली शिल्पकारों और कारीगरों के साथ एक नया अनुभव देती है. यहां स्थानीय लोग सरल, ईमानदार और मेहमाननवाज हैं.

अच्छी किस्म के सेब, केसर, अखरोट, बादाम यहाँ मिलते हैं. लकड़ी की नक्काशी और पश्मीना शॉल भी बहुतायत में पाए जाते हैं. प्रदेश अपने मधुर लोक संगीत और समृद्ध परंपराओं पर भी गर्व करता है. इसे यहाँ के खान-पान, पहनावे और संस्कृति में भी देखा जा सकता है. प्रदेश की अशांति, उसकी बड़ी समस्या है. कश्मीर के लोगों को हमेशा आतंकवादियों, सशस्त्र बलों, हिमस्खलन, तूफान और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में इस अशांति का सामना करना पडता है, लेकिन बावजूद इसके यहां के लोग इस भूमि से प्यार करते हैं. पर्यटकों के लिए यह भूमि स्वर्ग है, वे यहां लगातार आते रहते हैं और इस भूमि की सुंदरता से चकित और मंत्रमुग्ध हो जाते हैं.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की जम्मू-कश्मीर में कम लेकिन मजबूत उपस्थिति है और हमने इस खूबसूरत भूमि के हर पहलू को यूनियन धारा के जारिए कवर करने का प्रयास किया है. हम अपनी टीम के, विशेष रूप से क्षे.का.अमृतसर से श्री सुभाष चंद्र और क्षे.म.प्र.का. चंडीगढ़ से श्री पवन झा और जम्मू और कश्मीर के सभी शाखा प्रबंधकों के आभारी हैं जिन्होंने पूरे दिल से अपने अनुभव साझा किए हैं और यूनियन धारा के इस विशेष अंक को और बेहतर स्वरूप प्रदान करने में अपना योगदान दिया है.

कृपया इस अंक को पढ़ने का आनंद लें और अपने जीवन में कम से कम एक बार इस खूबसूरत भूमि की यात्रा अवश्य करें.

आपकी,

डॉ. सुलभा कोरे

The roses with magnificent colours are in full bloom and beautiful. The leaves of trees in yellow & orange color falling on the roads. The mountains are snowcapped, water of Dal lake have turned into ice. The steaming Kahwa is leaving its aura & steam in the chilly time of the year. Pink cheeked kids playing in open places and locals clad in their woolen attire going about their routine work.

Though the police vans on duty are seen on the roads and soldiers are on guard around yet amidst all this, tourists are seen buzzing around the place with their cheerful and jovial attitude. This is a place which is known as heaven on earth and since we do not know exactly what is really heaven, if we give wings to our imagination then this place is truly a heaven on earth. Yes, we are talking about our own Jammu-Kashmir & Leh - which is our most strikingly beautiful land. This land gives you a fulfilled feeling with talented craftsmans and artisans and the locals are simple, honest and hospitable.

Good quality apples, kesar walnut, almonds are available here. Wooden carvings & pashmina shawls are also seen in plenty. The state also boasts of its abounding folk music and traditions. This is also seen in its food, attire and culture. A dark spot on the state is prevailing turbulence. People of Kashmir always had to face this in different forms, terrorists, armed forces and natural calamities such as avalanches, storms earthquakes but still they want live in their land. A paradise of tourists who continually flock here and get amazed and mesmerised with the beauty of this land.

Union Bank of India has very less but strong presence in J & K and we have attempted to cover each & every aspect of this beautiful land. Through Union Dhara we are grateful to our team specially Mr. Subhash Chandra from RO Amritsar & Mr. Pawan Jha from Zo Chandigarh and all the Branch Managers of J & Kashmir who whole heartedly have given their experiences and contributed in adding value in bringing out this special issue of Union Dhara.

Happy reading and make sure to visit this beautiful land at least once in your lifetime.

Yours truly,

Dr. Sulabha Kore

जम्मू - कश्मीर व लेह लद्दाख - अतीत से अब तक की यात्रा

उत्तर भारत में हिमालय पर्वत श्रृंखला के सबसे ऊपरी हिस्से में स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग कहा जाता है. यही प्राकृतिक परिवेश कश्मीर के लोकजीवन को स्फूर्ति और सौन्दर्यानुभूति प्रदान करता है. यह क्षेत्र जम्मू, कश्मीर घाटी और लद्दाख तीन संभागो में विभाजित है. पृथ्वी पर सबसे ऊँचे तथा सूखे स्थानों में से एक "लैंड ऑफ पासेस" लद्दाख क्षेत्रफल की दृष्टि से आसपास के क्षेत्रों में सबसे बड़ा है. यह पूर्व में चीनी-तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र, दक्षिण में हिमाचल प्रदेश और पश्चिम में जम्मू और कश्मीर तथा पाकिस्तान अधिकृत गिलगित-बाल्टिस्तान से एवं शिनजियांग के दक्षिण-पश्चिम कोने से दूर उत्तर में काराकोरम दर्रे से घिरा है.

प्राचीनकाल में महर्षि कश्यप के नाम पर स्थापित कश्मीर हिन्दू व बौद्ध संस्कृतियों का पालक रहा है. श्रीनगर के उत्तर-पश्चिम में बुर्जहोम पुरातात्विक स्थल के उत्खनन द्वारा 3000 ईसा पूर्व और 1000 ईसा पूर्व के बीच यहाँ के सांस्कृतिक महत्व की जानकारी मिलती है. यहां के प्राचीन इतिहास का विस्तृत विवरण कल्हण द्वारा 12वीं शताब्दी में लिखित राजतरंगिणी में मिलता है. ईसा पूर्व दूसरी व तीसरी शताब्दी में अशोक के राज्य का हिस्सा रहा तत्कालीन कश्मीर पूर्णतया हिन्दू राष्ट्र था. तदनंतर, यहां बौद्ध धर्म का आगमन हुआ, जो आगे चलकर कुषाणों के अधीन समृद्ध हुआ. उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य के अधीन छठी शताब्दी में एक बार पुन: यहाँ हिन्दू धर्म की वापसी हुई. आइने अकबरी के अनुसार उनके बाद नागवंशी क्षत्रिय सम्राट ललितादित्य यहाँ के शासक (697-738 ई.) रहे.

अवंती वर्मन ललितादित्य के उत्तराधिकारी बने और श्रीनगर के निकट समृद्ध क्षेत्र अवंतिपुर को अपनी राजधानी बनाया जहां महाभारत युगीन गणपतयार और खीर भवानी मन्दिर के अवशेष आज भी मिलते हैं. गिलगिट क्षेत्र से प्राप्त पाण्डुलिपियां पाली भाषा में हैं. सहिष्णु दर्शन त्रिखा शास्त्र की रचना भी यहीं पर हुई. चौदहवीं शताब्दी में पहली बार यहाँ फारस से सूफी इस्लाम का आगमन हुआ. तदनंतर, यहां पर ऋषि परम्परा, त्रिखा शास्त्र और सूफी इस्लाम के संगम से कश्मीरियत के सार का सूत्रपात हुआ.

ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र वर्ष 1834 तक एक स्वतंत्र राष्ट्र था. प्राचीन काल में यहाँ की राज वंशावली में प्रवरसेन, गोपतृ, मेघवाहन, प्रवरसेन-2, विक्रमादित्य-कश्मीर, चन्द्रापीड, तारापीड, ललितादित्य, जयपीड आदि शासकों का शासन रहा. कालांतर में अवन्तिवर्मन (855-83), शंकरवर्मन (883-902), गोपालवर्मन (902-04), सुगन्धा (904-06), पार्थ राजा (906-35), चक्रवर्मन (935-37), यशस्कर (939-48), संग्रामदेव (948-49), पर्वगुप्त (949-50), क्षेमगुप्त (950-58), अभिमन्यु राजा (958-72), नन्दिगुप्त (972-73), त्रिभुवन (973-75), भीमगुप्त (975-80), दिद्दा (980-1003), संग्रामराज (1003-28), अनन्त राजा (1028-63) कलश राजा (1063-89), उत्कर्ष (1089), हर्ष देव (1089-1101), उच्चल, सल्हण, सुस्सल, भिक्षाचर व जयसिँह (1101-1216), राजदेव (1216-40), सहदेव कश्मीरी राजा (1305-24), कोट रानी (1324-39) ने भी यहाँ पर शासन किया.

तदनंतर, अकबर के शासन काल के दौरान 1589 में यहाँ मुगलों का कब्जा हो गया. मुगल साम्राज्य के विखंडन के बाद यहाँ पठानों का कब्जा हुआ जो यहाँ का काला युग कहलाता है. महाराजा रणजीत सिंह ने 15 जून, 1819 में पठानों को परास्त कर कश्मीर में सिक्ख शासन की स्थापना की और इस क्षेत्र को पंजाब में मिला लिया. 1822 में उन्होंने अपने विश्वासपात्र सामंत गुलाब सिंह कुशवाहा को जम्मू का शासन सौंप दिया. 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात गुलाब सिंह ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर लिया. मई 1841 में चीन-तिब्बत के किंग राजवंश (Qing Dynasty) ने लद्दाख क्षेत्र को चीनी राजवंश में मिलाने की मंशा से उस पर आक्रमण कर दिया. इस युद्ध में चीन-तिब्बत की सेना पराजित हो गई तथा चुशुल की संधि पर हस्ताक्षर किये गए, जिसके तहत भविष्य में इस क्षेत्र की सीमाओं में किसी प्रकार के बदलाव या हस्तक्षेप न करने पर सहमति बनी.

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान भी जम्मू व कश्मीर एक स्वतंत्र रियासत के रूप में रहा. 1845-46 के दौरान पूर्व एंग्लो-सिख युद्ध के बाद लद्दाख सहित जम्मू और कश्मीर ब्रिटिश आधिपत्य में आ गए. उस समय अंग्रेजों ने इस क्षेत्र को मुख्य रूप से एक बफ़र क्षेत्र के रूप में उपयोग किया, जहाँ से वे रूसियों से मिल सकते थे. बाद में उन्होंने कश्मीर को 75 लाख रुपये में शाक्य वंश से जोड़ा डोगरा राजवंश के महाराजा गुलाब सिंह को बेच दिया. गुलाब सिंह ने 1856 तक वहाँ शासन किया. बाद के वर्षों में उनके उत्तराधिकारी महाराजा रणबीर सिंह (1856-85), महाराजा प्रताप सिंह (1885-25) तथा महाराजा हरि सिंह (1925-47) ने शासन किया. भारत के विभाजन तथा राजनीतिक एकीकरण के समय राज्य के शासक महाराजा हरि सिंह ही थे. उन्होंने राज्य के भविष्य के बारे में निर्णय लेने में बहुत देर कर दी. राज्य के पश्चिमी जिलों में विद्रोह तथा उसके बाद पाकिस्तान समर्थित नॉर्थवेस्ट फ्रंटियर के हमले होने तक उन्होंने निर्णय नहीं लिया. 26 अक्तूबर, 1947 को पाकिस्तान समर्थित काबायलियों और पाकिस्तानी सेना से निपटने के लिए उन्होंने भारतीय सेना भेजने के बदले में जम्मू और कश्मीर के भारत में विलय के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की.

महाराजा हरि सिंह द्वारा जम्मू और कश्मीर के भारतीय संघ में अधिमिलन पत्र एक विधिक प्रपत्र है, जिसपर हस्ताक्षर कर उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 के

प्रावधानों के अधीन इस रियासत का भारत में विलय करना स्वीकार किया. इस वैधानिक दस्तावेज पर दस्तखत होते ही समूचा जम्मू और कश्मीर, जिसमें पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाला क्षेत्र भी शामिल है, भारत का अभिन्न अंग बन गया. पाकिस्तान द्वारा हरि सिंह के विलय समझौते की अधिकारिता पर कोई प्रश्न नहीं किया गया और कश्मीर का भारत में विलयन विधि सम्मत माना गया. इसके बाद पाकिस्तानी हमलावरों को खदेड़ने के लिए 27 अक्तूबर, 1947 को भारत ने सेना भेज कश्मीर की रक्षा की. लेकिन तब तक जम्मू और कश्मीर के पश्चिमी और उत्तरी जिलों के अधिकांश हिस्सों तथा गिलगित-बाल्टिस्तान पर पाकिस्तान का कब्जा हो गया था.

भारत 01 जनवरी, 1948 को इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में ले गया. 20 जनवरी, 1948 को संयुक्त राष्ट्र आयोग (यूएनसीआईपी) ने भारत और पाकिस्तान के लिए एक तीन सदस्यी समिति का गठन किया. 05 मार्च, 1948 को आपातकालीन बैठक कर शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में कश्मीर में अंतरिम सरकार का गठन कर दिया गया. 13 अगस्त, 1948 को यूएनसीआईपी द्वारा संकल्प पारित कर युद्ध विराम घोषित किया गया. पाकिस्तानी सेना और सभी बाहरी लोगों की वापसी के अनुसरण में भारतीय सेना को भी अपनी मौजूदगी कम करने को कहा गया और जम्मू और कश्मीर की भावी स्थिति का फैसला स्थानीय 'लोगों की इच्छा' के अनुसार करना तय हुआ.

अक्तूबर, 1950 में राज्य के भावी आकार व संबद्धता का निर्णय लेने के लिए ऑल जम्मू और कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस ने संविधान सभा द्वारा वयस्क मताधिकार कराने का संकल्प लिया. संविधान सभा का गठन सितम्बर, 1951 को किया गया और ऐतिहासिक 'दिल्ली समझौता' द्वारा कश्मीरी नेताओं और भारत सरकार द्वारा जम्मू और कश्मीर राज्य के भारतीय संघ में विलय की पुन:पुष्टि की गई. संविधान सभा द्वारा नवम्बर, 1956 में जम्मू और कश्मीर के लिए एक अलग संविधान को अंगीकृत किया जो 26 जनवरी, 1957 से प्रभाव में आया. मार्च, 1957 में राज्य में पहले आम चुनाव के बाद शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कांफ्रेंस द्वारा पहली बार चुनी हुई सरकार बनाई गई.

वर्ष 1960 की शुरुआत में चीन ने जबरन पूर्वी लद्दाख का एक बड़ा क्षेत्र अपने कब्जे में ले लिया. वर्ष 1962 के भारत चीन युद्ध के दौरान अक्साई चिन पर चीन ने आधिपत्य कर लिया. इसके बाद से लद्दाख भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्रों में से एक बन गया है. भारत ने मैकमोहन रेखा को कानूनी सीमा के रूप में बनाए रखा जबकि चीन 'वास्तविक नियंत्रण रेखा' स्थापित करने का प्रयास करता रहा. वर्तमान सीमा विवाद इन्हीं दो मुख्य सीमा अवस्थितियों के इर्द-गिर्द घूमता है. आज भी चीन इस सीमा को स्वीकार नहीं करता है. दोनों देश पूर्वी क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम, उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश तथा लद्दाख के पश्चिमी क्षेत्रों में 3800 किलोमीटर से ज्यादा लंबी सीमा साझा करते हैं, जिसका एक बड़ा हिस्सा आज भी विवादित है.

वर्ष 1984 में भारतीय सेना ने दुनिया के सबसे बड़े और ऊँचे ग्लेसियर और युद्ध के मैदान (सियाचीन) को पाकिस्तान से पहले पहुंच अपने कब्जे में कर लिया. आज भी भारत पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर व चीन के कब्जे वाले अक्साई चिन को अपना हिस्सा मानता है और इस पर उनके कब्जे को अवैध मानता है. सन 1989 में कश्मीर में पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद आरम्भ हो गया. इस दौरान घाटी के मूल निवासी हजारों कश्मीरी पंडितों ने रातोंरात घाटी छोड़ कर जम्मू और दिल्ली के शरणार्थी शिविरों में शरण ली.

इस दौरान आतंकवाद से निपटने के लिए कश्मीर में कानून द्वारा सुरक्षा बलों को विशेष शक्ति (एएफ़एसपीए) दी गयी. यह एक्ट कश्मीर को बचाने के लिए बहुत कारगर साबित हुआ. आतंकवादियों की मदद से कश्मीर पर कब्जा कर पाने में विफल रहने के बाद वर्ष 1999 में पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठियों की मदद से कारगिल पर कब्जा करने की नाकाम कोशिश की. घुसपैठियों से भारत की भूमि खाली कराने के लिए भारतीय सेना ने कारगिल में भयंकर युद्ध लड़ा और पाकिस्तान की कायर सेना को पीठ दिखाने पर मजबूर कर दिया. आज भारत इस क्षेत्र के 45% भूभाग को नियंत्रित करता है जिसमें जम्मू, कश्मीर घाटी, लद्दाख का अधिकांश भाग और सियाचिन ग्लेशियर शामिल है. पाकिस्तान लगभग 35% क्षेत्र को नियंत्रित करता है जिसमें पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और गिलगित-बल्तिस्तान शामिल हैं. चीन शेष 20% क्षेत्र को नियंत्रित करता है जिसमें अक्साई चीन क्षेत्र, निर्जन ट्रांस काराकोरम ट्रैक्ट और डेमचोक सेक्टर का हिस्सा शामिल है.

यह क्षेत्र चार युद्धों और कई अन्य सशस्त्र झड़पों की विभीषिका झेलने के बाद अब विकास की नयी गाथा लिखने के लिए आगे बढ़ चला है. कश्मीर व लद्दाख क्षेत्र भारत के महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधनों की पूर्ति करने में सक्षम है, इसके लिये इस क्षेत्र में शांति बनाए रखना आवश्यक है. शांति के लिये समान विकास भी अनिवार्य है. इसलिए भारत के नीति निर्माताओं ने यहाँ के लिये अपनी नीतियों का मसौदा तैयार करते समय इसकी भौगोलिक स्थिति, नाजुक वातावरण, संसाधन क्षमता तथा यहाँ के निवासियों की आकांक्षाओं को ध्यान में रख वर्ष 2018 में राजनीतिक अस्थिरता के कारण राष्ट्रपति शासन लगा दिया. इसके बाद तत्कालीन भारत सरकार ने मजबूत इच्छा शक्ति के बल पर 05 अगस्त, 2019 को भारतीय संसद में बिल पारित कर कश्मीर से धारा 370 को समाप्त कर, इस काले अध्याय को सदा-सदा के लिए समाप्त कर दिया. 31 अक्तूबर, 2019 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुण्यतिथि पर 'जम्मू और कश्मीर' तथा 'लद्दाख' नाम से दो केन्द्र शासित प्रदेश बनें और इसे क्षेत्र ने समस्या के समाधान की तरफ मजबूती से अपने कदम बढ़ा दिये. आज यह क्षेत्र पिछली कड़वी यादों को भुलाकर विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है.

कृष्ण कुमार यादव
स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु

जम्मू - कश्मीर, लेह की विशेषताएं

भारत पारिस्थितिकीय दृष्टि से सर्वाधिक विविधताओं वाले देशों में से एक है, जिसमें खूबसूरत पहाड़, महासागर, आकर्षक रेगिस्तान और समृद्ध वन शामिल हैं. ऐसी ही एक जगह भारत में अत्यंत ऊंचाई पर स्थित है- जम्मू-कश्मीर और लेह. लेह जिसे आमतौर पर मूनलैंड कहा जाता है जो भारत के सबसे उत्तरी दूरस्थ स्थान में स्थित है. यह स्थान बेहद ऊंचे पहाड़ों और ठंडे रेगिस्तानी मैदानों के जादुई परिदृश्य में स्थित कुछ अत्यंत खूबसूरत और प्राचीन मठों के लिए विख्यात है. लद्दाख को छोटा तिब्बत तथा बौद्ध संस्कारों का अद्भुत स्थल भी कहते हैं वहीं भारत का मुखौटा तथा पगड़ी का स्थान रखने वाला जम्मू-कश्मीर को अपने अपार प्राकृतिक सौंदर्य की वजह से पृथ्वी का स्वर्ग और भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है. यहां सूर्योदय के कुछ समय पश्चात जब सूर्य की किरणें यहां के सफेद पहाड़ों पर पड़ती है तो वह स्वर्ण के समान प्रतीत होते हैं. दोपहर में यहां की झीलें मोती के समान चमकती हैं. यह प्रदेश सभी भारतीय व अन्य लोगों को ईश्वर की तरफ से दिया हुआ एक अनमोल उपहार है. जम्मू-कश्मीर अपने प्राचीन मंदिरों, हिंदू धार्मिक स्थलों (अमरनाथ और वैष्णो देवी मंदिर) महल, उद्यान और किलों के लिए प्रसिद्ध है. कश्मीर का नाम कश्यप ऋषि के नाम से रखा गया था. जम्मू-कश्मीर की खूबसूरत वादियों और नजारों को देखने के लिए सैलानियों का वर्ष भर आवागमन होता रहता है. यहां निम्नलिखित वस्तुएं तथा स्थान की विशेषता इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाती है -

पश्मीना शॉल : कश्मीरी ऊन से बने शॉल को पश्मीना शॉल कहा जाता है. पश्मीना (फारसी अर्थ है-ऊन से बना) भारत के लद्दाख क्षेत्र में पाई जाने वाली चांगथांगी बकरियों से बना एक सुंदर लग्जरी फाइबर है. चांगथांगी बकरी समुद्र तल से करीब 14000 फुट की ऊंचाई पर पाई जाती है. उत्तम गुणवत्ता वाली पश्मीना शॉल छूने में बेहद मुलायम और वजन में हल्की होती है जो रेशम जैसी सामग्री से बनी होती है. इसे शॉल की गर्माहट और कोमलता को महसूस करके पहचाना जा सकता है. लंबे समय से यह भारत और दुनिया भर के अमीरों के लिए एक स्टेटस सिंबल बन रही है. एक बकरी से करीब सौ ग्राम पश्मीना उतरती है और एक शॉल बनाने में करीब डेढ़ सौ ग्राम पश्मीना इस्तेमाल की जाती है. पश्मीना बहुत महंगा होता है. प्राकृतिक रूप से पश्मीना ग्रे रंग का होता है. प्राकृतिक रूप से सफेद या काले पश्मीना दुर्लभ होते हैं. पश्मीना की मांग बढ़ जाने पर इसमें सिंथेटिक रेशा मिलाकर बनाया जाता है. ऐसा माना जाता है कि एक पश्मीना शॉल छह स्वेटर जितना गर्म होता है. इनकी कीमत पंद्रह सौ से शुरू होकर डेढ़ लाख रुपए तक होती है. यह चांगथांगी बकरियां एक डबल ऊन का उत्पादन करती है जिसमें बालों के पतले, मुलायम अंडरकोट होते हैं जो एक सख्त और अधिक मोटे बाहरी कोटिंग के साथ मिलते हैं जिन्हें गार्ड हेयर कहा जाता है क्योंकि उनके शरीर पर अधिक वसा नहीं होती है इसलिए यह डबल कोट उन्हें ऊंचाई पर गर्म रखता है. असली पश्मीना जले हुए बालों की तरह महक देगी और अपने पीछे एक भुरभुरा अवशेष छोड़ देगी. इसके विपरीत यदि यह एक सिंथेटिक फाइबर है तो यह जले हुए पत्तों की तरह महकेगा वह थोड़ा सा कूबड़ छोड़कर, तेज जलेगा. कश्मीर की पहचान पश्मीना शॉल देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बहुत पसंद किया जाता है. इस लिस्ट में अमेरिका की प्रथम महिला मिशेल ओबामा से लेकर यूरोपीय देशों की शाही परिवार की कई महिलाएं शामिल हैं जो इस कश्मीरी कपड़े को बेहद पसंद करती है. 19वीं शताब्दी में नेपोलियन ने अपनी रानी को पश्मीना शॉल तोहफे में दिया था जिसके बाद यह शॉल फ्रांस में लोकप्रिय हो गया था.

शिकारा : यहां बेहद खूबसूरती के साथ लकड़ी की नाव को सजाया जाता है जिसे पारंपरिक भाषा में शिकारा कहा जाता है जो मुख्यत: जम्मू-कश्मीर में देखने को मिलती है. जम्मू-कश्मीर के अलावा शिकारा जैसी नावें भारत के राज्य केरल में भी प्रयोग की जाती है. शिकारा विभिन्न आकार में बनाई जाती है और लोगों के परिवहन सहित अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग में आती हैं. एक सामान्य शिकारे में लगभग छह लोग बैठ सकते हैं और नाविक इसे पीछे की तरफ से खेता है. शिकारे जम्मू और कश्मीर के सांस्कृतिक प्रतीक माने जाते हैं. पर्यटनीय परिवहन के अतिरिक्त कुछ शिकारों का उपयोग अभी भी मछली पकड़ने, जलीय वनस्पति और सामान्य परिवहन के लिए किया जाता है. अधिकांश शिकारे तिरपाल से ढके होते हैं. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां हाउस बोट फेस्टिवल करवाया जाता है, यह शिकारा को बढ़ावा देने की एक पहल है. इसके अतिरिक्त शिकारों को रोशन करने के लिए सौर ऊर्जा का प्रयोग किया जा रहा है ताकि पर्यावरण को किसी भी तरह का नुकसान ना हो. शिकारों पर लाइट लगने से ये शिकारे रात के समय में भी पर्यटकों को सैर करा सकते हैं जिससे पर्यटक भी इनका लुत्फ़ उठा सकते हैं और यह दृश्य देखने में बहुत मनोहारी लगता है साथ ही इससे लोगों के रोजगार में भी वृद्धि होती है.

केसर: केसर, जिसका वैज्ञानिक नाम क्रोकस सैटाइवस है. यह एक सुगंध देनेवाला पौधा है. इन फूलों की इतनी तेज़ खुशबू होती है कि आसपास का क्षेत्र महक उठता है. यह दिखने में छोटे-छोटे धागों जैसा होता है और इसका इस्तेमाल मसाले और कलर एजेंट के रूप में

किया जाता है. केसर को निकालने के लिए पहले फूलों को चुनकर किसी छायादार स्थान में बिछा देते हैं. सूख जाने पर फूलों से केसर को अलग कर लेते हैं. रंग एवं आकार के अनुसार इन्हें - मागरा, लच्छी, गुच्छी आदि श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं. डेढ़ लाख फूलों से लगभग एक किलो सूखा केसर प्राप्त होता है. भारत में यह केवल जम्मू (किस्तवार) तथा कश्मीर (पामपुर) के सीमित क्षेत्रों में पैदा होती हैं. प्याज तुल्य इसकी गुटिकाएँ प्रतिवर्ष अगस्त-सितंबर में रोपी जाती हैं और अक्तूबर-दिसंबर तक इसके पत्र तथा पुष्प साथ निकलते हैं. केसर बहुत ही उपयोगी गुणों से युक्त होती है. केसर का उपयोग आयुर्वेदिक नुस्खों में, खाद्य व्यंजनों में और देव पूजा आदि में होता है. यह कफ नाशक, मन को प्रसन्न करने वाली, मस्तिष्क को बल देने वाली, हृदय और रक्त के लिए हितकारी, तथा खाद्य पदार्थ और पेय को रंगीन और सुगन्धित करने वाली होती है. केसर को उगाने के लिए समुद्रतल से लगभग दो हजार मीटर ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र एवं शीतोष्ण सूखी जलवायु की आवश्यकता होती है. पौधे के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है. यह पौधा कली निकलने से पहले वर्षा एवं हिमपात दोनों बर्दाश्त कर लेता है लेकिन कलियों के निकलने के बाद ऐसा होने पर पूरी फसल चौपट हो जाती है.

प्राकृतिक सौंदर्य : कश्मीर की शीतल आबोहवा, हरे भरे मैदान और खूबसूरत घाटियों के बीच में बहती झीलें, झाडियों से भरे जंगल, ऊंची-ऊंची पहाड़ियों की हसीन वादियों के बीच में प्रकृति की अद्भुत चित्रकारी, अनुपम सौंदर्य की छटा बिखेरती है. यही वजह है कि कश्मीर हर दिल में बसता है. सच ही कहा गया है कि धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह कश्मीर है. फूलों से घिरी पगडंडियां, ऐसा प्रतीत कराती हैं जैसे यह स्वप्निल स्थल हो. भारत के नक्शे में यह एक मुकुट के समान है जो हर मौसम में अपना रंग बदलता है. यहां पर खूबसूरत वादियां पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं. यहां पूरे साल लाखों पर्यटक घूमने और अपनी छुट्टियां बिताने आते हैं. यह अपनी प्राकृतिक खूबसूरती के साथ-साथ साहसिक गतिविधियों के लिए भी प्रसिद्ध है, जैसे ट्रैकिंग, राफ्टिंग, स्कीइंग और पैराग्लाइडिंग आदि. जम्मू-कश्मीर के कई पर्यटन स्थल पहलगाम, सोनमर्ग, पटनीटौप, गुलमर्ग, लद्दाख और कारगिल जैसी जगहें अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए दुनियाभर में मशहूर है. डल और नागिन झील यहां की प्रसिद्ध झीलें हैं.

वही अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य की छटा बिखेरता लेह-लद्दाख बर्फ से ढके ऊंचे-ऊंचे पर्वतों से घिरा हुआ है. मीलों तक फैले ऊंचे, नंगे, बर्फीले पर्वतों को देख कर लगता है न जाने कितने रहस्य अपने में समेटे ये शांत खड़े हैं. लद्दाख की अपनी अलग संस्कृति है, अलग ही जीवनशैली है. यह प्रदेश अपने विविध प्राकृतिक सौंदर्य से पर्यटकों को लुभाता है. यहाँ 18380 फुट की ऊंचाई पर खार्दुंगला दुनिया की सबसे ऊंची सड़क भी है, जहां मोटर गाड़ी द्वारा पहुंचा जा सकता है. यह अनोखा क्षेत्र जहाँ साल में करीब 300 दिन सूर्य पूरी आबोताब के साथ चमकता है लेकिन रात इसके विपरीत ठंडी. आसमान एकदम निर्मल, नीला और साफ ऐसा कि आदमी एक-एक तारा गिन ले. अपनी शीतल चांदनी बिखेरता चंद्रमा जिसे निहारते हुए कभी आंखें न थकें. इसलिए इसे चंद्र प्रदेश भी कहा जाता है. यह क्षेत्र ज्यादातर बंजर ही है. आबादी का कहीं दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं है. जहां जिंदगी बड़ी ही सुस्त रफ्तार से रेंगती-सी दिखती है. कच्चे मकान, इक्का-दुक्का चरते हुए जानवर, खुबानी से लदे पेड़, गांवों के बीचोंबीच बहती छोटी सी नदी, हवाएं काफी तेज एवं रुखी तथा धूप एकदम सीधी और त्वचा को बेधती है.

बाग : कश्मीर को भारत के प्रसिद्ध फल का कटोरा कहा जाता है. कश्मीर के सेब ने दुनिया भर के लोगों में अपने अद्वितीय स्वाद के लिए लोकप्रियता हासिल की है. कश्मीर के सेबों को स्थानीय रूप से चंट कहा जाता है. यहां पर सेब की लगभग 113 किस्में पाई जाती हैं और यहां का मौसम, सेब के इष्टतम विकास के लिए वरदान है. इसके अलावा यहां नाशपाती, आडू, अखरोट, बादाम, लीची, स्ट्रौबरी आदि फल उगाए जाते हैं. यहां पर अनेक खूबसूरत राष्ट्रीय उद्यान भी है जो इस प्रकार हैं-

किश्तवार राष्ट्रीय उद्यान - इस उद्यान में वनस्पति और जीव की बहुत विस्तृत विविधता है. यह 400 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है. यहां स्तनधारियों की 15 प्रकार की प्रजातियां है. उसमें कस्तूरी मृग भी शामिल है. साथ ही हिमालयी काले और भूरे भालू भी हैं.

दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान - दाचीगाम अर्थात् दस गांव. इस उद्यान की ऊंचाई 55 फुट से 14000 फुट तक की है. यहां प्रमुख रूप से हिमालयी नम शीतोष्ण सदाबहार, नम पर्णपाती और झाड़ियां, देवदार, चीड़ आदि पेड़ पाये जाते हैं.

शालीमार गार्डन - यह जहांगीर द्वारा निर्मित है. ग्रीष्म एवं पतझड़ ऋतु में यहां पत्तों का रंग बदलता है. इस हरे भरे बगीचे में चिनार के पेड़ों के साथ फूलों की एक अंतहीन पंक्ति है जो एक कलाकार के कैनवास जैसा दिखती है.

हेमिस राष्ट्रीय उद्यान - यह उद्यान 200 हिम तेंदुए का घर है. यहां लाल भेड़िया, हिरण, तिब्बती वुल्फ, रेड फॉक्स, गोल्डन ईगल, हिमालयन ग्रीफन, लैमरजियर गिद्ध आदि दुर्लभ पक्षी भी देखने को मिलते हैं.

बाग-ए-बाहू पार्क - इस पार्क में विशाल लॉन, भव्य और बड़े-बड़े फव्वारे, सुंदर झील, पत्थर से बनी खूबसूरत मूर्तियां आदि हैं.

इसके अतिरिक्त यहां सलीम अली नेशनल पार्क, काजीनाग नेशनल पार्क, गुलमर्ग वन्यजीव अभयारण्य, नंदिनी वन्यजीव अभयारण्य आदि स्थित हैं.

इसलिए कश्मीर के बारे में कहा जाता है - *"गर फिरदौस बर रुए ज़मीं अस्त/ हमीं अस्तो हमी अस्तो, हमीं अस्त"* (धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है)

प्रवीण कुमार
यूनियन लर्निंग एकेडमी, गुरूग्राम

कश्मीरी भाषा का सिपाही

- डॉ. शाद रमजान

कश्मीर साहित्य में डॉ. शाद रमजान का नाम उच्च श्रेणी के लेखकों में लिया जाता है. उनका परिवार लेखन से जुड़ा हुआ था. डॉ. रमजान के पिताजी सूफियाना, फारसी और उर्दू में लिखते थे. वे मूलरूप से कुलगांव से हैं. लिखने के लिए प्रेरणा उन्हें उनके पिताजी से मिली. शुरू में डॉ. रमजान ने कश्मीरी में लिखना शुरू किया. आठवीं जमात में पहला शे'र लिखा.

राजनीतिक विज्ञान के छात्र रहे डॉ रमजान अंग्रेजी माध्यम से पढे हुए हैं. स्नातक के बाद आपने कश्मीर विश्वविद्यालय में पढ़ाई की. 1980 में कश्मीरी भाषा में परास्नातक डिप्लोमा भी किया और एमए, एमफ़िल और पीएचडी पूरी की. उसके बाद प्रोफेसर बनकर 2018 में सेवानिवृत हुए.

जहां तक लेखन का प्रश्न है, शुरू में उन्होंने उर्दू में लिखना शुरू किया. अंग्रेजी में लिखने की रुचि नहीं थी. लेकिन इन्होंने भारत की कुछ भाषाओं के अनुवाद किए हैं. इनमें गुजराती, हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी, पंजाबी, राजस्थानी आदि का अनुवाद शामिल है. कुछ अच्छी कहानियों का भी आपने अनुवाद किया है. कुछ का साहित्य अकादमी की तरफ से आपने अंग्रेजी में भी अनुवाद किया है. 2009 में आपको साहित्य अकादमी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला. मुख्य पुरस्कार 2014 में आपकी शायरी 'कोर कागत गोम पुशरत' के लिए मिला. इस तरह से डॉ. रमजान की कलम चलती रही और 1985 में शायरी से शुरू हुआ उनका सफर आज भी जारी है.

कश्मीरी भाषा की विशिष्टताएं बताते हुए डॉ शाद रमजान कहते हैं कि - करीब चालीस पचास साल पहले कश्मीरी जबान के लिए कहा जाता था कि यह संस्कृत की बेटी है. कुछेक कहते थे कि यह हिब्रो की बेटी है. आज कहा जाता है - यह संस्कृत की बहन भाषा है, यानि उतनी ही पुरानी है. कश्मीरी भाषा यूरोपीय ग्रुप से भी ताल्लुक रखती है. यह करीब दो हजार सालों तक सरकारी जबान रही. इसमें कई अलफाज कश्मीरी ही हैं. व्याकरण के लिहाज से कश्मीरी जबान अन्य किसी भाषा से नहीं मिलती है. इसका व्याकरण बिलकुल अलग है. यह उर्दू से भी नहीं मिलती है. गियर्सन के अनुसार यह मूलत: दर्दीस्तान से आई भाषा है. लेकिन व्यक्तिगत तौर पर यह संस्कृत के आसपास के समय की ही है. कश्मीरी के कुछ अलफाज संस्कृत जबान में भी देखने को मिलते हैं. कश्मीरी संस्कृत से भी पुरानी भाषा है और उसकी लिपि शारदा कही जाती है.

कश्मीरी जुबान 'दर्द समूह' से आई है. दर्दीस्तान लद्दाख का समूह है. यह हिंदुस्तान का ही एक हिस्सा था जिसे पहले 'भारत खंड' बोलते थे. संस्कृत कश्मीर में आई तब से करीब दो हजार साल तक प्रयोग की जाती रही. लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि यह संस्कृत की माता है. चूंकि भाषाओं में आदान-प्रदान तो होता ही रहता है. भाषाएँ एक दूसरे के शब्द ग्रहण कर लेती हैं.

डॉ. रमजान की कुल उन्नीस किताबें प्रकाशित हुई हैं. इनमें से एक अनुवाद है, उन्होंने बच्चों पर भी किताबें लिखी हैं. कश्मीरी लोक साहित्य पर लिखी उनकी पुस्तक को साहित्य अकादमी की तरफ से प्रकाशित किया गया है. इसी तरह कश्मीर की कुछ चयनित कश्मीरी कविताओं का संग्रह भी उनके द्वारा संपादित और प्रकाशित किया गया है.

कश्मीरी भाषा के भविष्य को लेकर चिंता जताते हुए डॉ. रमजान मानते हैं कि लोगों में एक गलतफहमी है. कुछेक लोगों द्वारा इसे बहस का मुद्दा भी बनाया गया है. खुर्शीद पंडित ने किसी इंटरव्यू में लोगों को गुमराह किया है कि यह भाषा पढ़ाई नहीं जा रही है. जबकि कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी भाषा विभाग 1970 में खुला है. कश्मीरी में करीब दौ सौ छात्रों नें पीएचडी कर ली है. जहां तक सवाल कश्मीरी भाषा को माध्यम के रूप में पढ़ाने से संबंधित है, तो पिछले करीब बीस सालों से कश्मीरी जबान आठवीं तक पढ़ाई जा रही है. उसके बाद नौवीं और दसवीं में यह बेसिक शिक्षा के नाम पर नहीं पढ़ाई जा रही है. फिर यह ग्यारहवीं से आगे विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाई जा रही है. हाल फिलहाल यह सभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है. कश्मीर विश्वविद्यालय में इसके चार विभाग है. कश्मीरी भाषा पढ़ाई जा रही है. पिछले साल भारत सरकार द्वारा कश्मीर की राजभाषा के रूप में कश्मीरी को स्वीकार किया गया है. इससे जबान को फायदा होना चाहिए, लेकिन अभी तक ऐसा कोई फायदा दिखाई नहीं देता है. डोगरी और उर्दू यहाँ अच्छा नाम कमा रही है. लेकिन डोगरी से ज्यादा साहित्य कश्मीरी के पास है. इसके साहित्य का विस्तार बहुत अधिक है. डोगरी से यह सौ गुना बड़ी है.

इस भाषा के लिए प्रयासरत लेखकों के बारे में बताते हुए डॉ रमजान बताते हैं कि कश्मीरी को कई अच्छे लेखक मिले हैं. पहली बात तो यह है कि इस भाषा को नौवीं और दसवीं में

लागू करना जरूरी है. दूसरी बात, पाँच राजभाषाएँ किस राज्य में होती है जबकि कश्मीर में पाँच राजभाषाएँ है. कश्मीर में कश्मीरी ही होनी चाहिए. इसका बड़ा फायदा भाषा को होता अगर सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में अध्यापकों की नियुक्ति की जाती. विषय अध्यापक की आवश्यकता बहुत जरूरी है. सरकारी आदेश तो है पर इसका अभी अनुपालन नहीं हो रहा है. कश्मीरी जबान के डॉ. राही को ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला है. कश्मीरी का साहित्य पाँच हजार साल पुराना है जबकि डोगरी का इतना पुराना नहीं है. यहाँ के रामनाथ शास्त्री ने कश्मीरी में बहुत नाम कमाया है. पिछले पाँच सौ सालों में सूफी शायरी ने अपनी अलग जगह बनाई है. एक यूरोपीय विद्वान ने लिखा है कि दुनिया की किसी भी जबान में इतना अधिक लोक साहित्य नहीं है जितना कश्मीरी जबान में है. परंतु भारत सरकार इसे ज्यादा तवज्जो नहीं दे रही है. कश्मीरी में श्री एम. आर. राही एक बड़ा नाम है. यहाँ पर बड़े - बड़े लेखक पैदा हुए हैं. आज भी कश्मीरी जबान में अच्छी- अच्छी किताबें आ रही हैं. कश्मीरी में अनुवाद किए जा रहे है. कश्मीरी में गीता और रामायण का अनुवाद भी मिल जाएगा.

अनुवाद अगर बड़े पैमाने में होता है तो कश्मीरी भाषा को बिलकुल बल मिलेगा. अनुवाद जरूरी है. अनुवाद में आदान - प्रदान होता है जिससे एक दूसरे के विचार जाने जाते हैं. किसी भी जबान का किसी दूसरी जबान से रिश्ता बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अनुवाद हो! कश्मीरी पढ़ने वाले बच्चों को रोजगार मिलना चाहिए. आज यहाँ पर एक प्रतिशत से भी कम लोग कश्मीरी भाषा के माध्यम से अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं.

यहाँ के लोग अब विदेशों में पढ़ाई को ज्यादा तव्वजो दे रहे हैं. यहाँ रोजगार भी एक बड़ा मसला है. विशेषकर कश्मीरी में पढ़े हुए लोगों के लिए और भी ज्यादा समस्याएँ हैं. हर साल यहाँ करीब दो सौ लोग पीएचडी करते हैं. उनमें से सिर्फ आठ दस लोगों को ही नौकरी मिलती है. पिछले कुछेक सालों से तो यह भी बंद हो गया है. भाषा के माध्यम की बात करें तो, आज तक यह भाषा उस स्तर तक नहीं पहुंची है कि इसे माध्यम बनाया जाए. अभी और समय लगेगा. कश्मीरी में क्लासिकल लिखना होगा. इस भाषा को क्लासिकल भाषा का दर्जा मिलना चाहिए. इतनी पुरानी भाषा होने के बाद यह मांग जायज भी है.

नई पीढ़ी के लोगों से इस दिशा में मिलने वाले सहयोग के बारे में बात करते हुए डॉ. रमजान का कहना है कि हर हफ्ते में कश्मीरी जबान के उत्थान के लिए सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं. यह निजी, स्कूल और कॉलेज स्तर पर आयोजित किए जाते हैं. नई पीढ़ी का अपनी जबान में रुचि नहीं लेने से नुकसान तो हो रहा है लेकिन यह कश्मीरी के साथ ही नहीं है बल्कि सभी भाषाओं के साथ हो रहा है. शब्द भंडार की कमी होने के कारण नई पीढ़ी उन्नत साहित्य नहीं लिख पाती है. उनके पास ना तो प्राचीन कहानियां है और ना ही प्राचीन साहित्य है. हमारे मुहावारे, कहावतें लुप्त होती जा रही हैं. जबकि यह कहा गया है कि दुनिया की किसी भी जबान में इतना विस्तृत और व्यापक साहित्य हो तो वह कभी लुप्त नहीं हो सकती. एक और नुकसान हुआ है कि हमारे समाज की महिलाएं सिर्फ उर्दू में बात करती हैं. आजकल के लड़के-लड़कियां अंग्रेजी बोल रहे हैं. इससे आने वाले बच्चों की मातृभाषा गायब हो रही है. लेकिन एक बात सच है कि आज सरकारी स्कूलों में कश्मीरी गंभीरता से पढ़ाई जा रही है. निजी स्कूलों में पात्र कश्मीरी अध्यापक के ना होने पर उर्दू और डोगरी का अध्यापक ही पार्ट टाइम पढ़ा रहा है. हमें भाषा चाहिए. आजादी के बाद शेख अब्दुला ने इस बारे में काम किया पर उन्हें जेल में डाल दिया गया. शेख अबदुल्ला के साथ ही कश्मीरी भाषा भी जेल में चली गई. मातृभाषा में शिक्षा दी जाए तो बच्चा ज्यादा जल्दी समझता है. हर राज्य की अलग संस्कृति है और होनी भी चाहिए.

सरकार के अलावा कश्मीरी लोग भी भाषा को बचाने के लिए कार्य कर रहे हैं. कम से कम एक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के लिए काम करना चाहिए. शायरी को आवाम तक कैसे पहुंचाया जाए, आम आदमी उसे कैसे समझे? यह बड़े सवाल हैं. डॉ शाद रमजान ने 1984 में 'कबीर' का कश्मीरी में अनुवाद किया है. चौदहवीं शताब्दी के कबीरदास, तुलसीदास और बाबा फरीद बड़े लेखक हुए और कश्मीर के ही शेखु लाला भी हुए हैं. अनुवाद से यह फ़ायदा हुआ कि चारों के विचार अलग-अलग होने के बावजूद उनके विचारों में मेल भी है. बस भाषा का फासला है. लेखक ही जबान को जिंदा रखता है. कोशिश जारी है. कभी न कभी मुकाम मिलेगा ही, डॉ रमजान आशावादी हैं.

आतंकवाद से होने वाले नुकसान पर उनका मानना है कि आतंकवाद से नुकसान इतना हुआ है कि इस नुकसान की भरपाई नजदीक भविष्य में संभव नहीं है. आतंकवाद से जम्मू और कश्मीर की हर भाषा को नुकसान हुआ है. नई पीढी के लोग जब अपने बड़ों से लोक साहित्य की कहानियाँ सुनेंगे और लोक साहित्य पढ़ेंगे तभी इसके इतिहास को जान पाएंगे. कश्मीरियों को चाहिए कि वे कश्मीर के पाँच हजार साल के इतिहास को पढ़ें. अभिभावकगण भी कश्मीरी भाषा का रस नई पीढ़ी के जुबान पर चढ़ाएँ. हमारा पहनावा, खानपान, रहन-सहन अलग हो सकता है लेकिन हम जिंदा रहते हैं अपनी जबान के जरिए. भाषा को अगर हम बचाएंगे नहीं तो भाषा का वजूद खतरे में पड़ जाएगा. यही भाषा हमारी रूह का शृंगार है. भाषा हमारी माँ होती है. जो बेटा अपनी माँ को नहीं पहचानेगा, वह दूसरे को क्या पहचानेगा. आने वाली पीढ़ी पर ही भाषा का दारोमदार है. सरकार को चाहिए कि वह भी सच्चे मन से स्कूलों में भाषा को पढ़ाएँ.

सुभाष चन्द्र
क्षे.का. अमृतसर

मैं कश्मीर हूँ...

मैं कश्मीर हूँ,
प्रकृति का सुंदरतम स्वरूप हूँ
बर्फ के ये जंगल सघन
वो घाटी की गुनगुनाहट
वो सर्द हवाओं की शुरुआत
मैं कैसे सिमटूँ शब्दों में
कैसे बांटू हदों में
भावों से ओतप्रोत हूँ
मैं कश्मीर हूँ,
अपने ही मन के कुनबे में
मुझसा अनोखा कोई नहीं
मुझसे कोई शीतल नहीं
मैंने ओढा है सिपाही का लाल रंग
हजारों शहादतों के संग
उठाया है बोझ सीमाओं का
झेले है युद्ध, मृत्यु रूपी परिणाम
बारूदों से गूंजी है मेरी नगरी
झेलम-चिनाब है मुझी से गुजरी
जम्मू में है माता वैष्णो का डेरा
वहाँ पर है पहाड़ों का भी फेरा
लिखने पढ़ने से अधिक सुंदर हूँ
भारत माँ की मूरत हूँ
नहीं बन सकती मेरी कोई तस्वीर
मुझसे ही भारत की तकदीर
मैं कश्मीर हूँ.

स्वर्ग सा कश्मीर

हिमालय का ताज है जिसके सिर पर
मां वैष्णो देवी का धाम है जहाँ,
कहते हैं स्वर्ग जैसा जिसे वह स्वर्ग जैसा नहीं
अपितु स्वयं धरती पर स्वर्ग ही है वहां.

सफेद बर्फ की चादरों में ढंकी गुलमर्ग की वादियाँ
है जहाँ, है सोनमर्ग सा सुन्दर शहर जहाँ,
स्वर्ग तो देखा होगा किसने, सबने बसा लिया दिल
में स्थान ऐसा मिलेगा कहाँ.

पश्मीना के धागों में लिपटी हुई और रेशम के
धागों से बनी हुई कला मिलती है जहाँ,
कलाएं भी अनेक है तो कलाकार भी है जहाँ,
धन्य है ऐसी भूमि जो ढूंढने से भी मिलेगी कहाँ.

कमल के फूल खिले और हरियाली हर ओर
बनाती है सबसे ख़ास उसे,
सूखे फलों का बाजार है अनोखा जो कहीं न मिले
वो सबसे अलग बनाता है उसे.

न जाने कितने प्रहार सहे हैं उसने, कितनी बार कई
नाकाम कोशिशों से हराया है उसे,
परन्तु हर बार उठ खड़ा हुआ है वो, हर बार लड़ा
है स्वयं, न हरा पाया है कोई उसे.

है खड़ा वो सिर उठाये, है ये मुखिया हमारे महान
भारत देश का,
मस्तक है वो भारत देश का, सिर झुका कर करते
हैं आज हम सभी नमन उसे.

खूबसूरत है बहुत वो, है सबसे अलग भी वो कहते
है जिसे स्वर्ग सब कहते हैं जम्मू-कश्मीर उसे
खड़ा है बाहें फैलाये वो राज्य हमारा एक बार तो
नजदीक जाकर गले लगाओ उसे.

जम्मू-कश्मीर भारत का सिरताज है

अपने अतीत पर गर्व करता,
वर्तमान को निखारता
पर्वतराज की गोद में
हसीन वादियों की ओट में,
सतरंगी छटा बिखेरता
पर्यटकों को आकर्षित करता
कितना लाजवाब है.
जम्मू-कश्मीर भारत का सिरताज है.

अपने शान-शौकत पर अकड़ता,
स्वर्ग की क्यारियों में मचलता.
बेइंतहां प्रकृति से मोहब्बत करता
संग जीता, संग मरता,
बहुसंस्कृति का वाहक,
पथरीले रास्तों का धावक
नहीं किसी का मोहताज है.
जम्मू-कश्मीर भारत का सिरताज है.
डंके की चोट पर अंगड़ाई लेता,
हर दर्द की सुनवाई करता,
प्रगति पथ पर चलने को तत्पर,
आतंकियों के छाती पर चढ़कर,
विकास का अध्याय लिखता,
अनछुए पहलुओं से भी सीखता.
हैरत-अंगेज जांबाज है.
जम्मू-कश्मीर भारत का सिरताज है.

आगे बढ़ने की ललक
आधुनिकता की सतरंगी झलक
असंख्य ध्वनियों की गूंज में,
उदीयमान सूरज के मूंज से,
हुंकार भर के आगे बढ़ता,
भारतीयों को समर्पित करता
विश्वसनीय अंदाज है.
जम्मू-कश्मीर भारत का सिरताज है.

इस्तियाक अहमद
क्षे.का. अमृतसर

हेमलता भाटिया
अजमेर मुख्य शाखा, जोधपुर

ड़ॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे.का. पटना

हिन्दी है जन जन का अभिमान
भारत की है यह पहचान
है यह अपनों की भाषा
देश की है राजभाषा
हमारी एकता का आधार
देती हमको ज्ञान अपार
संस्कृत की यह पुत्री है
ब्रज, अवधी, बुन्देलखंडी
इन सबकी यह भगिनी है
भाषा रूपी गंगा है यह
करती सबको समृध्द है यह
नित अविरल सी यह बहती रहे
विश्व पटल पर बढ़ती रहे
भाषा बनें यह महासभा की
अभिलाषा है यह हम सबकी
सबको लेकर साथ यह चलती
तमिल, तेलगु हो या कोंकणी
कोई नहीं जगह है विश्व में
जहां न बोली जाती है यह
कम या ज्यादा हो सकती है
फिर भी जगह - जगह पर है

मार्कण्डेय यादव
क्षे.का. रीवा

नारी हूँ मैं

नारी हूँ, खुद में ही सम्पूर्ण हूँ मैं.

जीवन है मुझसे जननी मैं,
मुझसे ही यह संसार चला.
कहाँ अब रुकने वाली मैं,
मुझसे ही अब विश्वास बना.

घर को मैं ही स्वर्ग बनाती
प्यार, ममत्व मुझसे ही है
दर्पण हूँ मैं और अक्स भी मैं,
दृढ़ता का संकल्प भी मैं.

घर तक ही अब सीमित नहीं
यह वक्त नहीं अब रुकने का,
हर कदम पे आगे बढ़ती हूँ,
जो हमें झुकाएं जो डराएं,
उस शख्स से ना अब डरती मैं..

दुर्गा सरस्वती सब रूप है मुझसे,
कमजोर नहीं मैं नारी हूँ.
मैं ही सुन्दर मैं ही सम्पूर्ण
शिव की शक्ति भी मैं.
नहीं हूँ मैं आधी अधूरी
खुद में ही संम्पूर्ण हूँ मैं.

रजनी
के.का. मुंबई

Never die before you die

Let's run the train backwards and see if the raindrops fly
Lets spill and refill, a cup of coffee and walk towards the sky

Let's put back the flowers we plucked
Let tears fall back into the eyes I know petals can't survive the autumn
But just smile before you cry.

Be reckless before you start to care
And friendly before you fight Be mighty before you start to fall and loud before you go quiet.

Swing yourself into the orbits and hold hands before you let go Maybe upstream is the easy way You don't have to go with the flow

Let's run the train backwards and see if the raindrops fly Lets spill and refill, a cup of coffee and walk towards the sky

Let wreckage be upon you before you blossom out high Let the truth be a way of living Before you ever start to lie

Let it never 'Let it be' Be bold before you shy Put the axe down, or pick it up But never fail before you try
Never die before you die

Balkaran Singh Sidhu
R.O. Mumbai (South)

जम्मू-कश्मीर के दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थान

भारत के उत्तर दिशा में अवस्थित जम्मू-कश्मीर को भारत का सिरमौर कहा जाता है. अपनी प्राकृतिक छटा तथा खूबसूरती के लिए यह क्षेत्र धरती का स्वर्ग भी कहा जाता है. जितना सुंदर परिवेश एवं प्राकृतिक दृश्य है उतने ही सुंदर ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थान भी यहां विद्यमान है. यदि हम कहें कि जम्मू-कश्मीर की बनावट एवं संरचना अद्भुत एवं अप्रतिम है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी.

हिमालय की गोद में बसा जम्मू और कश्मीर अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए पूरी दुनिया में एक खास स्थान रखता है. कश्मीर अपनी खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है जहां पर देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं. चारो ओर बिछी बर्फ की सफ़ेद चादर, देवदार और ऊंचे वृक्षों से भरे घने जंगल सच में यहां आने वाले पर्यटकों को एक नई दुनिया का आभास कराते हैं.

जम्मू-कश्मीर की शीतकालीन राजधानी जम्मू अपनी विशिष्टताओं के कारण देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. अनेक जातियों, संस्कृतियों व भाषाओं का संगम बना यह प्रदेश एक खूबसूरत पर्यटन स्थल भी है. तवी नदी के खूबसूरत किनारों पर स्थित जम्मू-कश्मीर राज्य का यह मुख्य प्रवेश द्वार है साथ ही प्रतिवर्ष माता वैष्णो देवी जाने के लिए यहां लाखों तीर्थयात्री आते हैं. यहां स्थित अनगिनत मंदिरों के कारण इसे मंदिरों का नगर भी कहा जाता है. लेह-लद्दाख क्षेत्र पहले जम्मू-कश्मीर राज्य का ही अंग हुआ करता था. परंतु अब यह एक स्वायत्त केंद्रशासित प्रदेश है.

जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ अपने कई प्रमुख ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल के लिए भी प्रसिद्ध है. कुछ प्रमुख ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलों के बारे में हम जानकारियां प्रस्तुत करना चाहते हैं, जो निम्नलिखित है:-

बाबा अमरनाथ गुफा : यह गुफा धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण, हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है. भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर श्रीनगर से लगभग 145 किलोमीटर दूर हिमालय पर्वत की गोद में स्थित है. यह एक प्राकृतिक मंदिर है. इस गुफा में स्थित शिवलिंग को बाबा बर्फानी और अमरेश्वर भी कहा जाता है.

श्री अमरनाथ गुफा की लम्बाई 160 फुट और चौड़ाई करीब 100 फुट है. इसी गुफा में भगवान शिव ने माता पार्वती को अपने अमर होने का रहस्य बताया था. आषाढ़ पूर्णिमा से शुरू होकर पूरे सावन महीने तक इस गुफा में दर्शन के लिए लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं.

मां वैष्णो देवी मंदिर : वैष्णो देवी मंदिर या वैष्णो माता का मंदिर जम्मू-कश्मीर राज्य की त्रिकुटा पहाड़ियों में कटरा से 15 कि.मी. की दूरी पर स्थित बहुत ही प्रसिद्ध तीर्थ एवं दर्शनीय स्थल है. माता वैष्णो देवी मंदिर जम्मू -कश्मीर के साथ-साथ पूरे भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है. यहां हर साल लाखों की संख्या में श्रद्धालु मां वैष्णो देवी का आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं.

यहां पर तीर्थयात्री लगभग 13 कि.मी.तक पैदल चलकर मां के आशीर्वाद हेतु मंदिर तक पहुंचते हैं और माँ वैष्णो देवी के दर्शन का पुण्य अर्जित करते हैं. मां वैष्णो देवी मंदिर के नजदीक कई अन्य पर्यटक स्थल है जिनमें अन्य कई मंदिर, नदियों सहित और भी खूबसूरत जगहें शामिल हैं जहाँ वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा पर आने वाले लगभग सभी पर्यटक और तीर्थयात्री घूमने के लिए जाते हैं.

कश्मीर का प्रसिद्ध मार्तंड सूर्य मंदिर : मार्तंड सूर्य मंदिर भारतीय केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में स्थित, हिन्दू देवता सूर्य को समर्पित एक मंदिर है. मार्तंड सूर्य मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी ईस्वी में कर्कोटा राजवंश के तहत कश्मीर के तीसरे

महाराज ललितादित्य मुक्तापिडा द्वारा किया गया था. यह एक प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थस्थल एवं दर्शनीय स्थल के रुप में जाना जाता है.

कुपवाड़ा स्थित लोलाब घाटी : कुपवाड़ा, जम्मू-कश्मीर में स्थित एक छोटा सा जिला है जो श्रीनगर से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर समुद्र तल से 5,300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां लोलाब वैली एक प्रसिद्ध आकर्षण का केंद्र है जिसे देखने के लिए लाखों की संख्या में सैलानी यहां पहुंचते हैं. यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता अत्यंत ही मनोरम एवं मर्मस्पर्शी है.

लद्दाख की घाटी : लद्दाख भारत का सबसे ऊंचाई पर बसा एक केंद्र शासित प्रदेश है जिसकी राजधानी लेह है. यह पहले जम्मू-कश्मीर राज्य के अंतर्गत आता था परंतु अब एक अलग केंद्र शासित प्रदेश बन चुका है. यह इस क्षेत्र का सबसे ऊंचा इलाका है जो 3500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है.

यह क्षेत्र बर्फीली घाटियों से ढके विशाल पहाड़, चारों तरफ हरियाली, हजारो फीट ऊंचाई वाले पर्वत और दोनों तरफ से बहते खूबसूरत झरने, कुदरत की खूबसूरत कारीगरी का एक शानदार नमूना है. यहाँ की मैग्नेटिक हिल को काफी रहस्यमई माना जाता है. लेह लद्दाख को देखने एवं यहां घूमने के लिए देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी काफी संख्या में पर्यटक आते हैं.

डल झील : जम्मू-कश्मीर का सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल डल झील है जिसे 'कश्मीर का रत्न' भी कहा जाता है और यह जम्मू-कश्मीर की राजधानी में स्थित एक बहुत ही बड़ी झील है. यहाँ मुख्य आकर्षण का केंद्र हाउस बोट और शिकारा की सवारी है.

डल झील के किनारे कई होटल्स मौजूद है परंतु यहाँ पहुंचने वाले पर्यटक होटल के बजाए बोट हाउस में ही रुकना चाहते हैं. यह काफी रोमांचकारी एवं शानदार भी होता है.

पटनीटॉप हिल स्टेशन : जम्मू-कश्मीर में स्थित पटनीटॉप एक शानदार एवं महत्वपूर्ण हिल स्टेशन है. यहां पर पर्यटक घूमने के साथ-साथ ट्रेकिंग के लिए भी आते हैं. बर्फीली पहाड़ियों और खूबसूरत नजारों के बीच स्थित पटनीटॉप जम्मू-कश्मीर का एक खूबसूरत हिल स्टेशन है तथा काफी आकर्षक भी है.

गुलमर्ग घाटी : जम्मू-कश्मीर का गुलमर्ग शहर बर्फीली पहाड़ियों, जंगलों और ऊंचे वृक्षों से घिरा हुआ एक मनोरम और आकर्षण से भरा पर्यटन स्थल है जो बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग के लिए एक पसंदीदा जगह भी है. गुलमर्ग में मस्ती और मनोरंजन के लिए कई स्थान हैं. आप यहाँ ट्रेकिंग, माउंटेन बैकिंग और एकीइंग आदि के मजे ले सकते हैं.

सोनमर्ग : सोनमर्ग एक हिल स्टेशन और प्रसिद्ध पर्यटक स्थान है जो कि जम्मू-कश्मीर के गंधवाल जिले में स्थित है. हिमालय की वादियों में बसे हुए इस जगह में हर साल लाखों की संख्या में पर्यटक घूमने के लिए आते हैं. इसके अलावा ट्रेकिंग के शौकीन लोगों के लिए मानो सोनमर्ग किसी स्वर्ग से कम नहीं है. सोनमर्ग बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग के लिए काफी प्रसिद्ध है.

जम्मू-कश्मीर पहुंचने के प्रमुख साधन:

वायुमार्ग : जम्मू-कश्मीर पहुंचने के लिए सबसे निकटतम हवाई अड्डा जम्मू तथा श्रीनगर में भी स्थित है जो देश के सभी बड़े शहरों जैसे मुंबई, कोलकाता, जयपुर, दिल्ली आदि स्थानों से जुड़ा हुआ है, जिससे आप यहाँ आसानी से पहुँच सकते है.

रेलमार्ग : अगर आप रेलमार्ग से कश्मीर जाने की योजना बना रहे है तो जम्मू तवी एवं कटरा रेलवे स्टेशन जम्मू-कश्मीर का सबसे नजदीकी और प्रमुख रेलवे स्टेशन है. जम्मू तवी रेलवे स्टेशन देश के सभी प्रमुख शहरों से बहुत अच्छी तरह जुड़ा हुआ है.

सड़क मार्ग : सड़क मार्ग द्वारा कश्मीर देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है. यहां के लिए दिल्ली, पंजाब और हरियाणा से सीधी बस सेवा उपलब्ध है. इसके अलावा आप चाहें तो अपने निजी वाहन के माध्यम से भी यहाँ पहुंच सकते हैं.

सुमित कुमार सिंह
क्षे.का. पटना

Famous writers of Jammu - Kashmir & Leh laddakh

Literature allows a person to step back in time and learn about life on Earth from the ones who walked before us. We can gather a better understanding of culture and have a greater appreciation of them. We learn through the ways history is recorded, in the form of manuscripts and through speech itself. There are many writers in the history of Jammu and Kashmir.

Among these writers are Dinanath Nadim, Abdul Rahman Rahi, Amin Kamil, Gani Kashmiri, Ghulam Rasool Naziki, Habba Khatoon, Lal-Ded, Padma Sachdev, Peerzada Ghulam Ahmed, Zindakoul, Rasool Mir. Professor Ghulam NabiFiraq.

1. **Dinanath "Nadim"** was a prominent Kashmiri poet of the 20th century. He was born on 18 March 1916 in Srinagar city and with him began an era of modern Kashmiri poetry. He also virtually led the progressive writers movement in Kashmir.

2. **Abdur Rehman Rahi:** He is a famous poet who has also worked in editing, translation and literary criticism. He has held the position of the General Secretary of the Progressive Writers' Association and taken part in the Cultural Wing of the Communist Party of Kashmir. He won the Sahitya Academy Award in 1961, Padma Shri in 2000, and he is the first Kashmiri writer to receive the Jnanpith Award, which is India's highest literary award.

3. **Amin Kamil:** He is a major contributor to the Kashmiri ghazal. Apart from poetry, his work in editing, translation, and literary criticism is also noteworthy. He has helped create the modern alphabet of the Kashmiri language. In 1967, he was awarded the Sahitya Academy Award, and the Padma Shri in 2005.

4. **Gani Kashmiri:** He was regarded as the greatest writer of Persian in the Mughal era. The famous Mughal poet Ghalib is said to have translated many of his couplets in Urdu. He is among the greatest poets in the Kashmir Valley, honoured for his contributions to Urdu and Persian poetry.

5. **Ghulam Rasool Nazki:** He began his professional career as a teacher and went on to be a poet, writer, and broadcaster. Apart from Kashmiri, his written works also span the Urdu, Persian, and Arabic languages. He was awarded the Sahitya Academy Award; the first Kashmiri author to write in the Republic of India after independence, and the first poet to revive the quatrain poetic form.

6. **Habba Khatoon:** Known as the Nightingale of Kashmir, she was the wife of Kashmir's last independent emperor, Muslim Yusuf Shah Chak, and is regarded as the last independent poet queen of Kashmir. She is believed to have introduced loal (meaning lyric) to Kashmiri poetry. She composed Kashmiri songs, which mostly depicted sorrow. She was a famous Kashmiri Muslim poet and an ascetic.

7. **Lal-Ded:** One of the foremost poets of Kashmir, she was known as Lalleshwari. She was a Kashmiri mystic who belonged to the school of Kashmiri Shaivism. She created a style of mystic poetry, which is known as vatsun. Verses written by her known as LalVakhs, are the earliest compositions in the Kashmiri language.

8. **Padma Sachdev:** This poet and novelist also worked as an announcer at All India Radio. She is the first modern poet of the Dogri language and also wrote in Hindi. She is the recipient of the Sahitya Academy Award in 1971 and Padma Shri in 2001, along with some state-given awards for her contribution to poetry and literature.

9. **Peerzada Ghulam Ahmad:** He wrote poems in Kashmiri, Urdu, and Persian, using the pen name Majhoor. He introduced a new style in Kashmiri poetry and explored some new themes. He gave a new dimension to traditional forms such as nazm and ghazal.

10. **Zinda Kaul:** While also working as a school teacher, he composed poems in Persian, Urdu, Hindi, and Kashmiri languages and also translated Kashmiri works into English, Hindi, and Persian. In 1956, he became the first Kashmiri poet to be honoured the Sahitya Academy Award.

11. **Rasul Mir:** His contribution to Kashmiri romanticism is invaluable, for which he is regarded as the epitome of romantic poetry. He is one of the pioneers of Kashmiri ghazals and widely known as the John Keats of Kashmir.

12. **Professor Ghulam Nabi Firaq:** was an Indian Kashmiri poet, writer and an educationist. As an educationist he tried his best to reach all sections of society to help them in uplifting their educational standards.

Aditya Mahajan
Channi Himmat Branch, Jammu

डोगरी, हिन्दी एवं उर्दू का अविस्मरणीय हस्ताक्षर

- पद्मा सचदेव

किसी ने क्या खूब कहा है कि मनुष्य होना भाग्य है और कवि होना सौभाग्य. ऐसे में यदि कोई ऐसा कवि और लेखक हमारे सामने आता है जो एकाधिक भाषाओं की सेवा करते हुए अपना सारा जीवन व्यतीत कर दे तो हमारा मन श्रद्धा से झुक जाता है. ऐसी ही साहित्यकार जो गद्य एवं काव्य दोनों ही साहित्यिक विधाओं में महारत रखती थीं तथा हिन्दी डोगरी एवं उर्दू में समान अधिकार के साथ लिखती रहीं, वे थीं पद्मा सचदेव. हालाँकि हिन्दी साहित्य के रसिकों ने 'भटको नहीं धनञ्जय' को अवश्य ही पढ़ा होगा और यदि नहीं पढ़ा है तो हम उन्हें पढ़ने की सलाह अवश्य देंगे. इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने द्रौपदी से अर्जुन को सीख दिलवाई है कि वह अपने भटकाव और पीड़ा पर विजय प्राप्त करे. पद्मा जी ने जो कुछ भी लिखा है वह बहुत उच्च कोटि का तो है ही, समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए भी है. उनकी आत्मकथा 'बूंद बावड़ी' में उन्होंने अपना पूरा दिल निकालकर रख दिया है और संवेदनशील पाठक इसे पढ़ते समय अपनी आँखें भिगोए बिना नहीं रह सकता. यह कहानी है उस कवयित्री के महान संघर्ष की जिसके बाद वह कई भाषाओं की नामचीन साहित्यकार बन गई.

पद्मा जी का जन्म 17 अप्रैल, 1940 को जम्मू-कश्मीर के पुरमंडल में हुआ था. पिता प्रो. जयदेव बादु संस्कृत के विद्वान थे. पिता से विरासत में पाए श्लोकों के ज्ञान ने उनकी भाषा को परिनिष्ठित बनाया एवं प्रगाढ़ किया. महज 14 वर्ष की आयु में उनकी पहली कविता 'राजा दिया मंडियां' प्रकाशित हुई. डोगरी भाषा में लिखी गई यह रचना न केवल उस समय चर्चा का विषय बनी, बल्कि आगे चलकर डोगरी की क्लासिक रचना के रूप में इसे मान्यता प्राप्त हुई. जब उनका कविता संग्रह 'मेरी कविता मेरे गीत' प्रकाशित हुआ तो उसकी भूमिका स्वयं डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी. प्रारंभ में पद्मा जी जम्मू रेडियो से जुड़ीं तथा वहाँ पर समाचार वाचन का कार्य भी किया. जब उनका विवाह प्रसिद्ध गायक, श्री सुरेन्द्र सिंह से हुआ तो वे दिल्ली आ गईं.

जम्मू के लोक गीतों एवं वहाँ की संस्कृति को पद्मा जी ने अपनी कविताओं एवं कहानी व उपन्यासों के माध्यम से बखूबी उकेरा है. डोगरी भाषा में लिखी गई उनकी पुस्तक 'मेरी कविता मेरे गीत' पर उन्हें केवल 31 वर्ष की उम्र में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ जो कि अपने आप में एक कीर्तिमान था. उल्लेखनीय है कि जब डोगरी की उनकी काव्यकृति को साहित्य अकादमी पुरस्कार 1971 में मिला तो उनके साथ पुरस्कार ग्रहण करने वालों में मुल्कराज आनंद, नामवर सिंह व रशीद अहमद सिद्दीकी जैसे दिग्गज लेखक भी मौजूद थे. मुल्कराज आनंद को उन्होंने अपने बचपन में पढ़ा था.

मुंबई आकाशवाणी में काम करते हुए वे धर्मवीर भारती एवं लता मंगेशकर से भी जुड़ीं एवं उनके विषय में संस्मरण भी लिखे. पहले वे केवल डोगरी में ही रचनाएं किया करती थीं, किंतु धर्मवीर भारती के

प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन ने उन्हें हिन्दी की कवयित्री बना दिया. यह बात उन्होंने साहित्य अकादमी में दिये गए अपने एक व्याख्यान में कही थी.

मूलतः डोगरी की कवयित्री होने पर भी वे शनैः-शनैः हिन्दी में आती चली गईं. उन्होंने डोगरी में 8 कविता संग्रह, 3 गद्य कृतियाँ लिखीं तो हिन्दी में कुल 19 पुस्तकें लिखीं. उर्दू में भी उनकी एक पुस्तक आई. उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- मेरी कविता मेरे गीत, तवी ते चन्हाँ, नेहरियां गलियां, पोटा पोटा निम्बल, उत्तर बैहनी, तैथियां, अक्खंर कुंड व सबद मिलावा जैसे कविता संग्रह; गोदभरी व बुहुरा कहानी संग्रह, मितवाघर, दीवानखाना, अमराई व बारहदरी जैसे साक्षात्कार संस्मरण और जम्मू जो कभी शहर था, अब न बनेगी देहरी, नौशीन, भटको नहीं धनंजय आदि उपन्यास व आत्मकथाओं की कृतियां 'चित्त चेते' व 'बूंद बावड़ी' एवं यात्रा वृत्तांत की पुस्तक 'मैं कहती हूं आंखिन देखी'. उन्हें अपने कृतित्व के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान (चित्त चेते के लिए), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, हिंदी अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सौहार्द सम्मान, केंद्रीय हिंदी संस्थान-गंगाशरण सिंह पुरस्कार, राजा राममोहन राय पुरस्कार, जोशुआ पुरस्कार व कबीर सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है. उन्हें पद्मश्री से भी नवाजा गया था.

हिन्दी एवं डोगरी में उनकी कहानियों पर फिल्में तथा धारावाहिक भी बने हैं. डोगरी का पहला संगीत डिस्क उनके द्वारा ही तैयार किया गया जिसमें बहुत से गीत स्वर कोकिला लता जी ने गाए थे.

मूल रूप से कवयित्री होने के कारण उन्होंने एक बार कहा था कि कविता सहज आती है और गद्य को लाना पड़ता है. उनका काव्य

सृजन मौलिक रूप से डोगरी में होता रहा, जिसका अनुवाद हिन्दी में आया और पद्मा ठीक वैसे ही हिन्दी की कवयित्री हो गईं जैसे अमृता प्रीतम पंजाबी से हिन्दी की साहित्यकार हुई थीं. जम्मू शहर से उनका प्रेम इस कविता में क्या खूब झलका है -

जम्मू आँखों में है रहता यहाँ जाग कर यहीं है सोता
मैं सौदाई गली गली में मन की तरह घिरी रहती हूं
क्या कुछ होगा शहर मेरे का क्या मंशा है क़हर तेरे का
अब न खेलो आँख मिचौली आगे आगे क्या होना है
उनकी बाल सुलभ रचना को देखें -
द्वार खड़ी, निंदिया का गोरा है मुखड़ा चांद से टूटा है इक टुकड़ा,
नींद की बांहों में झूलोगी गोद में हो जाओगी बड़ी.
निंदिया तेरे द्वार खड़ी!
उनके द्वारा लिखी गई एक रुबाई को देखें -

शहर में अब कोई मित्तर न रहा, आज तक जो था चरित्तर न रहा,
आस के तोते सभी तो उड़ गए पालने को कोई तीतर न रहा.
पानी तेरी आहटें हलकी नहीं, हिल गयीं चाहे मगर छलकी नहीं,
जब भी समंदर में तुम मिल जाओगे, कौन हो तुम कुछ खबर होगी नहीं.

यदि पद्मा जी के संस्मरणों की बात करें तो हम पाते हैं कि वे बहुत ही रोचक एवं भावनाओं से परिपूर्ण रहे हैं. ऐसे संस्मरणों में उन्होंने स्व. महादेवी वर्मा की ही भाँति छोटे से छोटे व्यक्तियों पर भी गंभीरता एवं पूर्ण निष्ठा के साथ लिखा है. 'इन बिन' ऐसी ही कृति है जो प्रत्येक सहृदय पाठक को छुए बिना नहीं रहती है. इस पुस्तक में वे लिखती हैं, "गुजरे हुए वक्त में हैसियत वाले लोगों के घरों में काम करने वाले नौकर चाकर पीढ़ी दर पीढ़ी अपने मालिकों के साथ रहते हुए उस घर के सदस्य जैसे हो जाते थे. बहुत से घरों में बुजुर्ग हो जाने पर ये नौकर घरेलू मामलों में सलाह भी देने लगते थे. इन रिश्तों के और भी बहुत से पहलू हैं पर मैं तो सिर्फ यह जानती हूं कि आज भी इनके बिना घर गृहस्थी के संसार से पार होना मुश्किल है."

अपनी माटी के उपकारों से उऋण होने का एक उत्कृष्ट प्रयास उनकी रचना, 'जम्मू जो कभी शहर' था में बखूबी देखने को मिलता है. जम्मू की उत्कृष्टता से लेकर जम्मू में होते जा रहे प्रदूषण का उल्लेख भी इस पुस्तक में मिलता है. इसके साथ ही जम्मू की बेटियों द्वारा अन्यत्र विवाह कर लेने पर कानून द्वारा उनके संपत्तिगत अधिकारों के छीन लिए जाने की व्यथा एवं बेटियों को बेगाना कर दिये जाने का दर्द इस उपन्यास की विषयवस्तु है.

'तेरी ही बात सुनाने आए' मूल रूप से उनकी डोगरी रुबाइयों का हिन्दी अनुवाद है. यह मुक्तकों का वह संग्रह है जिसमें उनका मन गहरे अतल में गोते लगाता है और इनमें आध्यात्मिकता भी दृष्टिगत होती है.

'मैं कहती हूं आंखिन देखी' यात्रा वृत्तांतों की एक ऐसी पुस्तक है जिसे उन्होंने डॉ. धर्मवीर भारती के सान्निध्य से प्रभावित होकर लिखा. इसके बाद उन्होंने हिन्दी का गद्य बहुत लिखा है. उनकी देश-विदेश की यात्राओं का दुर्लभ दस्तावेज है यह पुस्तक.

उनका एक और चर्चित उपन्यास है 'भटको नहीं धनंजय' जो कि अर्जुन एवं द्रौपदी दोनों ही पर केन्द्रित होते हुए भी द्रौपदी को कमजोर अथवा असहाय नारी के रूप में चित्रित नहीं करता है. द्रौपदी से दूर जाने पर अर्जुन की मनोदशा का चित्रण इस उपन्यास की विषयवस्तु रही है. स्त्री होकर किसी पुरुष की त्रासदी के साथ स्वयं को संबद्ध कर पाना एक चुनौती पूर्ण कार्य रहा होगा, जिसे पद्मा जी ने बखूबी निभाया है.

'अमराई' उनके संस्मरणों का संग्रह है. बहुत आत्मीयता के साथ उन्होंने त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, इंदिरा गोस्वामी, कुर्रतुल ऐन हैदर, प्रभाकर माचवे, शिवानी, मलिका पुखराज, यू आर अनंतमूर्ति, फारूख अब्दुल्ला, नामवर सिंह, धर्मवीर भारती, सुमित्रानंदन पंत व ललिता शास्त्री को याद किया है. त्रिलोचन उनके लिए रमता जोगी थे तो पंत जी मैके के कवि व ललिता जी एक उदास कजरी. इसी तरह बारहदरी यादों की बारहदरी है जिसमें अनेक आला की यादों का खजाना है. इनमें अशोक वाजपेयी, अमीन सायानी, विष्णुकांत शास्त्री, लता मंगेशकर, गुलजार, कमलेश्वर, खुशवंत सिंह, फैज़ जैसे लोग शामिल हैं. त्रिलोचन के लिए उन्होंने लिखा है कि 'दाल का दूल्हा चला गया' तो खुशवंत सिंह को 'सच्चे आचरण की मिसाल' कहा है, कमलेश्वर के लिए 'हम जहां पहुंचे कामयाब आए' लिखा तो लता मंगेशकर को 'तेरी उपमा तोहे बन आव'; गुलजार के लफ्जों में वे नमक का असर देखती हैं तो राजिंदर सिंह बेदी को वे 'लफ्जों का जादूगर' बताती हैं. एक तरह से कवि व उपन्यासकार होने के अलावा मुख्यत: संस्मरण के मामले में वे एक यादगार कोष थीं.

इस प्रकार स्व. पद्मा सचदेव का साहित्य एक युग की अनुगूंज रहा है. आज वे हमारे बीच नहीं हैं, किंतु वे हमसे दूर भी नहीं हैं. उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमारे बीच उपस्थित है. उनकी कालजयी रचनाओं के माध्यम से हम उनको स्वयं के बीच ही पाते हैं. ऐसे में प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को चाहिए कि वह पद्मा जी के माध्यम से संसार को देखने हेतु उनके साहित्य का रसास्वादन करे.

अर्पित जैन
क्षे.का. भोपाल (दक्षिण)

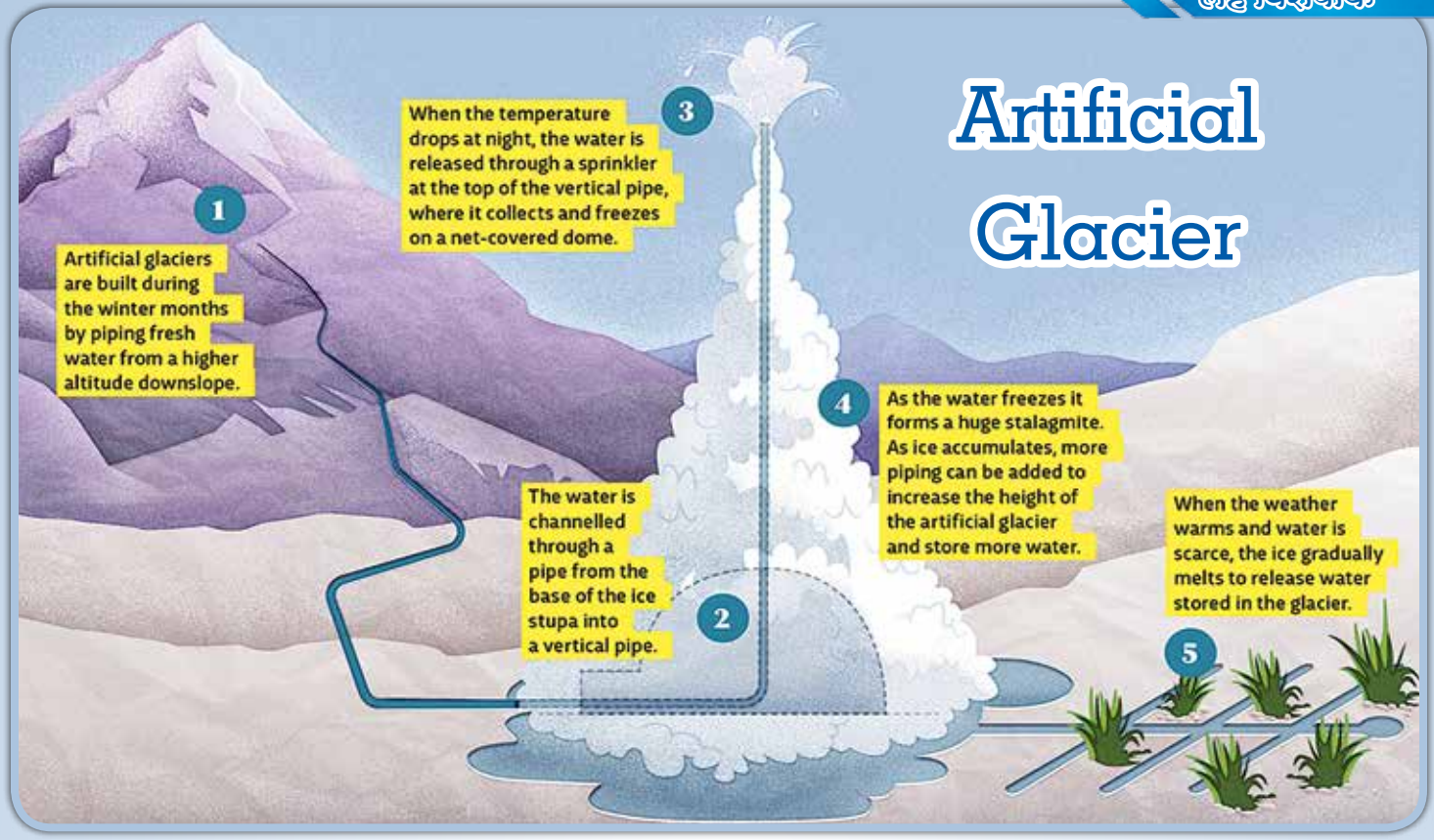

With the advent of technology in every sphere of life, life has indeed become more comfortable and luxurious. Have you ever wondered what all these would mean if the earth where we live was on the brink of devastation? Climate change has been a burning issue for decades and is worsening with each passing day. Many organizations, governments, NGOs, think tanks, and others are putting their best effort into finding a solution. In the meanwhile one concept has become a buzz lately: "Artificial Glacier".

Artificial glaciers, popularly called "Ice Stupas", are created through glacier grafting techniques in which a river or runoff is diverted into a valley, slowing the stream by constructing checks, used for storing winter water in the form of a conical-shaped ice heap.

The innovative solution of building an Artificial Glacier to combat the water shortage during the sowing season/ springtime due to the melting of the glacier rapidly was first built decades ago by Chewang Norphel, an Indian civil engineer from Ladakh. He has built more than 15 artificial glaciers to provide water during the dry season in the region. He is known as the 'Iceman of India'.

The modern-day technique of the artificial glacier or Ice Stupa is the innovation of Sonam Wangchuk (Ladakh), first conceptualized in 2013, and the Ice Stupa project is undertaken by his NGO Students' Educational and Cultural Movement of Ladakh.

During summer and especially during spring planting season when water is scarce, the Ice Stupa melts to provide a water supply for crops. Some seasonal melting of glaciers is normal and is expected. Farmers in Ladakh depend on the melting glacial water to irrigate their land. Usually, the winter snowfall replaces the melted ice but global warming and climate change have had a severe impact on the agricultureal aspect. Agriculture in the cold desert region is critical to survival, and crops can only be cultivated over a few months each year. The already short window of cultivation is affected severely by receding – or disappearing – glaciers due to climate change. This has provided climate scientists with some of the most alarming evidence that the Earth is warming. The idea of freezing, and storing winter fresh water in huge, towering heap-like structures and then accessing the melting water throughout the year have provided a lifeline for farmers in Ladakh, a high mountain-desert region on the edge of the Himalayas. Artificial Glaciers have indeed been a blessing that helps to sustain these communities that depend on global water.

Nilza Angmo
R.O. Amritsar

Food & Clothing of J - K & Leh

Wazwan is a multi-course meal in Kashmiri cuisine, usually served in a Trammi or traem. Mostly served during weddings, the very name is enough to bring aroma of your home town when you are outside the valley. Just say the word "Wazwan" in any Kashmiri home and there is not a single person who would not say "Aabounthemei, bathe taraemwathiha" (You made my mouth water wish someone could send me a Taraem).

Wazwan is cooked in special nickel-plated copper vessels over simmering fires of wood, preferably from old fruit trees. Between fifteen and thirty preparations of meat are cooked overnight under the supervision of vastewaza (master chef). The red color in kashmiri cuisine is usually derived from either the Kashmiri chillies or cockscomb flower called mawal. Kashmiri Cuisine use lots of dry fruit .It is in fact the availability of Waza that determines the marriage schedule in Kashmir

Wazwan is not a simple meal. It's a ceremony. Guests are seated in a group of 4 on a dastarkhwan or sheet, usually white in color and share the meal in a Traem. It begins with washing of hands in a basin called the Tasht-è-naer or Tash Naer, which are taken around by attendants- either the waza or the close relatives join him in serving. Tash is a copper vessel filled with water and naer, in which guests wash their hands.

In case you happen to eat the wazwan with fork and knife, people will think there is something seriously wrong with your hands. So, DON'T ever use fork and knife or else you will be sarcastically called an angrez and people will think you are showing off. Eating with the hand is like sone pe suhaga.

Anyway, as this Tasht-è-naer is taken away, a ceremonious entry by attendants is made bearing Tramis/Traem. Trammi or traem is a large and beautifully engraved copper platter. Trammi is covered with sarposh (sought of lid, that keeps food warm).

When the lid of trammi is removed, there is an aroma of different dishes that makes your stomach churn. A big paper tissue covers the entire ingredients of traem/trammi before you could finally catch a glimpse of the mouth watering wazwan.

It consists of a heap of rice and the first few courses which include:-

1. **Seekhkabab's :** Trammi is quartered by 2 long Seekh Kababs. They are cut in halves when served. Seekh Kababs are minced meat roasted on skewers over hot coal. Someone preferably eldest in tarami divides kabab equally among four.
2. **Tabakh Maaz :** It is a glossy meat made of lamb ribs that are cooked twice and then simmered in yogurt with spices till tender. It's then fried thoroughly and served in dry form.
3. **Daeni Phoul :** It is a large mutton piece.
4. **Waze Kokur :** Two halves or two whole chicken are cooked and garnished with chopped coriander and melon seeds.
5. **Kashmiri Methi :** Underneath all these dishes, lies Methi. It is a sort of stew usually made with lamb stomach and

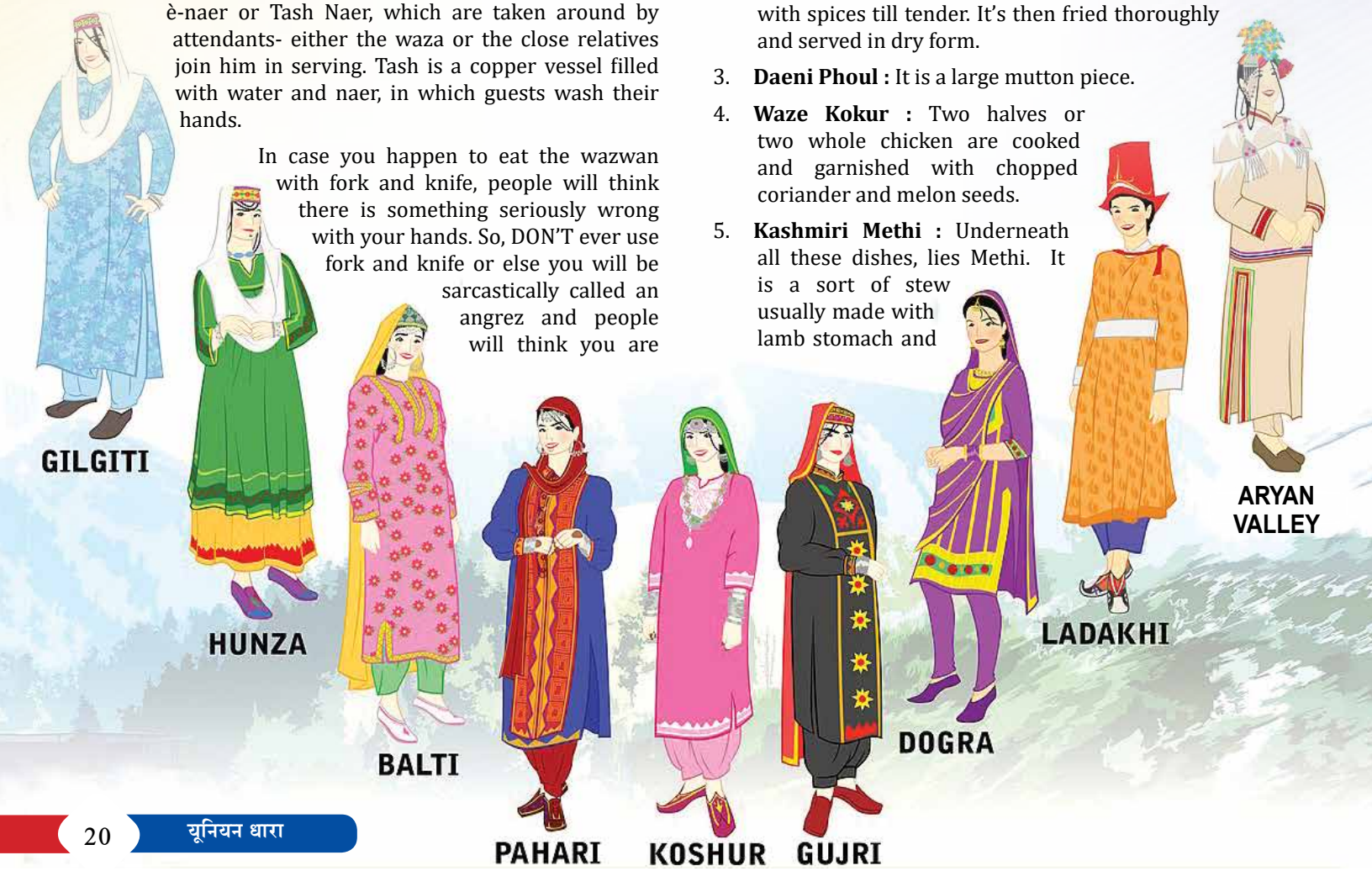

flavored with methi or fenugreek leaves. Don't be a baby. It's really good. There are 4 small divisions of methi.

6. **Rista:** Rista is a red colored Kashmiri Kofta or meatballs in red gravy. Four ristas are served to each Trammi.
7. **Roganjosh or Red lamb:** Rogan, means "oil or fat" and Josh means "intense heat". Thus, Rogan Josh means made in oil at intense heat. This is a meat dish in which tender lamb is cooked with kashmiri spices. There are no tomatoes added to this traditional dish; not even to enhance color. The colour comes from mawal or cockscomb.
8. **Daniwal Korma :** The word 'dhaniwal' refers to coriander in the local Kashmiri language. Dhaniwal Korma is mutton korma cooked in a lot of coriander or dhaniya and yogurt based gravy .
9. **Marchhwangan korma or Mirchika korma :** Marchwangan means red chilly in kashmiri. This dish as spicy as it sounds. Mutton korma is cooked with fiery hot Kashmiri chillies and spices.
10. **LahabiKabab or MoachiKabab:** Lahabikabab is a diamond shaped kabab which is flattened and pounded meat cooked with spices, yogurt and coriander.
11. **Aab Gosh :** Aabgosh is sheep ribs cooked in a milk based gravy and flavoured with green cardamoms and saffron. This is a mild dish with tender and juicy meat cooked in milk without any hot spices.
12. **PalakRista or Waza Palak :** This is a simple palak dish. occasionally mixed with small pounded mutton rista balls.
13. **Ruwangan Chhaman or Tomato paneer or Wazachamman :** Paneer (Cheese) is called Chhaman in Kashmiri. Paneer is simmered in tomato sauce, flavoured with spices and fennel seeds (cheese with Tomato gravy). Each tarami has one piece served by waza which is then equally distributed.
14. **Doodh Ras:** Doodh means milk. Doodh Ras is meat cooked in a sweet milk gravy. Each tarami is served a big single piece of Dodhè Rasmaaz (meat).
15. **Yakh'n or Yakhni:** Yakhni is a popular mouth watering Kashmir dish. It is a yogurt based curry and is either made with lamb or lotus stems. It is prepared in curd along with spices and does not have turmeric or red chilli powder. Bay leaves, cloves, cardamoms and fennel seeds lend primary flavours to this curry. The difference between yakhni and Aabgosht is that AabGosht is made with milk instead of yogurt.
16. **Ghustaba:** It is the finishing dish served in Wazwan. Before serving gushtaba, guests usually prefer to have fresh rice so that they can relish it with sumptuous gravy without mixing with flavours of other dishes. Gushtaba is a dish of minced velvety textured mutton balls cooked in curd and spices. It is similar to Rista, but cooked in aromatic yogurt based gravy (Yakhni) and larger in size. Traditionally, gushtaba is made with minced mutton and the lamb fat together. The mutton is hand-pounded, using a wooden hammer on a stone or wooden block.
17. **Haak:** Letuce is popularly known as Haak in Kashmiri. It is the most popular vegetarian dish. Haak leaves are green in colour and look a lot like spinach. But they are not spinach. It is cooked in mustard oil and kashmiri chillies. There are varieties of it: monjjihaak and wastèhaak. Hakh is usually served on Mehndi Raat in weddings.
18. **Pulao :** Kashmiri pulao is a very popular rice dish prepared with dry fruits and nuts. Kashmiri pulao, unlike normal pulao recipes is not spicy. Kashmiri Pulao is mildly sweet royal pulao flavoured with saffron and aromatic spices.

The Dress of Jammu and Kashmir is well known for their embroidery and intricate designs, which reflect the richness of the culture and landscape of the region. The form of clothing is designed to counter the cold climate of the region. Most of the garments are made of wool, silk and designed with intricate embroidery and cotton.

1. **Pheran :** The Pheran is the prominent attire for Kashmiri women. The Pheran worn by women usually has Zari, embroidery on the hemline, around the pockets, and on the collar area. Ladies prefer suits and Burgha in summer and Pheran are preferred in autumn.
2. **Pancho :** A pancho is an outer garment designed to keep the body warm. In winter season. It is very easy to wear, and is made of wool.
3. **Long Tunic & Salwars:** The people who live on the hilly region of Kashmir are known as Gujjars. The women of Gujjar community wear the Kashmir; dress which is similar with the dresses of women who live in the Turkish village. The Gujjar women are dressed in loose sleeved tunics (a full skirt) but they like loose sleeves with baggy salwars. They also wear a thick curtain over their face, which is long till their shoulders. The hair of the Gujjar woman, are knotted with more than one plait, which they like to hang on the front side.
4. **Kamrbands & Turban:** Dogras are the people located in the Kashmir state's mountain valley, on the southern side which is extended till the Punjab's plains. They wear the Kamarband or waist belt. Dogra women wear a loose tunic, dupatta, chudidar salwar and also a cap, which makes their personality charming. Similar Dogra Men wear fitted pajamas and kurtas of considerable length. The use of kamarbands and turban are prominent among the Dogra elders.

Shazia Yaseen
R.O. Amritsar

कश्मीर को अपनी अपार प्राकृतिक खूबसूरती की वजह से पृथ्वी का स्वर्ग माना जाता है. भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में मौजूद कश्मीर घाटी हिमालय और पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के बीच बसी है. वहीं लेह गर्मियों में सुरक्षित जगहों में से एक है. इस जगह पर बाइक पर आना बाइक लवर्स का सपना होता है.

जम्मू और कश्मीर की वेशभूषा में मूल रूप से एक व्यापक ढीला गाउन शामिल है. सर्दियों के मौसम में यह ऊन का बना होता है जबकि गर्मियों में यह कॉटन का बना होता है. एक ढीले प्रकार का पाजामा इस गाऊन (फेरन) के नीचे पहना जाता है. फेरन मूल रूप से एक ढीला वस्त्र है जो आस्तीन में शिथिल रूप से इकठ्ठा होता है ओर चौड़ा होता है. मुस्लिम लोग इसे ढीला पहनते हैं जबकि हिन्दू पुरुष लंबे फेरन पहनते है. इसके इलावा कश्मीरी लोग पश्मीना शॉल भी पहनते हैं जो पहाड़ के बकरे से प्राप्त किए जाते हैं. इस शॉल के दोनों किनारों पर जटिल काम किया जाता है. एक कश्मीरी महिला के सिर में एक चमकीले रंग का दुपट्टा या तरंगा होता है जिसे एक निलंबित टोपी से सिला जाता है और यह नीचे तक एड़ी की ओर होता है. यह शादी की पोशाक का अभिन्न अंग होता है.

इसके अलावा जम्मू-कश्मीर का खानपान भी दुनिया में सबसे निराला है. यहां का खाना दो तरीके से विभाजित है एक जो मुस्लिम कल्चर का है, दूसरा जो कश्मीरी पंडित के कल्चर का है. यहां केसर का उपयोग ज्यादा होता है और हल्दी का प्रयोग कम होता है. जम्मू-कश्मीर के मुख्य पकवानों में कश्मीरी दम आलू, चावल की रोटी, तबाक़ मजाक (तला हुआ मटन चोप्स), रोगन गोश्त शामिल है. दम आलू दही, सुगंधित सोंफ तथा अदरक पाउडर में पकाया जाता है. तबाक़ माज अमेरिकी तथा ब्रिटिश मटन चोप्स का कश्मीरी संस्करण है. रोगन गोश्त कम आयु के भेड़ को पकाकर बनाया गया पकवान है जिसे कश्मीरी मिर्च, अदरक पाउडर, हींग तथा अन्य पदार्थों के बीच पत्ते के साथ पकाया जाता है. यख़नी हल्दी या मिर्च पाउडर की दही आधारित मटन ग्रेवी है. बखारखनीब एक तरह का शाही पकवान है जो शादी में बनता है. यह दही मसालों में बना मटन है जो कि पारंपरिक तरीके से बनाया जाता है.

लेह की वेषभूषा मे हिमालयी प्रभाव है. यहाँ की पोशाक को गोंचा कहा जाता है. पुरुषों का गोंचा एक लंबाई वाला कोट है. इसे चौड़ा काट दिया जाता है. इसे दाहिने कंधे पर और दाहिनी ओर नीचे पीतल के बटन ओर लूप के साथ बांधा जाता है. महिलाओं का गोंचा पुरुषों के गोंचे की तुलना में अत्यधिक सुंदर होता है. इसमें कई छोटे प्लेट्स के साथ एक पूर्ण स्कर्ट बनी होती है. पोशाक को टोपी पहनकर या पेरक द्वारा पूरा किया जाता है. परंपरा के अनुसार सिर के कपड़े महिलाओं का भाग्य होते हैं. लेह में अमूमन तापमान कम ही रहता है, जिसके चलते यहां के लोग खुद को सर्दी से बचाने के लिए थुक्पा का सेवन करते हैं. यह एक तिब्बती डिश है जिसमें नूडल्स के साथ सब्जी और मीट के टुकड़े होते हैं. इसे खमीर के साथ परोसा जाता है जो कि एक भूरे रंग की रोटी होती है. इसके अलावा यहां याक चीज़ जो याक के दूध से बनाया जाता है, खाया जाता है.

मोक थुक यहां का लोकप्रिय पकवान है. इस डिश को मोमोस सूप के साथ परोसा जाता है. छांग यहाँ की देसी शराब है जिसे वे खुद बनाते हैं. यह पेय पदार्थ लद्दाख वासियो को यहाँ के सख्त सर्द मौसम से दो दो हाथ करने की ऊर्जा देता है. सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में से एक, तिग्मों एक उबली हुई रोटी है जिसे शाकाहारी/मांसाहारी स्टू के साथ परोसा जाता है. इसका सेवन नाश्ते ओर लंच में किया जाता है.

ऊंचे पहाड़, झीले, घूमने के लिए जम्मू-कश्मीर और लेह भारत में सबसे प्रसिद्ध जगहों में से एक है. यह जगह प्रकृति की सुंदरता और प्रेम से सराबोर पर्यटकों को लुभाती है. यहाँ का खानपान सबसे निराला है. आप जब भी जम्मू-कश्मीर या लेह जाएं तो यहां के जायकों का स्वाद जरूर लें.

निहारिका
क्षे.का. शिमला

Folk Music of Jammu - Kashmir & Leh

It is believed that music has been in existence even before language was discovered by humans. Our ancient Indian Culture is based on four vedas namely the Rigveda, the Yajurveda, the Samaveda and the Atharvaveda. Out of the four vedas, the Samaveda contains melodies and chants which were composed approximately around 1500 to 1200 BC. The sole reason of mentioning this, is to highlight the importance of Music in the culture of our society from the ancient times. Basically, music in our country changes with geography and can be traditionally divided in to Classical Music and Folk Music.

Classical Music is practised based on swara, shruti, alankar, raga and taal. There is a set of guidelines for practicing classical music which is not altered. On the contrary, Folk Music has no such set of guidelines. Folk music is a medium of expressing human emotions like celebration, sorrow, spirituality etc.. Traditionally, folk songs are sung during festivities marking occasions like harvest, rain etc.., basically folk music is a way of expressing life. The folk music travels across generations and continues its existence. Folk music is the binding agent for the tribal societies.

Folk Music of Jammu and Kashmir : The Kashmiris celebrate special occasions with traditional music and dance which reflects the rich history of the region. The folk music of Kashmir valley is like music of central Asia, to the music in Jammu region will be similar traditional north Indian forms.

Forms of Folk Music in Jammu and Kashmir :

Chakri: It is a popular traditional music in Jammu and Kashmir. Kashmiris perform this music as a part of religious ceremonies and folk culture. Chakri is a responsorial song form and is also used to tell stories. Musical instruments such as the rubab, harmonium, sarangi, nout, geger, chimta and tumbaknaer are used as accompaniments. Rouf which consists of fast notes, is played to conclude a chakri. This form of music is played at Henna nights during Kashmiri weddings.

Wanvun: The term means chorus and refers to a style of singing by the Kashmiris. It is performed at certain rituals, is sung on a fixed beat, and on a fixed tune, with differences in the pitch based on the occasion for which it is sung. It is also called Rouf, where the term refers to a traditional dance form performed by women on social occasions and cultural events. Rouf is also performed to greet the spring season or during Ramadan. The songs in the background comprise questions and answers, where one group pases the question and the other group answers.

Sufiana Music: Sofians musiqui (Sufi Music) owes its introduction from Kashmir to Iran. Introduced in the 15th century in the Kashmir valley, Sufiana music continues to enthral its audience till date. With the passage of time, several Indian ragas were added to this music form. This classical music form of Kashmir makes the use of Santoor, Sitar, Kashmiri Saz, Wasool or Tabla.

Hafiz Nagma: A part of the classical Sufiana Music, Hafiz Nagma makes use of Santoor-a hundred stringed instrument played with sticks. In Hafiz Nagma, there is a female dancer, accompanied by several males with instruments. The dancer, known as Hafiza, moves her feet to the musical notes.

Song of Habba Khatoon: This is a classical song based on the love story of the Kashmiri princess Habba Khatoon and Yousuf King. The song reflects her feelings on being far away from Yousuf King.

Wuegi-Nachun: A lesser-known dance form of Kashmiris, it is performed after a marriage ceremony. After the bride has left, women dance around the bridal rangoli.

Dandaras: This dance is performed during the Lohri festival, in which the dancers carry a model of a peacock and a stick in their hands, which is struck with another person's stick. This dance form is upbeat and energetic.

Gwatri: This is a combination of music and dance and is another art form of Jammu and Kashmir which portrays the rich history and cultural heritage of this region.

Dumhal: It is a theatre-based art form that is a combination of dance and marriage songs. It is mostly performed by people of the Wattal region.

Bakhan: It is performed without musical instruments, is in verse, and widely used to entertain the masses.

Bakhan Geetru: This is a form of song and dance performed by people from the Dogra Pahari region of Jammu. It is usually performed at festivals, folk parties and during marriages, by men and women wearing traditional costumes.

Benthe: It is a lyrical tradition known to have been started by the Bakerwal and Gujjar tribes. About 5-7 people perform the benthe song in chorus.

Famous Musicians: Padma Bhushan and Padma Shri Pandit Shiv Prasad Sharma is a legend and a master in playing the santoor.

Folk Music of Ladakh : The musical heritage and cultural legacy of Ladakh is enchantingly rich, and colourful. A variety of cultures of different tribes and communities such like Tibet, Balti, Mons and Brokpa have influenced the performing arts of the land.

Ladakh has a rich tradition of music, with songs for almost all occasions, lu being the generic word that refers to all songs-stendel lu (auspicious songs), zhung lu (congregation songs), gying lu (bravery songs), tho lu (wedding songs), chang lu (wine songs), lham lu (travel songs), garu (song for agricultural ploughing), drog lu (dardic songs) and tsig lu (satirical songs) amongst others. At the start of any auspicious event the lharna, musical offerings for the gods, are performed.

The Ladakhi traditional music can broadly be categorised into zhung lu, jabro and the little known shondol music, which is believed to have been introduced from the Lahaul–Spiti region or from the ancient country of Zhangzhung, of which Ladakh was also a part. Today, folk songs are in state of degradation, and there are attempts to revive traditional music by both individuals and organisations. An online social group called Ladakh Musical Heritage, started by Tsering Sonam Basgo, is one such effort to preserve and promote the folk songs and music of Ladakh. Tenzin Jamphel is a YouTube channel featuring the work of the artist.

The religious dance performed by the lamas (monks) is called Chhams and is related to monastic festivals, where it is performed to the music of the Monastic orchestra. Each monastery has its own orchestra. The dancers wear elaborate masks ranging from the fearsome and grotesque to the fine silk costumes representing various divinities from the Buddhist pantheon. Chhams involve blessings in order to ward off evil.

The music accompanying the Chhams is generally slow and haunting, and the musical instruments involved are the Dungchen (long horn), Gyaling (oboe), Nga (drums), Silnyen/bubjal (cymbals), kangling (shinbone trumpets), dung (conch shells), Damaru (skull drums) and Drilbu (bells). The masked dancers move around very slowly; the vital part of the dance being the mask not the dance. All dances end with good triumphing over evil. The dances are performed not only to symbolize destruction of evil but as offerings to the monastery deity.

Folk songs are generally referred to as zhung lu (congregation songs), however, there are a great many variety of folk songs for different occasions. Every village has a singer or number of singers whose presence are invaluable during marriages and other celebrations. Folk singing culture is prevalent in almost the entire Ladakh.

In routine activities also, folk music has been an integral part, women those days always carried a mouth organ called khakong or kongkong on their shoulders while watering the fields, and played the instrument to entertain themselves during such physical labour. Men often carried a double-barrelled flute (tsagling) which they played in leisure times.

Renowned artists of the century include Tsechu Lhamo and Morup Namgyal. Other music legends of Ladakh such as Phuntsog Tsering Raufpa, Ishey Putit, Tashi Palmo, Ghulam Ali, Shafi Rili, Ali Mohammed have spent a good part of their lives performing in different spaces of Old Town Leh. The establishment of an All India Radio (AIR) station in Leh in 1971 gave the much-needed push to these enthusiastic artists to continue enriching and promoting folk music and songs for the maximum populace in the Ladakh region.

Ladakh has a rich heritage of folk dance. The dances are elaborate, colourful, and majestic, with mostly slow and gentle movements matched by the richly adorned peraks (head dress), and music.

V. Sunit
C.O. Anex, Hyderabad

"मैं अपने कश्मीर में ही रहना चाहता हूँ"

– डॉ. सतीश विमल

कश्मीर के मीडिया, साहित्य, पत्रकारिता का प्रसिध्द नाम है, डॉ. विमल सतीश. बेखौफ, साहसी शख्सियत, जोकि अपने कश्मीरियत और कश्मीर प्रेम की वजह से आज भी कश्मीर में डटी है और वहीं पर रहना चाहती है. उनके साथ डॉ. सुलभा कोरे की हुई बातचीत....

प्रश्न - आपके लेखन के बार में बताइये.

उत्तर - मैंने शुरुआत हिन्दी में की. हिन्दी में मेरी 16 किताबें प्रकाशित हुई है. कश्मीरी मेरी मातृभाषा है. हिन्दी के सबसे बड़े हस्ताक्षर और ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. रहमान राही से प्रेरणा लेकर हिन्दी के बजाय कश्मीरी में कहानियां, कविताएं, आलोचना आदि पर लिखता हूँ. वैसे उर्दू में भी लिखा.

प्रश्न - उर्दू में ! उर्दू कैसे ?

उत्तर - कश्मीर में उर्दू लगभग हरेक को आती है. यह पिछले 150 सालों से सरकारी जबान रही है. यह महाराजाओं के जमाने से ही है. लोग इस जबान से लगभग वैसा ही इश्क करते है. इसमें थोड़ी उच्चारण से संबंधित दिक्कतें रहती हैं. उर्दू के साहित्य में कश्मीर के साहित्यकारों का बड़ा योगदान रहता है. मैंने भी कश्मीरी के साथ साथ उर्दू में 3 किताबें लिखी है.

प्रश्न- आप मूलत: कहाँ से है.

उत्तर - मैं मूलत: कश्मीर से हूँ. अवन्तीपुरा इलाके के त्राल इलाके से संबंध रखता हूँ. यह एक जमाने में कश्मीर की राजधानी हुआ करती थी. राजा अवन्तिवर्मन का राज्य था वहाँ. अभी भी वहाँ पर उनके मंदिरों आदि के अवशेष मौजूद है. मैं पिछले तीस सालों से हालातों की वज़ह से श्रीनगर में ही रह रहा हूँ.

प्रश्न - श्रीनगर के हालात अब कैसे है?

उत्तर - श्रीनगर के हालात पिछले दो-तीन साल से बेहतर है. अभी पत्थरबाजी नहीं है. आर्मी पर हमले नहीं है और ना ही विरोधियों को कोई खुला समर्थन है. यह सब डर की वजाह से है. उनको भी पता है कि उन्हें कोई बचाने वाला नहीं है. आजकल टार्गेट किलिंग हो रही है पर बड़ी वारदातें नहीं हो रही है. हर शुक्रवार को तो पूरा शहर ही बंद रहता है. यह पिछले आठ-नौ सालों से और बढ़ गया था. पत्थरबाजी से ही करीब हर साल सौ-डेढ़ सौ लोग मर जाते थे. सिर्फ पत्थरबाजी को नियंत्रित करने से ही हालात काफी सुधर रहें हैं. पुलिसवालों पर कंट्रोल होने से वो चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते थे. पत्थरबाजों को पकड़ लेने पर उन्हें छुड़वाने वाले आ जाते थे. क्योंकि उन्हें चुनाव भी वही जितवाएंगे. ऐसी काफी चीजें थी जिसके कारण यह रुकता ही नहीं था. ऐसे हमलों में अधिकतर नौजवान मरते थे वो भी बीस पच्चीस साल की आयु वर्ग के! उमर अब्दुल्ला के कार्यकाल में यह एक सीजन की तरह चलता था. हर साल एक सीजन आता था. एक बार एक साथ 122 लोग मर गए थे ऐसे हमलों में उसके बाद ढाई महीने का लंबा कर्फ़्यू चला था. उसके बाद कंट्रोल हुआ.

प्रश्न - दो साल पहले का मीडिया और आज के मीडिया में क्या अंतर आया है. धारा 370 से पहले के कश्मीर और आज के कश्मीर पर आपके क्या विचार है?

उत्तर - पहले तो सिर्फ सुर्खी होती थी. उनका एक ही रटा रटाया बयान आता था. पाकिस्तान, कश्मीर पर जुल्म और आजादी. आर्मी पर हमला उनकी पहली खबर होती थी. अगर मुख्यमंत्री ने कोई उद्घाटन किया है तो वह अंतिम पृष्ठ की खबर होती थी. परंतु आज अखबारों में राज्यपाल शुरू से मिलेंगे. कोई भी बड़ा अखबार हमें सिर्फ कश्मीर के विकास पर ही मिलेगा. सिर्फ सरकार क्या कर रही है आदि आदि. सब सकारात्मक खबरें ही मिलेगी. यह सब चाहे जैसे भी हो, परंतु यह अच्छा संकेत है. अब लोगों को भी डर है कि अगर कोई गलत हरकत की तो पकड़े जाएंगे. यहाँ के मीडिया ने सिर्फ खबरे ही नहीं बेची. आप देखिये कि जिस अखबार की केवल पाँच सौ प्रतियाँ छपती है उसके मालिक के पास बड़ा सा बंगला है और वह हर साल गाड़ी बदलता है, उसके बच्चे विदेशों में पढ़ते है. पहले मीडिया इन्हीं को सपोर्ट करता था. अभी चाहता है कि जान बच जाए. अब उन्हें डर है कि उन पर सरकार सिकंजा कस सकती है. वे जेल जा सकते है. गलती हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है पर सुधार

ना करना किस हद तक जायज? हमारी सरकारों ने भी पिछले तीस सालों में कई बार कर्फ़्यू लगाया, लोगों को जेल में डाला. पर चार छः महीनों में वे फिर छूट जाते थे. वह फिर पत्थर बाजी में पकड़े जाते. एक एक आदमी चार चार - पाँच पाँच बार पकड़े जाते रहा है. अभी आप पर्यटन को देख लीजिये. जो पहले कहते थे कि पिछले दस सालों में बहुत नुकसान हुआ है, वही लोग अब कह रहें है कि उनका यह नुकसान पिछले एक-डेढ़ साल में पूरा हो गया है. पर्यटन से हरेक को फायदा होता है. यहाँ पर उद्योग नहीं है तथा ना ही कोई बड़ी निजी कंपनियां है जो रोजगार देती हो. पर्यटन में इतनी शक्ति है कि वह आधे से ज्यादा कश्मीर को खड़ा कर सकता है. यहाँ की इकोनोमी को सीधा फायदा देता है. इससे पूर्व तो यहाँ पर कुछ परिवार, कुछ घराने और कुछ लोग ही चलते रहे. कश्मीर के लिए एक समय तो ऐसा भी था जब बड़े बड़े होटल खाली रहते थे. केवल पर्यटकों के अभाव में! पहले यहाँ पर धरातल पर कुछ दिखता ही नहीं था. यहाँ की सारी गतिविधियां खत्म हो गई थी. अब यहाँ पर स्वयं सहायता समूह, मछली पालन आदि छोटे से लेकर बड़े व्यवसाय तक शुरू हो रहे हैं. कुछ लोग बड़ी कंपनियों का अच्छा पैकेज छोड़कर अपना व्यवसाय कर रहे हैं. यह पहले भी होता था पर यह कभी दिखता नहीं था. मीडिया के साथ जुड़ा होने के कारण हम 'सक्सेस स्टोरी' ढूँढने में परेशान होते थे. कोई सक्सेस स्टोरी मिलती ही नहीं थी. अब तो ऐसी कहानियों की लाइन लगी हुई हैं. अब पढे लिखे, एमबीए किए हुए लोग मुर्गीपालन, मछली पालन आदि उद्योग कर रहें हैं. यहाँ के उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार तक जा रहें हैं. अब सरकारी स्तर पर जारी की जाने वाली योजनाओं का लाभ जमीनी स्तर पर देखने को मिल रहा है. अभी दो तीन साल का छोटा समय कश्मीर को मिला है जो कि पिछले कई युगों के मुकाबले बहुत ही छोटा समय है. अभी और समय लगेगा. हमें बदलाव दिखने शुरू हो गए हैं. अभी यहाँ पर फीचर फिल्म बनाने की शुरुआत हो गई है. श्रीनगर जैसी जगह पर ऐसा बदलाव धरातल पर देखने को मिल रहा है. अभी 'खेलो इंडिया' में यहाँ के कई खिलाड़ियों नें भाग लिया है. वुशु के सभी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी यहीं से संबंध रखते है. खेलो इंडिया में यहाँ के कई खिलाड़ी भाग ले रहें हैं. राष्ट्रीय खेलों में यहाँ के खिलाड़ियों की संख्या बढ़ती जा रही है. बड़े हाइवेज बन रहे हैं. बड़े बड़े और कई किलोमीटर लंबे टनल बन रहे हैं. यहाँ पर सब कुछ बदला है पिछले दो तीन सालों में!

प्रश्न- जम्मू और कश्मीर के साहित्यकारों के बारे में बताईये.

उत्तर- हमारे वर्तमान के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जो खुद साहित्य में बहुत रुचि रखते हैं. खुद आईआईटीयन होने के बावजूद साहित्य में दिलचस्पी रखते हैं. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रोफेसर भारतभूषण शर्मा जी हिन्दी के बड़े हस्ताक्षर है. वे साहित्य अकादमी विजेता रहे है. जम्मू में संस्कृत विद्वान डॉ. शिव प्रसाद रैना जी का बड़ा नाम है. प्रोफेसर वेद कुमारी घई जी कश्मीर के प्राचीन इतिहास की विशेषज्ञ है.

प्रश्न - आपने हिन्दी, कश्मीरी और उर्दू में लेखन किया है. आलोचनात्मक साहित्य में कुछ बताइये?

उत्तर - मैंने सबसे पहले आलोचनात्मक साहित्य हिन्दी में कश्मीर में बंदूक के साए में लिखी गई कविता' पर लिखा जो एक पुस्तक समीक्षा थी. यह पूरी किताब थी जो डेढ़ सौ पेज की है.

प्रश्न- आप साहित्य से जुड़े है और मीडिया से भी. आपका अनुभव क्या कहता है?

उत्तर - मेरा इस मसले पर अनुभव ठीक नहीं रहा. मैं तो अभी भी सुरक्षा के घेरे में रहता हूँ. अभी मैं जहां रहता हूँ वह सीआरपीएफ़ की सुरक्षा से घिरी हुई जगह है. हमारा कार्यालय बहुत ही सुरक्षा से घिरा हुआ रहता है. हमारे कार्यालय के बाहर दो बार आत्मघाती हमले हुए है जिसमें कई लोग मरे भी है. हमारे कार्यालय पर छोटी-छोटी मिसाइलों से हमला करीब दस बार हो चुका है.

प्रश्न - क्या आपको इन सबने डराया नहीं?

उत्तर - नहीं! मैंने तय किया था की मैं कश्मीर में रहूँगा, चाहे जो भी हो जाए. कश्मीर से मेरे स्थानांतरण कई बार हुए लेकिन मैं एक साल के भीतर वापस श्रीनगर आ गया. मेरे कई साथी पलायन कर गए पर मैं अभी तक डटा हुआ हूँ. आकाशवाणी, दूरदर्शन में निम्नवर्ग से कोई हाजिरी ही नहीं थी. मैं हाजिरी के लिए ही डटा रहा. मैंने यहाँ के सूफी साहित्य पर भी बहुत काम किया है. सूफी साहित्य पर दूरदर्शन पर एक सीरीज की थी. आकाशवाणी में आने के बाद सात सालों तक 'सूफी सदा' के नाम से प्रसिद्ध कार्यक्रम किया. आम जनता का प्यार मिलता रहा. कश्मीर में सूफी साहित्य काफी उज्ज्वल रहा है. क्योंकि सूफी सभी को समान समझते है, वे मानवता की कसौटी पर सबको परखते है. सूफियों का यहाँ पर राज रहा है. पिछले तीस सालों से उन्हें नष्ट करने की कोशिश की गई. कश्मीर की बड़ी दरगाह 'दस्तगीर की दरगाह' है जहां पर पर हिन्दू मुस्लिम कुछ भेद नहीं किया जाता है. यहाँ पर कश्मीर के हिन्दू भी दस्तगीर की कसम खाकर सच बोलते है. इतनी इसकी आस्था है. पिछले तीस सालों में इस पर भी आघात किया गया है. मैं सूफियों की बात करता हूँ.

प्रश्न - आपके हिसाब से यहाँ का माहौल खराब करने के लिए कौन जिम्मेदार है.

उत्तर - यह कश्मीर का एक बड़ा व्यवसाय है. इसमें बहुत पैसा लगता है. यहाँ पर विरोध की दुकानें चलती है. यहाँ के गरीब वर्ग को मोहरा बनाकर आर्मी व अलगाववाद के विरुद्ध प्रयोग किया जाता है. ठीक उसी तरह जैसे कोई मिल का मालिक अपने मजदूर को प्रयोग करता है. यहाँ पर मात्र पचास रुपए के लिए सीआरपीएफ़ के कैंप पर ग्रेनेड मार दिये जाते रहे है. यहाँ पर बहुत भयावह परिस्थिति रही है. सूफी विचारधारा को लक्ष्य बनाया गया है. पैसे के बल पर सूफी विचारधारा को काफ़िराना साबित कर दिया गया. यहाँ पर दरगाहों को जला डाला गया. अभी यहाँ पर टार्गेट किलिंग शुरू हो गई है.

प्रश्न- क्या आपको लगता है कि यहां पर आज के युवा में कोई बदलाव आया है?

उत्तर - यहाँ का आज का युवा काम चाहता है. अब छोटे से लेकर बड़े व्यवसाय तक स्थापित किए जा रहे हैं. दरअसल, यहाँ पर पिछली

कुछ दशाब्दियों से रोजगार की बात ही नहीं की गई. सोच को बदलने में अभी भी समय लगेगा. लेकिन कश्मीर बदलाव की ओर जा रहा है.

प्रश्न - इतने सब के बाद भी क्या कश्मीर के साहित्य में कोई बदलाव आया है?

उत्तर - जी बिलकुल. मेरी एक किताब है 'अंधेरे से चुराई गई कविता'. कश्मीर में 1989 से 2022 तक की कवितायें इसमें लिखी गई है. 'दहशतमय कविता' मेरे द्वारा इसी मसले पर संपादित की गई दूसरी किताब है. इन किताबों में सच का सामना करते हुए लिखी गई कविताएं है. यह परिस्थिति को बयान करती है. साहित्यकार किसी एक पक्ष को लेकर लेखन नहीं कर सकता. साहित्यकार जो देखता है, महसूस करता है, वही लिखता है. यहाँ पर लेखकों नें अलगाववादियों के पक्ष में भी लिखा है पर वह ज्यादा पनपा नहीं. यहाँ के साहित्य में एक विस्थापित साहित्य भी है जो कश्मीर से बाहर चले गए लोगों की पीड़ा को दर्शाता है. यहाँ पर 'दर्दपुर' जैसा साहित्य भी लिखा गया है जो कि ज्ञानपीठ नें छापा है.

प्रश्न- आपके बचपन के दौरान देखे गए अमन चैन और आज के बीच आपको क्या अंतर महसूस होता है?

उत्तर - अमन चैन कश्मीर का सबसे ज्वलंत मुद्दा रहा है. हरेक दिन कुछ ना कुछ होना, पत्थरबाजी, आर्मी पर हमले आदि तो यहाँ की आम बात हो गई थी. अभी हालात सुधर रहें हैं. लेकिन अभी भी मैं अपने गाँव नहीं जा सकता हूँ. कश्मीर में खुले आम नहीं रह सकता हूँ. नौकरी के बाद मैं कश्मीर में ही रहना चाहता हूँ लेकिन मैं कहां अपना घर बना सकता हूँ, यह अभी बता नहीं सकता.

प्रश्न- अब आप एक पब्लिक फिगर है. अगर आप जा रहे हैं और एक आम हिन्दू जा रहा है तो आपको क्या अंतर महसूस होता है. क्या नब्बे के दशक का भाईचारा दिखावटी था? इतनी दरारें क्यों आई?

उत्तर - जैसे आप अभी प्यार से बात कर रहें है. अगर मैं आपको चाय में अफीम दे दूँ तो आप 15 मिनट बाद वही रहेंगे. पर जब अफीम का नशा उतर जाएगा तो पता चलेगा की उन 15 मिनटों का अंतर क्या रहा है. यहाँ पर नब्बे प्रतिशत का ब्रेन वाश किया गया. फैलाया गया कि आजादी होने वाली है. आजादी के बाद काफिरों को यहाँ नहीं रहना है. यह बहुत लंबे समय तक चलता रहा. जन्नत के नाम पर आपके दिमाग के साथ खेला गया. लोग मरने के लिए और फिर जन्नत में ऐश करने के लिए सबकुछ करने को तैयार थे. ऐसी सोच बेची गई, खाने की तरह खिलाई गई. पाकिस्तान शांति के नाम पर आजाद हुआ पर आज हम क्या देख रहें हैं. अब आजाद होने के बाद भी अशांति है. बीबीसी और रेडियो ने सुधार के लिए बहुत बड़ा रोल अदा किया. बीबीसी आजादी को ग्लोरीफ़ाई करके आजादी की बात को हर दूसरे दिन टाल देता था. यहाँ पर बिना हिंदुओं के पाकिस्तान बनाने की बातें चलती रही. यह बातें सौ प्रतिशत सत्य है. हिंदुओं को यहाँ पर काफिर कहा जाता रहा है. यह नशा तब तक रहा जब तक सब चीजें सामान्य नहीं हो गई.

प्रश्न- क्या आपको लगता है कि कश्मीर एक राजनतिक मुद्दा है.

उत्तर - देखिये, कश्मीर एक राजनीतिक मुद्दा कभी नहीं रहा है. अगर कश्मीर राजनीतिक मुद्दा होता तो कश्मीरी पंडित उनके साथ क्यों नहीं है? आखिर वो भी तो कश्मीरी है. डोगरा, गुज्जर क्यों नहीं है. यहाँ पर मुस्लिम आबादी होने के कारण मुस्लिम देश के साथ की बात होती है. यह एक धार्मिक समस्या है ना कि राजनीतिक.

प्रश्न - एक भारतवासी के रूप में कश्मीर वासियों का भविष्य क्या है?

उत्तर - कुछ चीजें अभी सही राह पर चल रही है. आज का युवा दूसरी गतिविधियों में व्यस्त हो गया है. आज यहाँ का युवा अपने स्तर पर कुछ करना चाहता है. उसके पास पैसा और मौके होंगे तो वह ज्यादा सकारात्मक कार्य कर पाएंगा. जब आम आदमी अस्थिरता को नकार देगा तो सब कुछ अपने आप ही सही हो जाएगा. अब यहाँ पर राष्ट्रीय खेल हो रहे है. अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव की बातें चल रही है. आज यहाँ के युवा की मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है. अब लोगों को मौके मिले है तो लोग भी उसे भुनाना चाहते हैं. लोग ज्यादा सक्रिय हो गए हैं. अब लोग पचास रुपए में बिकने के बजाए सौ रूपए में अपना काम करना पसंद करेंगे. कार्य के लिहाज से यहाँ बहुत संभावनाएं है. आज जब युवा काम कर रहा है तो वह पत्थरबाजी के लिए नहीं आएगा.

प्रश्न- यह बदली हुई स्थिति क्या दर्शाती है?

उत्तर - पहले जो मीडिया सब बातों का समर्थन करता था, वह अब इसके फायदे गिना रहा है. यह लंबे समय तक स्थिर हो गया तो परिस्थितियां बादल जाएगी. नाउम्मीदी नहीं है क्योंकि साहित्यिक लोग नाउम्मीद हो ही नहीं सकते हैं. अच्छा हो रहा है. बदलाव हो रहे हैं. सरकार भी बड़े बड़े निर्णय ले रही है. पत्थरबाजी में संलिप्त करीब सौ लोगों को सरकारी नौकरी से निकाल दिया गया है. गैर सरकारी गतिविधियों को सोशल मीडिया पर सपोर्ट करने वालों पर कार्यवाही हो रही है. हजारों लोगों की तनख्वाह रोक दी गई है. उन की जांच चल रही है. स्कूलों में राष्ट्रगान अनिवार्य कर दिया गया है. आज स्थिति सुधारने की पूरी कोशिश की जा रही है. आजादी के अमृत महोत्सव में 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम में करीब पच्चीस हजार युवाओं नें भाग लिया. यह सब सिस्टम का हिस्सा बनाया जा रहा है.

प्रश्न - अभी कौन सी किताब पर कार्य कर रहें है.?

उत्तर- अभी एक फिल्म पर काम कर रहा हूँ. एक फिल्म अभी पूरी हुई है. साहित्य अकादमी का एक प्रोजेक्ट है. साहित्यकार कभी खाली तो रहता ही नहीं है.

विमल जी, आपको भविष्यगत यात्रा और आपके अपने कश्मीर की खुशहाली हेतु बहुत शुभकामनाएं.

डॉ. सुलभा कोरे
के.का. मुंबई

जम्मू-कश्मीर और लेह के मुख्य त्योहार

पहाड़ों के त्योहार अपने आप में अलग ही संस्कृति लिए होते हैं. भारत का ताज कहे जाने वाले जम्मू-कश्मीर का प्रत्येक क्षेत्र अलग है क्योंकि जम्मू एक हिंदू बहुल क्षेत्र है जबकि कश्मीर की अधिकांश आबादी मुस्लिम है. जम्मू और कश्मीर में आयोजनों, मेलों और त्योहारों का हिन्दू-मुस्लिम समावेश देखने को मिल जाता है. बर्फ से ढकी ऊंची-ऊंची चोटियां और सदाबहार मौसम व पहाड़ी रंगों की कला और संस्कृति का अलग ही आनंद है. जम्मू और कश्मीर एक ऐसा राज्य है जहां त्योहारों को जीवन जीने का तरीका माना जाता है. जम्मू और कश्मीर के त्योहार न केवल स्थानीय लोगों के जीवन में रंग भरते हैं बल्कि वे भक्ति और पवित्रता के तत्वों के साथ अपने जीवन की भावना को भी बढ़ाते हैं. हम चर्चा करते है जम्मू-कश्मीर और लेह के मुख्य त्योहारों की-

जम्मू एवं कश्मीर के मुख्य त्योहार

लोहड़ी - जम्मू प्रांत में यह बहुप्रतीक्षित त्योहार ठंड के मौसम की परिणति का प्रतीक है और इसे पंजाब, राजस्थान के साथ-साथ जम्मू और कश्मीर में भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है. इस त्योहार के दौरान स्थानीय लोग राज्य के विभिन्न हिस्सों में राज्य में बह रही पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं और अपने व अपने परिवार के लिए मंगल कामना करते हैं. कश्मीर प्रांत में लोहड़ी के त्योहार को विशेष रूप से 'चिन्हा नृत्य' कहा जाता है. इस राज्य में युवा भीड़ रंगीन चट्ठों के साथ 'चजस' तैयार करती है और फिर सड़क पर ड्रम/ढ़ोल की ताल पर नृत्य करती है.

बैसाखी - बैसाखी का त्योहार बैसाख माह में पहले दिन को हिंदू कैलेंडर के अनुसार या अप्रैल के महीने के तेहरवें दिन अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार आयोजित किया जाता है. बैसाखी भी जम्मू और कश्मीर के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है. यह जम्मू क्षेत्र के सिख समुदाय एक लिए विशेष विशेष महत्व रखता है. यह सिख समुदाय के नए साल की शुरुआत का माना जाता है और इसी दिन 'हाड़ी' (रबी) की फसलों की कटाई का शुभ मुहुर्त किया जाता है.

नवरात्रि - नवरात्रि का त्योहार जम्मू और कश्मीर के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है. यह नौ दिनों का त्योहार है जो देवी दुर्गा को समर्पित है. नवरात्रि का अर्थ है "नौ रातें" इस त्योहार के दौरान जम्मू प्रांत में तीर्थयात्रियों और भक्तों की भीड़ होती है. माँ वैष्णो के पावन धाम 'कटरा वैष्णोदेवी' में यह त्योहार पूरे हर्षोलाष के साथ मनाया जाता है. पूरा क्षेत्र बहुत ही बहुआयामी रूप धारण करता है. यह त्योहार आश्विन के महीने में या सितंबर-अक्टूबर के महीने में पड़ता है.

रुट-राड़े : रुट-राड़े एक माह तक मनाये जाने वाला त्योहार है, जो सावन के पहले दिन आरम्भ होता है. 'रुट-राड़े' त्योहार का नाम 'रुट' और 'राड़े' दो शब्दों से मिलकर बना है.'रुट' गेहूँ के आटे का एक पकवान है जो इस त्योहार में विशेष रूप से बनाया जाता है तथा 'राड़े' मटके के मुँह को कहा जाता है. इसमें भगवान शिव की पूजा की जाती है. सावन के प्रथम दिन आठ-दस लड़कियों का समूह किसी एक लड़की के घर में एक बड़े मटके (जिसे डोगरी भाषा में तम्मो राड़ा कहा जाता है) के मुँह को तोड़कर उसे आँगन में गाड़ता है और गाड़े गए 'राड़ों' में उड़द की दाल, मक्की, बाजरा, ज्वार के बीज बोए जाते हैं. एक लड़की के जितने भाई हों उतने छोटे मटके अलग से गाड़े जाते हैं. प्रतिदिन उन 'राड़ों' की पूजा की जाती है, उन बोए गए बीजों को पानी दिया जाता है और उनकी देखभाल की जाती है. ऐसा चार सप्ताह तक किया जाता है. चार सप्ताह समाप्त होने पर 'बड़ा रुट' मनाया जाता है जिसे केवल विवाहित स्त्रियां ही मनाती हैं. 'बड़े रुट' में 'तम्मो राड़े' को नदी के किनारे ले जाया जाता है जहां पूजा की जाती है .

चैत्र चौदश- यह त्योहार आमतौर पर मार्च-अप्रैल के महीने में 'उत्तरी बेहनी' में मनाया जाता है जो जम्मू से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर है. यह त्योहार एक विशेष धार्मिक महत्व रखता है.

इनके अतिरिक्त देश के अन्य भागों की तरह जम्मू एवं कश्मीर में भी दीवाली, ईद, महाशिवरात्रि, रामनवमी, बसंत पंचमी आदि त्योहार धूमधाम से मनाए जाते हैं.

लेह के मुख्य त्योहार

हेमिस महोत्सव- हेमिस लद्दाख का सबसे लोकप्रिय और सबसे बड़ा त्योहार है. हेमिस उत्सव का प्रमुख आकर्षक मुखौटा नृत्य है. जून माह में 'बौद्धविहार हेमिस' का परिसर हेमिस महोत्सव से रंगीन हो उठता है.

दोसमोचे महोत्सव- लेह में फरवरी के दूसरे सप्ताह में दोसमोचे महोत्सव मनाया जाता है. यह लद्दाख के नए समारोहों में से एक है. इस महोत्सव के दौरान हर साल विभिन्न मठों में मुखौटा नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है. इस दौरान धार्मिक प्रतीकों को लकड़ी के खंभों पर पताका सजाकर लेह के बाहर भेजे जाते है.

लोसर महोत्सव- लोसर तिब्बती या लद्दाखी नव वर्ष के रूप में मनाया जाने वाला विशेष त्योहार है जो चंद्र कैलेंडर पर आधारित है. लद्दाख में लोसर का त्योहार दिसंबर और जनवरी के महीने में दो सप्ताह तक चलता है. लोसर त्योहार के दौरान पर्यटक पारंपरिक संगीत और नृत्य का आनंद देते हैं. इस अवसर पर पुराने वर्ष की सभी बुराइयों और वैमनस्यों को समाप्त करने का प्रयत्न किया जाता है और नए साल में पूर्णतया नया जीवन आरंभ करने की कोशिश की जाती है.

माथो नागरंग- मार्च के प्रथमार्ध में मनाए जाने वाला यह त्योहार 'माथो नागरंग' है. इस दौरान पवित्र अनुष्ठान और सांस्कृतिक नृत्य प्रदर्शित किए जाते हैं. चार सौ साल पुराने थांगका या सिल्क से बनाई जाने वाली धार्मिक तिब्बती चित्रकारी से यह त्योहार जुड़ा हुआ है. यह त्योहार 'माथो' मठ में मनाया जाता है.

फियांग और थिक्से- फियांग और थिक्से त्योहार लद्दाख में जुलाई या अगस्त में मनाए जाते हैं. इस त्योहार के दौरान विभिन्न मठों से भिक्षुओं और भगवान और देवी के विभिन्न रूपों को दर्शाया जाता है. इस दौरान अद्भुत मुखौटा नृत्य प्रदर्शन करने के लिए रंगीन जरी के वस्त्र और मुखौटे पहने जाते है जो अपने आप में अद्भुत होते है.

विरेन्द्र पाल
क्षे.का. अमृतसर

जम्मू-कश्मीर के मंदिर

जम्मू बर्फ से ढके पहाड़ों और चमचमाती झीलों से घिरा हुआ भारत का प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटन स्थल है. भारत का यह राज्य जम्मू, कश्मीर और लद्दाख जैसे तीन क्षेत्रों में बंटा हुआ है जो हिमालय और पीर पंजाल पर्वत की शक्तिशाली श्रेणियों से घिरा हुआ है. कश्मीर में घूमने के लिए विभिन्न दर्शनीय स्थानों के कारण, इसे अक्सर भारत का स्विटज़रलैंड भी कहा जाता है. जम्मू भारत के लोकप्रिय पर्यटक स्थलों के साथ-साथ भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल भी है जो अपने प्रमुख धार्मिक स्थलों जैसे अमरनाथ, वैष्णो माता मंदिर एवं अन्य धार्मिक स्थलों के कारण प्रत्येक वर्ष कई लाख तीर्थयात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है. हम चर्चा करते हैं जम्मू के मुख्य मंदिरों की-

श्री माता वैष्णो देवी मंदिर - त्रिकुटा पहाड़ी में कटरा से करीब 15 किमी की दूरी पर स्थित माता वैष्णो देवी का पवित्र गुफा मंदिर है. यहाँ आध्यात्मिकता और वातावरण में जीवंतता है. माता वैष्णो देवी मंदिर जम्मू -कश्मीर के साथ-साथ पूरे भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जहाँ हर साल हजारों तीर्थयात्री मां वैष्णों का आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं. वैष्णो देवी मंदिर में तीर्थयात्रियों को लगभग 13 किमी तक पैदल चलकर छोटी गुफाओं तक पहुँचना होता है. यह 108 शक्तिपीठों में से एक है. वैष्णो देवी, जिसे माता रानी के नाम से भी जाना जाता है, को हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार देवी दुर्गा का अवतार माना गया है. तीर्थयात्री सड़क के किनारे मां वैष्णो देवी के नारे और गीत गाते हुए अपनी यात्रा पूरी करते हैं. तीर्थ यात्रा के साथ यहाँ पर प्रकृति प्रेम भी देखने को मिल जाता है.

रणबीरेश्वर मंदिर, जम्मू - रणबीरेश्वर मंदिर जम्मू और कश्मीर सिविल सचिवालय के सामने स्थित है. भगवान शिव को समर्पित रणबीरेश्वर मंदिर जम्मू के सबसे लोकप्रिय व महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है. यह भगवान शिव के श्रद्धालुओं के लिए प्रमुख आस्था केंद्र बना हुआ है. माना जाता है कि रणबीरेश्वर मंदिर की स्थापना यहाँ के तत्कालीन राजा रणबीर सिंह द्वारा की गई थी जो भगवान शिव के बहुत बड़े भक्त थे. रणबीरेश्वर मंदिर में मंदिर के मुख्य देवता शंकर जी की साढ़े सात फीट ऊंचे लिंगम की स्थापना की गई है. इस मंदिर की एक और प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी तीन दीवारें गणेश और कार्तिकेय के चित्रों के साथ सोने की बनी हुई हैं. इसके अलावा यहाँ की एक और प्रसिद्ध मान्यता यह है कि मंदिर में स्थापित नन्दी बैल के कान में बोलकर मन्नत मांगने से सभी इच्छाएं पूरी होती हैं.

श्री अमरनाथ गुफा - अमरनाथ गुफा भगवान शिव के उपासकों के लिए भारत में सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है. यह जम्मू-कश्मीर का सबसे पुराना तीर्थ स्थल माना जाता है. अमरनाथ गुफा प्राकृतिक रूप से बर्फ से निर्मित शिवलिंग के लिए प्रसिद्ध है जो हर साल लाखों तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है. इसे श्री अमरनाथ यात्रा के नाम से जाना जाता है. अमरनाथ गुफा अब तक के सबसे पवित्र हिंदू तीर्थस्थलों में से एक है. किंवदंतियों के अनुसार अमरनाथ की गुफा से जुड़ी एक पौराणिक कहानी भी है. माना जाता है ये वही गुफा है जहां भगवान शिव जी नें देवी पार्वती जी को अमरता का रहस्य बताया था. इसके अलावा यहाँ गुफा में भगवान गणेश और देवी पार्वती जी की बर्फ की मूर्तियाँ भी स्थापित है.

पीर खो गुफा मंदिर - तवी नदी के तट पर स्थित पीर खो गुफा मंदिर जम्मू के सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय धार्मिक स्थलों में शुमार है. पीर खो गुफा मंदिर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है जिसे जामवंत गुफा भी कहा जाता है. महाकाव्य रामायण के भालू यानि भगवान जामवंत जी ने इस मंदिर में ध्यान लगाया था. यही

कारण है कि इसे जामवंत गुफा के नाम से भी जाना जाता है. पीर खो गुफा मंदिर चट्टानों और बबूल के पेड़ों से घिरी हुई है. पीर खो गुफा मंदिर जम्मू के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है जहाँ शिवरात्रि के दौरान विशेष पूजा और शिव जी के अभिषेक का आयोजन किया जाता है. इस दौरान इस पवित्र स्थल का बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों और पर्यटकों द्वारा भ्रमण किया जाता है.

अवन्तिपुर मंदिर - उत्कृष्ट कलाकृतियों के चमत्कार को दर्शाता अवंतिपुर मंदिर श्रीनगर के दक्षिण-पूर्व में स्थित है. सूर्य देव को समर्पित इस मंदिर का निर्माण राजा अवंतिवर्मन द्वारा 855 ई. से 883 ई. के बीच किया गया था. माना जाता है कि राजा अवंतिवर्मन सूर्यदेव के बहुत बड़े भक्त थे. यही कारण था कि उन्होंने इस मंदिर का निर्माण करवाया था. दिलचस्प बात यह है कि अवंतिपुर मंदिर में सूर्यदेव के अलावा देवी रागिनी देवी सहित कुछ अन्य देवताओं के मंदिर भी स्थापित हैं. मंदिर अपनी असाधारण स्तर की नक्काशी के लिए जाना जाता है. अवंतिपुर मंदिर श्रद्धालुओं के साथ-साथ इतिहास और कला प्रेमियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है और बड़ी संख्या में इस प्राचीन मंदिर का भ्रमण किया जाता है.

रघुनाथ मंदिर - जम्मू शहर के केंद्र में स्थित रघुनाथ मंदिर जम्मू के सबसे प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक है जो भगवान विष्णु जी के आठवें अवतार भगवान राम को समर्पित है. रघुनाथ मंदिर जम्मू-कश्मीर में राम भक्तों के लिए प्रमुख आस्था केंद्र है जो हर साल लाखों श्रद्धालुओं के लिए भगवान राम के दर्शनाथ खुला रहता है. इस मंदिर से जुड़ी एक दिलचस्प बात यह भी है कि इस विशाल मंदिर को पूरा होने में 25 साल लग गये थे जिसका निर्माण 1835 ई. से शुरू होकर 1860 ई. में पूर्ण हुआ था. रघुनाथ मंदिर परिसर में भगवान राम के मंदिर सहित सात अन्य मंदिर हैं जिसमें अलग-अलग देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं. मंदिर के प्रवेश द्वार पर राजा रणबीर सिंह की एक मूर्ति भी स्थापित की गई है.

पंचबक्तर मंदिर - पंचबक्तर मंदिर भगवान शिव को समर्पित मंदिर है जो जम्मू शहर का सबसे प्राचीन शिवालय भी है. यहाँ पुरानी कथाओं और प्राचीन इतिहास का संग्रह है. पंचबक्तर मंदिर जम्मू और कश्मीर के स्थानीय निवासियों के लिए एक प्रमुख आस्था केंद्र माना जाता है. यह मंदिर प्राचीन में श्री अमरनाथ यात्रा से भी जुड़ा था जो अमरनाथजी की पवित्र गुफा तीर्थ के दर्शन के लिए जा रहे साधुओं के लिए एक धर्मशाला या शिविर के रूप में कार्य करता था.

महामाया मंदिर - राजसी बाहु किले के पीछे स्थित महामाया मंदिर जम्मू के प्रसिद्ध धार्मिक और पर्यटक स्थलों में से एक है. महामाया मंदिर का निर्माण अन्य मंदिरों की तरह किसी देवी-देवता को समर्पित नही है, बल्कि इस मंदिर का निर्माण डोगरा समुदाय की एक स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी महामाया के सम्मान के लिए किया गया था, जिन्होंने अपने क्षेत्र को विदेशी आक्रमणकारियों से बचाने के लिए लगभग 14 शताब्दी पहले अपना बलिदान दिया था और इसी वजह से यह मंदिर हर साल श्रद्धालुओं और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है. यहाँ पर महान नायिका महामाया के बलिदान के सम्मान में उन्हें श्रद्धांजलि भी दी जाती है.

दीपक भट्ट
विजयपुर शाखा, जम्मू

स्वर्ग सा सुंदर श्रीनगर

श्रीनगर की एक झलक - श्रीनगर दो शब्दों के मेल से बना है 'श्री+नगर'. 'श्री' अर्थात् धन और 'नगर' अर्थात् शहर यानि धन सम्पत्ति से सम्पन्न राज्य. कश्मीर का मुख्य दर्शनीय स्थल श्रीनगर किसी परिचय का मोहताज नहीं है. श्रीनगर जम्मू और कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी है. श्रीनगर बेहद ही खूबसूरत शहरों में से एक है जो अपने में खूबसूरत झरनों, वादियों, पहाड़ियों और उद्यानों को समेटे हुए है. मुगलों द्वारा श्रीनगर को 'पृथ्वी का स्वर्ग' का दर्जा दिया गया. मुगलों ने अपने शासन काल में यहां पर उद्यान और खूबसूरत बाग़-बगीचों का निर्माण करवाया. बेहद खूबसूरत पहाड़, बर्फ की चोटियाँ, सुंदर झीलें और सुहावना मौसम श्रीनगर की पहचान है. यहाँ का अद्भुत नजारा हमें मनमोहित करता है.

श्रीनगर का इतिहास - कश्मीर की मनमोहक और सुंदर वादियों के बीच श्रीनगर झेलम नदी के तट के दोनों तरफ बसा हुआ है. यह समुद्र तल से 1730 मी. की ऊँचाई पर है. अपनी ऐतिहासिकता, धार्मिकता, दर्शनीयता और अनोखी वास्तुकला से सम्पन्न यह राज्य अपने भीतर कई विविधताओं को समेटे हुए है. श्रीनगर के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल-

1. **डल झील** - श्रीनगर की सुरमयी कहलानी वाली यह झील हिमालय की तलहटी में स्थित है जो लगभग 26 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में फैली हुई है. साथ ही यह झील कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झीलों में से एक है. यहाँ का मौसम सुहावना और ठंडा रहता है. यह झील अपने आप में श्रीनगर के इतिहास को समाहित किए हुए है. पर्यटन के लिहाज से यह झील श्रीनगर के मुख्य स्थलों में से एक है. यहाँ लकड़ी की नाव जिसे 'शिकारा' कहा जाता है, बहुत मशहूर है. इसमें बैठकर आप झील का आनंद उठा सकते हैं. ये शिकारा हाउस बोट दिखने में ही इतनी खूबसूरत होती है कि आप इन्हें देखते ही रह जायेंगे. इस झील को चार भागों में बाँटा गया है जिसमें लोकुट डल, गागरीवाल डल, बोद डल और नागिन डल प्रमुख हैं.

2. **चश्म-ए-शाही बगीचा** - चश्म-ए-शाही बगीचा श्रीनगर का बेहद ही सुंदर गार्डन है इसे रॉयल स्प्रिंग के नाम से भी जाना जाता है. इसका निर्माण 1962 ई. में कराया गया था. यह श्रीनगर का सबसे छोटा माने जाने वाला गार्डन है लेकिन छोटा होने के बावजूद इसकी लंबाई 108 मी. और चौड़ाई 38 मी. है. यह नेहरु मेमोरियल पार्क के पास स्थित है. यहां से डल झील के साथ-साथ हिमालय की वादियों के सुंदर-सुंदर नजारें देखे जा सकते हैं. इसके अलावा आपको इस बगीचे में फूलों की विभिन्न प्रजातियाँ देखने को मिल जाएगी.

3. **शालीमार बाग़** - 31 एकड़ जमीन में फैला शालीमार बाग़ श्रीनगर के बेहतरीन मुग़ल बगीचों में से एक है. यह बगीचा श्रीनगर से लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर डल झील से जाने वाले रास्ते में है. इस बाग़ का निर्माण 1619 ई. में मुग़ल बादशाह ने अपनी बेगम नूर जहाँ के लिए करवाया था. इस बाग़ के चारों तरफ चिनार के पेड़ लगाए गए हैं जिससे इस बाग़ की खूबसूरती में चार चाँद लगते हैं. इस बाग़ में शाम के समय तेल के दीये

जलाए जाते है जिनकी रोशनी में इस जगह की सुन्दरता में चार चाँद लग जाते हैं. यहाँ का पानी का झरना भी इस रोशनी में बेहद खूबसूरत लगता है.

4. **वुलर झील** - वुलर झील कश्मीर के बांदीपोरा जिले में स्थित है तथा इसके पास ही नाल सरोवर पक्षी अभयारण्य है. वुलर झील एशिया की सबसे मीठे पानी की झील है और जिसका पानी बेहद ताजा व बेहतरीन होता है. वुलर झील का आकार मौसम के हिसाब से 30 वर्ग कि.मी. से 260 वर्ग कि.मी. के बीच घटता-बढ़ता रहता है. यहाँ मछलियों और पक्षियों की कई प्रजातियाँ देखने को मिलेंगी जिनमें से गुलाबी कंटिया, मास्किटोफिश, नील रॉक कबूतर, ओरियल सुनहरा आदि प्रमुख है.

5. **जामिया मस्जिद** - जामिया मस्जिद सबसे प्रसिद्ध और मशहूर मस्जिदों में से एक है. यह मस्जिद श्रीनगर के नौहट्टा क्षेत्र में स्थित है जो धार्मिक तौर पर काफी मशहूर है. यह मस्जिद 1394 ईस्वी में सुल्तान सिकन्दर द्वारा बनवाई गई थी जो मीर मोहम्मद हमदानी के समय 1402 ईस्वी में बनकर पूरी तरह तैयार हुई. इंडो सारासेनिक शैली से प्रभावित और फ़ारसी शैली में बनी यह मस्जिद बेहद ही सुंदर तरीके से बनाई गई है. चार बड़े बुर्ज के साथ यह चतुष्कोणीय मस्जिद है जो लगभग 600 साल पुरानी मानी जाती है. जिस कारण यहाँ पर्यटकों की भारी संख्या में भीड़ रहती है.

6. **परी महल** - यह ऐतिहासिक महल डल झील के पास चश्म-ए-शाही बाग़ के ऊपरी हिस्से में बना हुआ है. इस महल का निर्माण मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के सबसे बड़े बेटे दारा शिकोह ने कराया था. इसे 'फेरी पैलेस' के नाम से भी जाना जाता है. दारा शिकोह ने अपने गुरु मुल्ला शाह बदाख़्शी को सम्मान देने हेतु यहाँ एक बौद्ध मठ का निर्माण भी कराया था जहाँ ज्योतिष और खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया जाता था. तत्कालीन समय में यह ज्ञान का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता था.

7. **दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान** - हसीन वादियों में पशु-पक्षियों को देखने के लिये श्रीनगर का दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान एक बेहतर विकल्प है. यह श्रीनगर से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है जो 141 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है. इस राष्ट्रीय उद्यान में तेंदुआ, हिम तेंदुआ, काला भालू, कस्तूरी मृग, सीरो और लाल लोमड़ी आदि देखने को मिल जाती है.

8. **अनंतनाग** - अनंतनाग जिला बर्फ के शौकीन लोगों के लिए बेहद ही आकर्षण का केंद्र है. यह जम्मू और कश्मीर का व्यापारिक केंद्र माना जाता है. कश्मीर की घाटियों से घिरे इस क्षेत्र में अनेक बाजार हैं. यह श्रीनगर से 62 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. इस सुंदर स्थान के रास्ते में 7 धार्मिक स्थल भी आते हैं. जिनमें से हज़रत बाबा रेशी दरगाह, शालिग्राम मंदिर, नीला नाग मंदिर और गोस्वामी कुंड आश्रम आदि शामिल है. इस स्थान के बारे में ऐसा कहा जाता है कि भगवान शिव ने अमरनाथ की गुफा की ओर जाते हुए अनेक नागों का त्याग किया और वह स्थान अनंतनाग के नाम से जाना जाने लगा. अनंतनाग से करीब 35 किलोमीटर दूर 'सिंथन टॉप हिल्स' भी प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है. यहाँ पर ट्रेकिंग, स्कीइंग, आदि का आनंद भी उठाया जा सकता है.

9. **शंकराचार्य मंदिर** - शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है. यह मंदिर लगभग 200 साल पुराना है. श्रीनगर की डल झील के पास स्थित यह मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए जाना जाता है. इस कारण यह यहाँ आने वाले सभी पर्यटकों को आकर्षित करता है. शंकराचार्य मंदिर समुद्र तल से लगभग 1100 मी. की ऊँचाई पर स्थित है और इस मंदिर का निर्माण राजा गोपादात्य ने 371 ई. में कराया था और तब से इस मंदिर को तख़्त-ए-सुलेमान के नाम से भी जाना जाता है. भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर यात्रियों के बीच बहुत प्रसिद्ध है. साथ ही ऊँचाई पर होने के कारण यहाँ से आपको डल झील और हिमालय के सुन्दर नजारे भी देखने को मिलेंगे.

10. **सलीम अली राष्ट्रीय उद्यान** - कश्मीर का सलीम अली राष्ट्रीय उद्यान बेहद ही सुंदर और पशु-पक्षियों से सम्पन्न राष्ट्रीय उद्यान है. साथ ही इस राष्ट्रीय उद्यान को 'सिटी फारेस्ट नेशनल पार्क' के नाम से भी जाना जाता है. यह राष्ट्रीय उद्यान लगभग 9 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है. यहाँ पिन्टल्स, किंगफिशर, कोट्स, लोमड़ी, सियार, तेंदुआ आदि को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है.

11. **नागिन झील** - श्रीनगर की यह खूबसूरत झील एक पुल द्वारा डल झील से अलग होती है. इस झील को 'ज्वैल इन द रिंग' के नाम से भी जाना जाता है. इस झील से शिकारा और डल झील के सुंदर और बेहतरीन नजारे देखने को मिलते हैं. यहाँ आप वाटर गेम्स का आनंद भी उठा सकते हैं. साथ ही यहाँ फाइबर ग्लास बॉट का आनंद भी लिया जा सकता है.

12. **गुलमर्ग** - श्रीनगर से करीब 60 किलोमीटर दूर गुलमर्ग है जो बर्फ से ढका हुआ रहता है. यहाँ श्रीनगर से नारबल होते हुए पहुंचा जा सकता है. अत्यंत ठंडा होने के कारण बर्फबारी का आनंद उठाया जा सकता है.

श्रीनगर घूमने का सबसे सही समय - वैसे तो श्रीनगर को हर मौसम में घूमने का अपना ही अलग आनंद है क्योंकि हर मौसम में इस शहर की खूबसूरती अलग ही होती है. लेकिन मार्च से अक्तूबर महीने के बीच का समय यहाँ के लिहाज से बेहतर है. प्राकृतिक नजारों के लिहाज से मानसून का समय भी इस जगह को घूमने का अच्छा समय है.

वसीम अकबर लोन
श्रीनगर शाखा

जम्मू-कश्मीर की प्रसिद्ध हस्तियां

जम्मू-कश्मीर भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है. वर्तमान जम्मू और कश्मीर को 05 अगस्त 2019 को विभाजित कर जम्मू और कश्मीर एवं लद्दाख नामक दो केंद्र शासित प्रदेश के रूप में स्थापित किया गया. जम्मू और कश्मीर हिमालय पर्वत श्रृंखला के सबसे ऊँचे हिस्सों में स्थित है और इसे अपने प्राकृतिक सौंदर्य एवं संसाधनों के लिए जाना जाता है. साथ ही जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख का इलाका अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए जाना जाता है. जम्मू और कश्मीर में कई विख्यात हस्तियां हुई जिन्होंने पुरातन काल से लेकर आज तक अपनी कृतियों से देश का नाम रोशन किया है.

महर्षि कश्यप : कश्मीर को ऋषि कश्यप के नाम पर बसाया गया था और कश्मीर के पहले राजा भी महर्षि कश्यप ही थे. उन्होंने अपने सपनों का कश्मीर बसाया था. ऋषि कश्यप ब्रह्माजी के मानस-पुत्र मरीची के विद्वान पुत्र थे. इनकी माता 'कला' कर्दम ऋषि की पुत्री और कपिल देव की बहन थी. मान्यता अनुसार इन्हें अनिष्टनेमी के नाम से भी जाना जाता है. जम्मू-कश्मीर ने अपनी भूमि पर कई महत्वपूर्ण हस्तियों को जन्म दिया जिन्होंने जम्मू और कश्मीर के साथ-साथ पूरे देश का मान-सम्मान बढ़ाया है.

कल्हण : कल्हण कश्मीर के महाराज हर्षदेव के महामात्य चंपक के पुत्र और संगीतमर्मज्ञ कनक के अग्रज थे. मंखक ने श्रीकंठचरित में कल्याण नाम के इसी कवि की प्रौढ़ता को सराहा है वास्तव में कल्हण एक विलक्षण महाकवि थे. कहा जाता है कि उनकी 'सरस्वती' रागद्वेष से अलेप रहकर 'भूतार्थचित्रण' के साथ ही साथ 'रम्यनिर्माण' में भी निपुण थी. उनकी रचना राजतरंगणी सभी पाठकों को अभी भी काफी आकर्षित करती है.

नागसेन : नागसेन सर्वस्तिवादी बौद्ध भिक्षु थे जिनका जीवनकाल 150 ई. पूर्व माना जाता है. वे कश्मीर के निवासी थे. उनके द्वारा रचित पालि ग्रन्थ मिलिन्दपन्हो में भारतीय-यूनानी शासक मिलिन्द द्वारा बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में उनसे पूछे गये प्रश्नों का वर्णन है. इस ग्रन्थ का संस्कृत रूप नागसेनभिक्षुसूत्र है.

वटेश्वर : वटेश्वर का जन्म दसवीं शताब्दी में माना जाता है. वह एक कश्मीरी गणितज्ञ थे जिन्होंने 24 वर्ष की उम्र में वटेश्वर-सिद्धान्त नामक ग्रन्थ की रचना की और कई त्रिकोणमितीय सर्वसमिकाएँ प्रस्तुत की. वटेश्वर-सिद्धान्त, खगोल शास्त्र और व्यावहारिक गणित से सम्बन्धित ग्रन्थ है जिसकी रचना सन् 904 में हुई मानी जाती है. उनके कई गणित के सिद्धांत बहुत ही प्रसिद्ध हुए. उन्होंने अपने गणितीय गणना से सबको चौका दिया था.

प्रसिद्ध कवयित्री रुपा भवानी : कश्मीर में काव्य परंपरा अति प्राचीन है. यहां कई भाषाओं में काव्य कहा गया है पर मुख्य तौर पर संस्कृत, फारसी, कश्मीरी, अंग्रेजी, उर्दू और हिंदी में कश्मीर के कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान देकर कश्मीर के काव्य संसार में वृद्धि की है. भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है. कश्मीर की कश्मीरी रहस्यवादी कवयित्री रूपा भवानी (सन् 1625-1719) भी इस युग से प्रभावित होकर कश्मीरी के साथ-साथ हिंदी में भी भक्तिपूर्ण कविताएं लिखने लगीं, उनकी अरबी, फारसी, संस्कृत और हिंदी में अच्छी पकड़ थी.

महाराज हरि सिंह : महाराज हरि सिंह का जन्म 23 सितंबर 1895 में जम्मू मे हुआ था. वह जम्मू और कश्मीर रियासत के अंतिम महाराज थे. इन्हें जम्मू-कश्मीर की राजगद्दी अपने चाचा, महाराज प्रताप सिंह से विरासत में मिली थी. हरि सिंह, डोगरा शासन के अन्तिम राजा थे. 15 अगस्त 1947 में आजादी के पश्चात जम्मू-कश्मीर भारत के एक राज्य के रुप में कायम हुआ. उनका निधन 26 अप्रैल 1961 को मुंबई में हुआ था.

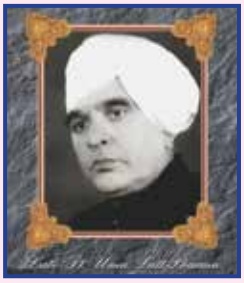

पंडित उमादत्त शर्मा : पंडित उमादत्त शर्मा जम्मू और कश्मीर के एक प्रख्यात गायक थे. उनका जन्म अप्रैल 1900 में कश्मीर के ब्राह्मण परिवार में हुआ था. इनके पिताजी का नाम पंडित संतराम था जो कश्मीर के राजा प्रताप सिंह के पारिवारिक मंदिर में पूजा-पाठ का काम करते थे. वह बचपन से ही संगीत में रुचि रखते थे. उनके पिताजी जब भी महाराज के दरबार में जाते थे तब वह भी साथ में अवश्य जाते थे. पंडित उमादत्त शर्मा गाने के साथ-साथ तबला तथा पखावज में महारथ रखते थे. इसके लिए उन्होंने अपने गुरु सरदार हरनाम सिंह जी से शिक्षा प्राप्त की था.

पंडित प्रेमनाथ डोगरा : प्रेमनाथ डोगरा का जन्म 23 अक्तूबर, 1894 को समैलपुर गांव में हुआ. समैलपुर गांव जम्मू नगर से 22 किमी. दूर जम्मू-पठानकोट मार्ग से उत्तर में एक प्रसिद्ध गांव है. उनके पिताजी का नाम पं. अनन्त राय था. जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह के समय पं. अनंत राय रणवीर गवर्नमेंट प्रेस के अधीक्षक रहे और उसके पश्चात लाहौर में कश्मीर प्रॉपर्टी के अधीक्षक रहे थे. पंडित जी तब राजा ध्यान सिंह की लाहौर की हवेली में रहते थे. वहीं पं. प्रेमनाथ का बचपन बीता और शिक्षा दीक्षा भी सम्पन्न हुई.

पं. प्रेमनाथ डोगरा के नेतृत्व में प्रजा परिषद् का गठन हुआ था और एक देश में 'एक प्रधान, एक निशान और एक विधान का आंदोलन' छिड़ गया था. सन् 1949 में उन्हें गिरफ्तार किया गया था. उन्हें मुक्त कराने के लिए आन्दोलन हुआ. उस समय नारा था "जेल के दरवाजे खोल दो, पंडित जी को छोड़ दो." इस आंदोलन में पंडित जी तीन बार जेल गए और काफी दिनों तक जेल में रहे. इन्हे जम्मू का गांधी भी कहा जाता है.

पंडित शिव कुमार शर्मा : पंडित शिवकुमार शर्मा एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय गायक, संगीतकार और संतूर वादक थे. संतूर एक कश्मीरी लोक वाद्य यंत्र होता है. इनका जन्म जम्मू में प्रसिद्ध गायक पंडित उमा दत्त शर्मा के घर 13 जनवरी 1938 को हुआ था. सन् 1999 में रीडिफ.कॉम को दिये एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि इनके पिता ने इन्हें तबला और गायन की शिक्षा देनी तब से आरंभ कर दी थी, जब ये मात्र पाँच वर्ष के थे. इनके पिता ने संतूर वाद्य पर अत्यधिक शोध किया और यह दृढ़ निश्चय किया कि शिवकुमार संतूरवादक ही बनेंगे. उन्होंने संतूर बजाने की शिक्षा तब से प्रारंभ कर दी थी जब उनकी उम्र मात्र 13 वर्ष की थी और आगे चलकर इनके पिता का स्वप्न पूरा हुआ. पंडित शिव कुमार शर्मा ने अपना पहला कार्यक्रम मुंबई में 1955 में किया था.

शेख अब्दुल्ला : शेख अब्दुल्ला का जन्म 5 दिसंबर, 1905 को श्रीनगर के पास स्थित सौरा में हुआ था. उनका परिवार व्यापार से जुड़ा था. उनकी पढ़ाई लाहौर और अलीगढ़ में हुई थी. अलीगढ़ से वर्ष 1930 में विज्ञान में मास्टर्स की डिग्री हासिल करने के बाद वे श्रीनगर वापस लौट आए. वह जम्मू और कश्मीर के 02 बार मुख्यमंत्री बने थे.

फारुक अब्दुल्ला : फारूक अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्य मंत्री हैं तथा वह कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला के पुत्र

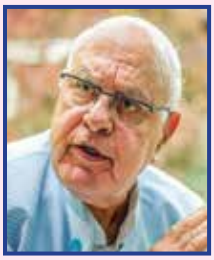

है. फारुक अब्दुल्ला 03 बार जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री रहे हैं. प्रथम बार सन् 1982 से 1984 तक दूसरी बार सन् 1986 से 1990 तक तथा तीसरी बार सन् 1996 से 2002 तक. फारुक अब्दुल्ला के पुत्र उमर अब्दुल्ला भी जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री रहे हैं. वह कश्मीर के एक महत्वपूर्ण नेता है तथा नैशनल कॉन्फ्रेंस पार्टी क अध्यक्ष भी रहे हैं.

मुफ्ती मोहम्मद सईद : मुफ़्ती मोहम्मद सईद का जन्म 12 जनवरी 1936 ई. में हुआ था. वह जम्मू और कश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री थे. वह भारत के गृह मंत्री भी रहे. इस पद पर आसीन होने वाले वह पहले मुस्लिम भारतीय थे. उनका निधन 07 जनवरी 2016 को दिल्ली में हुआ था. वह जम्मू और कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष थे. उनकी पुत्री महबूबा मुफ्ती अभी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष है तथा पिताजी के मृत्यु के पश्चात वह जम्मू और कश्मीर की मुख्यमंत्री भी रही हैं.

कैप्टन तुषार महाजन : कैप्टन तुषार महाजन का नाम भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगा. जम्मू और कश्मीर के ऊधमनगर के कैप्टन तुषार का एक ही सपना था कि वह सेना में भर्ती होकर भारत मां की सेवा करें. उनका सपना पूरा भी हुआ. परंतु वह भारत मां की सेवा में ही 09 पैरा कमांडो के एक ऑपरेशन में श्रीनगर से सटे पंपोर कस्बे में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में शहीद हो गए. वह अपने जज्बे एवं देशभक्ति के साथ जीवन के अंतिम क्षणों तक आतंकवादियों से लड़ते रहे तथा इस मुठभेड़ में कई आतंकवादियों को मार गिराया. पूरा देश कैप्टन तुषार महाजन की इस शहादत पर गौरवान्वित है.

मोतीलाल केमु : मोतीलाल केमु कश्मीरी भाषा के विख्यात साहित्यकार हैं. इनके द्वारा रचित एक नाटक त्रुचे के लिये उन्हें सन् 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. वह जम्मू और कश्मीर में साहित्य जगत की सेवा के साथ-साथ समाजसेवा में भी लीन रहते थे. उन्हें उनकी असाधारण प्रतिभा के लिए कला साहित्य हेतु पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया.

कर्ण सिंह : कर्ण सिंह एक विख्यात भारतीय राजनेता, लेखक और कूटनीतिज्ञ हैं. जम्मू और कश्मीर के महाराजा हरि सिंह और महारानी तारा देवी के प्रत्यक्ष

उत्तराधिकारी के रूप में जन्मे डॉ. कर्ण सिंह ने अठारह वर्ष की ही उम्र में राजनीतिक जीवन में प्रवेश कर लिया था और वर्ष 1949 में प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू की सलाह पर उनके पिता ने उन्हें राजप्रतिनिधि (रीजेंट) नियुक्त कर दिया. इसके पश्चात अगले अठारह वर्षों के दौरान वे राजप्रतिनिधि, निर्वाचित सदर-ए-रियासत, भारत सरकार में विभिन्न मंत्री पदों पर रहे और अन्ततः राज्यपाल के पद पर रहकर देश सेवा की.

अनुपम खेर : अनुपम खेर हिन्दी फिल्मों के एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं. हालांकि अनुपम खेर का जन्म 07 मार्च 1955 को शिमला में हुआ था परंतु इनके पिता पुष्कर नाथ एक कश्मीरी पंडित थे. वह पेशे से क्लर्क थे. अनुपम खेर ने शिमला में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) से स्नातक पूरी की. आज भी वह कश्मीर से जुड़े रहकर वहां के कश्मीरी पंडितों के पलायन तथा उनकी समस्याओं को दूर करने की दिशा में लगातार प्रयासरत रहते हैं.

जम्मू और कश्मीर एवं लद्दाख का पूरा परिक्षेत्र कई गण-मान्य प्रख्यात हस्तियों से परिपूर्ण हैं. देश के सामाजिक तथा संस्कृति के क्षेत्र में जम्मू और कश्मीर काफी समृद्ध रहा है. डोगरी भाषा के माध्यम से वहां साहित्य को प्रश्रय मिला तथा राष्ट्रीय स्तर पर काफी ख्याती भी मिली. आज का जम्मू और कश्मीर हालांकि एक केंद्र शासित प्रदेश के रुप में विद्यमान है तथा लद्दाख का प्रक्षेत्र अलग केंद्र शासित प्रदेश के रुप में स्थापित है. जम्मू और कश्मीर में विभिन्न भाषाओं की फिल्मों की शूटिंग हुई है. यहाँ अनगिनत कलाकार, साहित्यकार, राजनीतिज्ञों आदि ने देश की सेवा की है तथा राष्ट्रीय एवं अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुए हैं. उन्होंने विश्व स्तर पर भारत के मान एवं प्रतिष्ठा को बढ़ाया है.

कौशल किशोर शुक्ला
क्षे.का. पटना

समोवर

समोवर, जिसका शाब्दिक अर्थ है स्व बनाने वाला, एक पारंपरिक कश्मीरी केतली है जिसका उपयोग कश्मीरी नमकीन चाय (दोपहर की चाय) और कहवा को उबालने और परोसने के लिए किया जाता है. कश्मीरी समोवर उत्कीर्ण सुलेख रूपांकनों के साथ तांबे से बने होते हैं जो घाटी के सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं. वास्तव में, कश्मीर में समोवर के दो प्रकार होते हैं; तांबा और पीतल. कंधकारी समोवर तांबे से बने होते हैं और सादे समोवर पीतल से बने होते हैं. पहले वाले का उपयोग कश्मीरी मुसलमान करते हैं और बाद वाले का उपयोग कश्मीरी पंडित करते हैं. हालांकि, दोनों के स्टाइलिश हैंडल पीतल से बनाए गए हैं

समोवर के अंदर एक आग का पात्र होता है जिसमें चारकोल और जीवित कोयले रखे जाते हैं. आग कंटेनर के चारों ओर पानी उबालने के लिए जगह है. चाय बनाने के लिए हरी चाय की पत्ती, नमक, इलायची और दालचीनी को पानी में डाल दिया जाता है. समोवर पुरानी कश्मीरी कला और संस्कृति के बचे हुए कुछ प्रतीकों में से एक है. यह अभी भी लगभग सभी घरों, चाय की दुकानों और सभी मौसमों में पाया जाता है. यह पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण है जो इसे कश्मीर की स्मारिका के रूप में मानते हैं और इसे घर वापस ले जाना पसंद करते हैं. वे इसे ड्राइंग रूम में एक सजावट, एक कीमती संपत्ति और कश्मीरी कला और संस्कृति के प्रतीक के रूप में रखते हैं.

कोयले से गर्म इस चाय की केतली में चाय परोसने की पारंपरिक विरासत की उत्पत्ति अफगानिस्तान, रूस और ईरान से हुई है. कोई भी कश्मीरी समारोह- सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक-राजसी समोवर की उपस्थिति के बिना अधूरा है. कश्मीर मूल का उद्देश्य अपनी समृद्ध संस्कृति को संरक्षित करके इस सदियों पुरानी परंपरा को बनाए रखना है.

वास्तव में, यह हमारी खूबसूरत घाटी का एक गहना है जिस पर हमें गर्व है. यह हमारे पर्यटन उद्योग का ब्रांड एंबेसेडर भी है. विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के लिए उत्कृष्ट रूप से तैयार किया गया समोवर पेश किया जाता है. समय के साथ, समोवर ने अपनी एक अनूठी कश्मीरी पहचान हासिल कर ली है और यह घाटी में लोगों के दैनिक अस्तित्व का हिस्सा बन गया है.

सोनम सैनी
क्षे. का. अमृतसर

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोग

गर फिरदौस बर-रु-ए जमीं अस्त.
हमीं असतो हमीं असतो हमीं अस्त..

अमीर खुसरो की रचना की ये लाइनें जिनका अर्थ है "यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वो यहीं है यहीं है और यहीं है" कश्मीर जाने वाले हर पर्यटक के मन से कश्मीर की नैसर्गिक सुंदरता देखने के बाद बस यही शब्द निकलते हैं. मुझे प्रथम और अब तक अंतिम बार कश्मीर जाने का सौभाग्य 15 अगस्त 2015 में मिला जब मैंने अपने तीन अन्य साथियों के साथ गुलमर्ग, सोनमर्ग जोज़िला टाइगर हिल द्रास टोलोलिंग, कारगिल और लेह लद्दाख का सफर मोटर बाइक से किया. कश्मीर और लेह के लोगों के बारे मे एक सामान्य भारतीय की धारणा श्रीनगर, डाउन टाउन या लाल चौक से आने वाली और मीडिया मे प्रसारित होने वाली खबरों से ही बनती है और इसका छिटपुट असर जम्मू-कश्मीर और लेह के लोगो के प्रति अन्य लोगो के व्यवहार पर पड़ता है. जम्मू-कश्मीर और लेह के लोग कैसे हैं और उनकी मानसिकता कैसी है? इसका ठीक ठीक अंदाजा उस पर्यटक से पूछकर आसानी से लगाया जा सकता है जिसने कश्मीर और लद्दाख मे कुछ समय गुजारा है या जो गैर कश्मीरी नागरिक कश्मीर में व्यापार या नौकरी के सिलसिले में कश्मीर मे रह रहे हों उनसे मिलकर उनसे जानकारी हासिल कर के.

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत सरकार के दो महत्वपूर्ण केंद्रशासित प्रदेश हैं. जम्मू-कश्मीर, जम्मू डिविजन और कश्मीर डिविजन मे बंटा हुआ है जबकि लेह का अपना डिवीजन है जिसमें कारगिल लद्दाख और लेह शामिल हैं. एक तरफ जहाँ जम्मू मंदिरों और सुंदर बागीचों का क्षेत्र है वहीं कश्मीर सुंदर घाटी, झीलों, ऊंचे रस्तों के लिए प्रसिद्ध है. प्रसिद्ध माँ वैष्णो देवी मंदिर और अमरनाथ गुफा भी धार्मिक महत्व से इस क्षेत्र के प्रमुख तीर्थ हैं. वहीं लेह लद्दाख अपनी नैसर्गिग सुंदरता, प्राचीन मठों तथा तिब्बती बौद्ध विहारों के लिए प्रसिद्ध है. लेह लद्दाख का आकर्षण युवा पीढ़ी में यहाँ की साहसिक पर्यटन परिस्थितियों, रिवर राफ्टिंग, संकीर्ण तथा ऊबड़ खाबड़ रास्तों पर बाईकिंग के कारण अधिक पाया जाता है. समुद्र तल से 5359 मीटर ऊंचाई पर स्थित खार डूंगला पास विश्व के उच्चतम यातायात योग्य सड़क और जोजिला पास जैसे दुर्गम रास्ते जम्मू-कश्मीर और लेह की यात्रा के लिए युवाओं को आकृष्ट करते हैं.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोग : वैसे तो जम्मू-कश्मीर और लेह में हर धर्म के लोग रहते हैं परंतु जम्मू क्षेत्र हिन्दू बहुल और कश्मीर मुस्लिम बहुल क्षेत्र के रूप मे जाना जाता है. इसके अतिरिक्त लेह लद्दाख अपने बौद्ध स्मारकों के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जहां बौद्ध धर्म के अनुयायी रहते हैं. जम्मू-कश्मीर में सिख संप्रदाय को मानने वाले लोग भी बहुतायत में रहते हैं जो प्रमुख रूप से यहाँ व्यवसाय करते हैं. इस तरह से देखा जाए तो जम्मू-कश्मीर में हर धर्म को मानने वाले लोग मिलजुल कर रहते हैं.

जम्मू-कश्मीर के लोगों की संस्कृति : जम्मू-कश्मीर के लोगों की संस्कृति की इसके अति विशाल स्वरूप के कारण व्याख्या करना कठिन है. जम्मू-कश्मीर की संस्कृति जम्मू-कश्मीर की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप बहुमुखी है. कश्मीर और लद्दाख के लोगों की सांस्कृतिक विरासत में अंतर जम्मू-कश्मीर की उस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है जो कई धर्मों की साझी विरासत है जिसे दुनिया कश्मीरियत के नाम से जानती है. लेह में 15वीं सदी मे बना स्तकना बौद्ध मठ लेह की बौद्ध परंपरा का केंद्र है. इस बौद्ध विहार को टाइगर मठ के नाम से भी जाना जाता है.

कश्मीर घाटी प्रमुख रूप से अपनी कला, पारंपरिक सजावटी नावों, हस्तकला के सामानों, नक्काशी, सुंदर कालीन, खागर, स्वादिष्ट वाजवान इत्यादि के लिए प्रासिद्ध है वहीं जम्मू क्षेत्र नृत्य कला, काव्य, कालीन की बुनाई, चमड़े के बड़े सामानों के लिए प्रासिद्ध है. लेह के लोगों का प्रमुख त्योहार हेमिस है जो जून जुलाई मे मनाया जाता है यह दो दिवसीय त्योहार न केवल लेह के लोगों मे बल्कि यहाँ आने वाले पर्यटकों के बीच बहुत प्रसिद्ध है.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगो की भाषा : जम्मू-कश्मीर और लेह के अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग भाषा बोली जाती है जो एक दूसरे की सहायक क्षेत्रीय भाषाएँ भी हैं जिनमे प्रमुख रूप से कश्मीरी, डोगरी, लद्दाखी, तिब्बती और उर्दू है. इसके अतिरिक्त यहाँ के पर्यटन के कारण यहाँ के लोग हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं का बहुतायत में प्रयोग करते है. घाटी मे कश्मीरी पंडितो की प्रमुख भाषा हिन्दी ही है जबकि यहाँ के मुस्लिमों द्वारा उर्दू भाषा का प्रयोग किया जाता है. यहाँ के व्यापारी और पर्यटन से जुड़े अन्य नागरिक पर्यटको से संवाद स्थापित करने के लिए अँग्रेजी का भी दक्षता पूर्वक प्रयोग करते हैं.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगों की वेशभूषा: जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगों की वेशभूषा अत्यंत ही आकर्षक है. यहाँ के लोग रंगीन कपड़े अधिक पहनना पसंद करते हैं. यहाँ के लोगों की वेशभूषा सम्पूर्ण विश्व मे यहाँ के कपड़ों पर की गई रेशमी कारीगरी के कारण जानी जाती है. जो कश्मीरी संस्कृति को दर्शाती है. कश्मीरी महिलाओं और पुरुषों के वस्त्र अत्यंत आकर्षक और रंगीन होते हैं जो प्रमुख रूप से नक्काशीदार रेशमी ऊनी और सूती होते हैं. चूंकि यहाँ सर्दियों के समय अत्यंत ठंड पड़ती है और पारा महीनों माइनस मे रहता है इसीलिए यहाँ

के कपड़ों की बनावट मौसम के अनुसार भी होती है.

हेमिस, लोसार, सिंधु दर्शन जैसे लेह के त्योहारों में यहाँ के लोगों की रंगीन पोशाकें और ऊंची टोपियाँ यहाँ आने वाले लोगों के लिए कौतूहल का विषय होती हैं.

फेरान कश्मीर के लोगों द्वारा पहना जाने वाला प्रसिद्ध वस्त्र है जो गाउन के आकार का होता है. लेकिन ये गाउन से भिन्न इस तरह है कि इसमे सर्दी से बचने के लिए कपड़ों को दो स्तरों मे सिला जाता है. फेरान पर नक्काशीदार डिजाइन और पैचवर्क, रेशमी कढ़ाई के कारण इसकी पहचान पारंपरिक कश्मीरी परिधान के रूप मे की जाती है जिसकी लंबाई पैरों तक होती है.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगों के घर-मकान : जब हम कश्मीर के घर या मकानों की बात करते हैं तो डल झील पर तैरते हाउस बोट की तस्वीर सामने आती है. 80 के दशक की बहुत सी फिल्मे जो कश्मीर मे शूट हुईं उनमें डल झील के शिकारे और हाउस बोट को अधिक फिल्माया गया है जो वास्तव मे बहुत सुंदर और राजसी ठाट बाट वाले हैं. लेह मे बने घर आज भी तिब्बती स्थापत्य कला को प्रदर्शित करते हैं. जम्मू-कश्मीर और लेह के सुदूर स्थानों पर रहने वाले ज़्यादातर लोग छोटे छोटे मकानों मे रहते हैं जो लकड़ियों के खंभो पर टिके होते हैं, जिनकी दीवारें लकड़ियों की और छत स्टील की होती है. लेकिन यहाँ के घरों की ये विशेषता होती है कि ये घर देखने मे आकर्षक लगते हैं और घरों के अंदर कार्पेट के साथ सजावट का भरपूर उपयोग किया जाता है.

कश्मीर घाटी और लेह के घरों की बाहरी बनावट मे यहाँ के लोग घर की छतों पर टीन शेड जरूर लगवाते हैं जो झोपड़ी के आकार के होते हैं जिससे बर्फबारी के समय बर्फ आसानी से नीचे गिर जाए और घर की छत को कोई नुकसान न हो. घर के अंदर लकड़ी के फर्श और कालीने जरूर देखने को मिलती हैं साथ में घरों के अंदर बनी चिमनी भी होती है जिसमे सर्दियों मे आग जलाई जाती है.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगों का इतिहास : भारत की आजादी और बँटवारे का दंश जो कश्मीर ने झेला है वो शायद भारत के अन्य किसी राज्य ने नही झेला. आजादी के समय कश्मीर उन रियासतों मे से एक था जो न भारत का हिस्सा थे न ही पाकिस्तान का बल्कि वे एक स्वतंत्र राजशाही वाले प्रांत थे. अभी भारतवासी आजादी का जश्न मना ही रहे थे कि पाकिस्तान की नापाक निगाहें धरती के स्वर्ग पर टिक गई और 22 अक्तूबर सन 1947 को पाकिस्तान ने कश्मीर पर क़बायली आक्रांताओं की मदद से आक्रमण कर दिया. तत्कालीन राजा हरीसिंह जी ने भारत से सैन्य मदद की गुहार की. 26 अक्तूबर 1947 को राजा हरी सिंह के कश्मीर के भारत के साथ विलय पत्र हस्ताक्षर के पश्चात भारतीय वायुसेना के जहाजों ने कश्मीर की सुंदर घाटी मे गरजना शुरू कर दिया. पुन: 1971 के भारत पाक युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप से और शिमला समझौते के तहत भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर मे लाइन आफ कंट्रोल और सीज फायर पर समझौता हुआ जो अभी तक जारी है. पुन: कश्मीर, मई 1999 में एक और युद्ध का गवाह बना जिसे कारगिल युद्ध के नाम से जाना जाता है.

लगातार युद्ध और कुछ आतंकी व अलगाववादी प्रवृत्ति के लोगों ने एक आम कश्मीरी से उसके उस हक को कई वर्षों तक छीने रखा जिसके वो वास्तविक हकदार थे. जिसके कारण एक आम कश्मीरी को न केवल शारीरिक रूप से अपितु कई बार मानसिक रूप से भी प्रताड़ित होना पड़ा. परंतु ये कश्मीरियत की भावना ही है जो एक आम कश्मीरी को हर झंझावात के बाद और मजबूत करती है तथा भारतीय सेना और अपने देश के प्रति वफादार रहने को प्रेरित करती है.

जम्मू-कश्मीर एवं लेह के लोगों की मानसिकता

मानसिकता का अर्थ मन के सोचने समझने की क्षमता और विचारों की दिशा है. किसी आम नागरिक की मानसिकता का मतलब उस आदमी के सोचने का एक बंधा हुआ तरीका है. जब हम जम्मू-कश्मीर के लोगों की मानसिकता की बात करते हैं तो हम एक आम कश्मीरी की मानसिकता की बात करते हैं जो कि वहाँ का किसान है, वहाँ का युवा है, वहाँ की महिलाएं हैं, वहाँ के सुदूर पहाड़ियों मे रहने वाले लोग हैं जो आज भी बहुत सारी बुनियादी सुविधाओं से वंचित है.

क - लोकतन्त्र में विश्वास : कश्मीर के भारत मे विलय के समय देश के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि यदि राजा हरी सिंह के विलय पत्र पर हस्ताक्षर के बाद जम्मू-कश्मीर की जनता की सहमति नही होगी तो हैदराबाद और जूनागढ़ के नवाबों की तरह राजा की बात नहीं मानी जाएगी, ऐसे मे यदि जम्मू-कश्मीर के नागरिक भी पाकिस्तान के साथ खड़े हो गए तो भारत के लिए ये अति विपरीत परिस्थिति होगी. उस समय घाटी में लोकतन्त्र की स्थापना के लिए लड़ रहे जनता के सबसे बड़े नेता और ऑल जम्मू एंड कश्मीर नेशनल काम्फ्रेंस के अध्यक्ष शेख़ अब्दुल्लाह को राजा हरी सिंह ने जेल मे बंद कर रखा था. स्पष्ट था कि कश्मीर में यदि कोई जनता की तरफ से साथ दे सकता था तो वो शेख अब्दुल्लाह थे, जो उस समय कश्मीर के जन आंदोलन का नेतृत्व करने वाले बड़े नेता थे. 27 सितंबर 1947 को नेहरू पटेल को लिखते हुये कहते हैं कि उनका ये मानना है कि शेख अब्दुल्लाह के सहयोग से कश्मीर जल्दी से जल्दी भारतीय संघ मे जुड़ जाए जिससे घाटी मे प्रजा तंत्र की स्थापना हो.

अंत मे राजा हरी सिंह ने कश्मीर के भारत मे विलय के लिए समझौता पत्र लिखा जिसमें यह भी लिखा कि राजा शेख़ अब्दुल्लाह के साथ मैत्री करने को तैयार है. जिसके बाद भारत की हिंडन एयर बेस की उड़ाने श्रीनगर की ओर बढ़ी. कश्मीर में भारतीय सेना को नेशनल काम्फ्रेंस के नेताओं, कार्यकर्ताओं और कश्मीरी आवाम का भरपूर समर्थन मिला और घाटी मे प्रजातन्त्र की स्थापना हो गई.

ख - सहनशीलता तथा विपरीत परिस्थितियों मे रहने की भावना : जम्मू-कश्मीर एवं लेह के बहुत से ऐसे गाँव हैं जो 5-6 महीने मुख्य

शहर से बर्फबारी के कारण कटे रहते हैं जिसमें बारामूला, कुपवाड़ा, बंदीपुरा, हंदवाड़ा, द्रास इत्यादि प्रमुख हैं. इन क्षेत्रों के गाँव में छोटे छोटे लकड़ी के बने मकान होते हैं. ये क्षेत्र आधे साल तक लगभग अपने जिला मुख्यालय या तहसील से कटे रहते हैं. ऐसी जगह के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत लघु व्यवसाय, कृषि तथा मजदूरी है: ऐसे लोग साल के 6 महीने कमा कर इतना अनाज इत्यादि जमा कर लेते हैं कि वो सर्दियों मे आसानी से गुजर बसर कर सकें. कश्मीर में आज भी लोग छोटी नौकाओं में घर बना कर रहते हैं. सर्दियों मे जब झीलों का पानी जम जाता है तब भी ये लोग जमा किए हुए सामान से अपना काम चलाते हैं .

ग - सेना के प्रति आदर : जम्मू-कश्मीर एवं लेह के आमलोगों मे सेना के प्रति असीम सम्मान का भाव देखने को मिलता है. कश्मीर के कुपवाड़ा, मुराडपोरा, उरी, पुंछ, राजौरी एवं लेह के कारगिल, लिंकसेक, जंसकर घाटी के दुर्गम पहाड़ियों पर बसने वाले आम कश्मीरी और लेह के निवासियों के लिए सेना के जवान किसी फरिश्ते से कम नहीं हैं. जम्मू-कश्मीर लद्दाख और लेह में प्राकृतिक आपदा एक आम बात है. बाढ़, बारिश, बर्फबारी, भूकंप इत्यादि से यहाँ के लोगों का सामना होता रहता है. ऐसे में इन दुर्गम क्षेत्रों में सेना ही यहाँ के लोगों की एक मात्र उम्मीद है. यहाँ के दुर्गम स्थानों मे सेना अपने मेडिकल कैंप लगाती है जिसमें सेना के उत्कृष्ट डॉक्टर जम्मू-कश्मीर के उन लोगों का मुफ्त इलाज करते हैं जिनके लिए श्रीनगर या दिल्ली की दूरी तय करना एक स्वप्न जैसा है. सेना आम कश्मीरियों के लिए चिकित्सा, शिक्षा, खेलकूद व अन्य गतिविधियो को अंजाम देती है जिससे यहाँ के लोगो में सेना के प्रति असीम प्रेम भाव और आदर देखने को मिलता है.

घ - सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव : खीर भवानी, शंकराचार्य मंदिर, माता वैष्णव देवी मंदिर, पवित्र अमरनाथ गुफा, लमयुरु, आल्ची, स्तकना गोम्पा बौद्ध मठ, गुरुद्वारा पत्थर साहिब, हजरत बल दरगाह और छरर-ए-शरीफ जम्मू-कश्मीर और लेह स्थित प्रसिद्ध तीर्थ है जो हिन्दू, बौद्ध और मुस्लिम धर्मों के प्रसिद्ध तीर्थ हैं. जम्मू-कश्मीर और लेह के बहुत लोगों की रोजी रोटी इन मंदिरों मे आने वाले श्रद्धालुओं से जुड़ी होने के कारण यहाँ के लोगों का अन्य धर्मों के प्रति आदर देखने को मिलता है. श्रद्धालुओं की सेवा करना यहाँ के लोग एक पुनीत कार्य समझते हैं. यही कारण है यहाँ आने वाले वृद्ध और पहाड़ियों पर चढ़ने में असक्षम श्रद्धालुओं को यहाँ के लोग अपनी पीठ पर या पिठ्ठुवों पर बैठा कर मंदिर दर्शन मे सहायता करते हैं.

ङ - अलगाववादी नेता के बारे में सामान्य कश्मीरी की सोच?

जम्मू-कश्मीर का आम नागरिक ये भली प्रकार से जानता और समझता है कि घाटी के कुछ अलगाववादी नेता जनता के भोलेपन का फ़ायदा उठा कर कश्मीर के बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं. एक ओर जहां अलगाववादी नेताओं के बच्चे अच्छे स्कूल कॉलेजों मे विदेशों में पढ़ते हैं वहीं इन नेताओं के प्रभाव मे आ कर आम कश्मीरी के बच्चे अपना भविष्य खराब कर सकते हैं. एक ओर जहाँ इन नेताओं के पास बड़ी हवेलियाँ खेत और जमीने हैं वहीं आम कश्मीरी 2 जून की रोटी के खातिर जंगलों मे लकड़ियाँ काट रहा है या इनके ही खेतों में गुलामी कर रहा है.

सेना के विशेष भर्ती अभियान से जुड़कर और सेना और सरकार की विभिन्न योजनाओं से जुड़कर यहाँ का युवा अब इन अलगाववादियों के चंगुल से मुक्त होना चाहता है और अपना भविष्य उज्ज्वल करना चाहता है.

च - निर्वाचन प्रक्रिया में विश्वास : दिसंबर 2020 मे सम्पन्न जम्मू-कश्मीर मे हुए जिला विकास काउंसिल के चुनाव में भारी मात्रा में हुई वोटिंग ये दर्शाता है कि यहाँ के लोकतन्त्र का निर्वाचन प्रक्रिया में विश्वास फिर से सुदृढ़ हुआ है. इस चुनाव मे 51 से 71 प्रतिशत तक की वोटिंग हुई जो जम्मू-कश्मीर मे 2018 मे हुए मुनिसिपल चुनाव के 6.7 प्रतिशत की तुलना में काफी अधिक है. जम्मू-कश्मीर में 2019 में सम्पन्न हुए लोक सभा के चुनावों मे भी कश्मीर घाटी मे मत प्रतिशत मात्र 19 प्रतिशत ही रहा.

जम्मू-कश्मीर में लोगों का निर्वाचन प्रक्रिया मे बढ़ता विश्वाश जम्मू-कश्मीर के लोगों की भारतीय लोकतन्त्र मे अगाढ श्रद्धा को दिखाता है. जिला विकास काउंसिल के चुनाव मे मत प्रतिशत में वृद्धि जम्मू-कश्मीर मे धारा 370 और कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा वाले कानूनों के हटने के बाद आए वे उत्साहजनक परिणाम है जिससे ये पता चलता है कि जम्मू-कश्मीर के लोग व्यवस्था परिवर्तन और सुधार के लिए भारत सरकार के साथ हैं.

निष्कर्ष : उपरोक्त चर्चाओं को ध्यान में रखते हुये हम यह कह सकते हैं कि कश्मीर यदि धरती का स्वर्ग है तो यहाँ के लोगों का हृदय निश्चय ही स्वर्ग में रहने वाले लोगों जैसा है. जम्मू-कश्मीर और लेह के लोगों के विषय मे कोई भी धारणा श्रीनगर कि खबरों को कवर करने वाली समाचार रिपोर्टों के आधार पर बना लेना कश्मीर के लोगों के साथ अन्याय होगा. बदलते राजनीतिक परिवेश में ये भी उम्मीद की जा सकती है कि घाटी के कुछ युवा जो किन्ही कारणवश विद्रोही प्रवृत्ति के हो गए थे वो भी आशा और विकास की इस दौड़ में आम कश्मीरियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होंगे और जो जम्मू-कश्मीर और लेह की पाँच हजार साल से भी ज्यादा पुरानी सांझी विरासत को पुन: गौरव के नए आयाम तक पहुंचाएंगे और कश्मीरियत की भावना का प्रचार प्रसार भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में करेंगे.

मो. शाहिद कबीर
स्टा.प्र.के. विशाखापट्टनम

RAJTARINGINI : History of more than 100 Kings of Kashmir

Pandit Jawaharlal Nehru, former Prime Minister, when lodged in Naini Central Jail wrote the Foreword of Rajtaringini on the 28th June, 1934. It was originally written in Sanskrit by Kalhana. Ranjt Pandit who was also in Naini Central Jail had expressed to Nehru that he would translate Rajtarangini into English. Nehru encouraged him to do so, and saw the beginning of this project. They kept on moving in and out of Jail; When in, they couldn't meet thereafter as they were lodged in different gaols separated by high walls and iron gates. The translator, Ranjit Pandit had wished that the translated version be introduced to the public in the form of a preface or foreword by his father, Pandit Motilal Nehru. One of the reasons of his undertaking the translation into English of this ancient story of their homeland was to enable Pandit Motilal Nehru to read it, for he knew no Sanskrit. However, destiny had something else in store. Pandit Motilal Nehru died on 6th February 1931. It was in this context that he had to perform his father's role the Translator Ranjit Pandit had wished.

1. Lohar Dynasty was founded in Kashmir at the beginning of the 11th century by Sangram Raj. Harsh Dev was one of the descendant kings of this dynasty. He was a cruel king. One of his ministers was Champak. He (Champak) had 2 sons; namely Kalhana and Kanak. Elder one, Kalhana was a writer and poet while the younger one Kanak was a musician. During the reign of Jai Singh of Lohara Dynasty, Kalhana wrote Rajtarangini from 1147 to 1149. It was written in Sanskrit. Rajtaringini is in the form of a poem. (i) information about the previous kingdoms of Kashmir, (ii) entertainment to readers, (iii) learning from the past.

2. What is contained in Rajtaringini? History of Kashmir right from the time of Mahabharat until 1150. It is considered as the first certified and scientific account of history of Kashmir. Rajtaringini means 'River of Kings'; meaning thereby that public administration, culture, rule of law, tyranny, empathy, compassion, welfarism, justice, etc though varying yet kept flowing uninterruptedly. Rajtaringini has 8 chapters/ adhyays/ortarangs. There are 7826 verses (shalokas) in this book.

   Kalhana provides information about the sources from where he collected / collated the data/information before writing the book.

   (i) Information / Profile about previous 11 intellectuals / knowledgeable persons who had tried to write the history of Kashmir and an analysis of their strengths & shortcomings,

   (ii) Culture, tradition, canards and 'Nilmat Puran',

   (iii) Facts/ Documents collected from Mandirs & Bhawans after excavation

   (iv) Information on donation of land, wealth, etc by erstwhile kings in pursuit of dharma

   (v) Surya Grantha, Vastu Shastra, Prashansa Patra, Coins, etc

3. Special Features of Rajtaringini:

   (i) Written without any fear, favour, pressure tactics, etc

   (ii) Written in an Analytical manner with examples/ illustrations

   (iii) Explanation of Social Life

   (iv) Events from 813-1150 described based on facts

4. Kalhana's book is a rich storehouse of information, political, social, and, to some extent, economic. We see the panoply of the middle ages, the feudal knights in glittering armour, etc. There is a mention about palace intrigues. Women seem to have played quite an important part, not only behind the scenes but in the councils and the field as leaders and soldiers. We read of Suyya's great engineering feat and irrigation works; of Lalitaditya's distant wars of conquest in far countries; of Meghavahana's curious attempt to spread non-violence also by conquest.

5. It was a time when the old economic system was decaying, the old order was changing in Kashmir as it was in the rest of India. Kashmir had been the meeting ground of different cultures of Asia, but essentially it was a part of India and the inheritor of Indo-Aryan traditions. And as the economic structure collapsed, it shook up the old Indo-Aryan polity, weakened it and made it an easy prey to internal commotion and foreign conquest. Flashes of old Indo-Aryan ordeal come out but they are already outdated under the changing conditions. Famous saint and poetess, Kalhana shall always be remembered as a Historian free from any fear and favour.

Simmi Bhatt
Turner Road Branch, Andheri

सिंधु दर्शन महोत्सव

जैसा कि नाम से पता चलता कि यह सिंधु नदी का महोत्सव है. सिंधु दर्शन महोत्सव का आरंभ देशभर के सिंधियों द्वारा 'सिंधु दर्शन अभियान' से किया गया था जिसे अब 'सिंधु महोत्सव' नाम से जाना जाता है. यह लेह से करीब 15 किमी दूर 'शे मनला' नामक स्थान में मनाया जाता है. यह महोत्सव तीन दिनों तक चलता है. यह सिंधु नदी के तट पर सभ्यता और संस्कृति के अनोखे संगम को दर्शाता है. इस महोत्सव में कई तरह की सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन होता है तथा भारत के विभिन्न कोनों से आई हुई विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक मंडलियों के कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है. इस महोत्सव में भारत के विभिन्न राज्यों के विभिन्न समूह देश की अन्य नदियों से मिट्टी के बर्तनों में पानी लाते है और इन बर्तनों को सिंधु नदी में विसर्जित करते हैं, जिससे नदी का पानी अन्य जल के साथ मिल जाता है.

लोग सिंधु नदी के दर्शन और पूजा के लिए यात्रा करते हैं. महोत्सव का उद्देश्य सिंधु नदी को भारत में बहुआयामी सांस्कृतिक पहचान, सांप्रदायिक सद्भाव और शांतिपूर्ण तथा सह-अस्तित्व के प्रतीक के रूप में पिरोना है. यह देश और विदेश के लोगों के लिए लेह और लद्दाख के खूबसूरत क्षेत्रों की यात्रा करने का अवसर भी प्रदान करता है. इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ यह महोत्सव भारत के उन बहादुर सैनिकों को एक प्रतीकात्मक सलामी भी है जिन्होंने सियाचिन, कारगिल और अन्य स्थानों पर बाधाओं व विषम परिस्थितियों का बहादुरी से मुकाबला किया है. पहली बार यह महोत्सव अक्तूबर 1996 में आयोजित किया गया था तब पूरे भारत के सत्तर से अधिक लोगों ने तिब्बत में मानसरोवर से निकलने वाली सिंधु नदी के दर्शन और पूजा के लिए लेह की यात्रा की थी. वर्तमान में यह महोत्सव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाने लगा है.

सिंधु दर्शन महोत्सव के कार्यक्रम - तीन दिवसीय सिंधु दर्शन महोत्सव में पूजा-पाठ के अलावा लद्दाख की परंपराओं और संस्कृतियों को देखने का मौका मिलता है. इस पर्व में बौद्ध धर्म, सनातन, सिक्ख और अन्य धर्म के लोग शामिल होते हैं और सिंधु की पूजा-अर्चना के साथ ही उसे धन्यवाद ज्ञापित करते हैं.

सिंधु दर्शन महोत्सव का उद्देश्य - सिंधु दर्शन महोत्सव का उद्देश्य सिंधु नदी को भारत में बहुआयामी सांस्कृतिक पहचान, सांप्रदायिक सद्भाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना है. यह लेह और लद्दाख के खूबसूरत क्षेत्रों का दौरा करने के लिए देश और विदेशों के लोगों के लिए भी एक अवसर है.

सिंधु दर्शन महोत्सव से व्यापार - सिंधु दर्शन महोत्सव से व्यापार की अपार संभावनाएं उत्पन्न हुई है. लेह लद्दाख जैसे साल भर बर्फबारी के माहौल वाले इलाके में महोत्सव के दौरान स्थानीय लोग अस्थाई दुकानों से जीविका अर्जन हेतु धन कमाते हैं.

शिवानी भगत
मजीठ मंडी शाखा, अमृतसर

Dachigam National Park

Dachigam National Park is located 22 kilometers from Srinagar in Jammu and Kashmir. It covers an area of 141 sq. Kms. The name literally stands for ten villages that were relocated in order to create the park.

Dachigam was initially established to ensure the supply of clean drinking water to Srinagar city which is a protected area since 1910. it was declared as a national park in 1981. The park is best known as home of the Hangul or Kashmir stag which is a critically endangered species of animal.

The park is situated at an altitude ranging from 5500 feet to 14000 feet. Due to the variation in altitude the park is demarcated into upper and lower regions. The parks terrain ranges from gently slopping grasslands to cliffs and sharp rocky outcrops.

The park boasts of over 500 species of herbs, 50 species of trees and 20 species of shrubs. Dachigam is also famous for muskdeer, leopard, Himalayan Grey Langur, Leopard cat, Himalayan Block bear, Yellow throated marten among others, It is a paradise for bird watchers. Himalayan Monal, Golden Oriole, Pygmy owlet, Tytler; s leaf warbler and other rare species can be found at Dachigam.

Dachigam national park is also known for its scenic locales. Flowers and greenery carpet grasslands and meadows except during winter, when the entire forest remains blanketed under snow. Wildlife enthusiasts believe that one visit to Dachigam is not enough to enjoy the natural beauty of the forest since the park changes its appearance with the onset of each season.

Dachigam is managed by the State Forest Department. Jammu and Kashmir notified the Area as a sanctuary in 1951 and a national park in 1981. To enter the park, a special permit from the Chief Wildlife warden is needed.

Dachigam national park is protected by Central Reserve Police Force (CRPF), the force is specially deployed to protect the park from militants and other anti national elements.

E. Senthil Kumar
R.O. Tiruchirapally

बाल प्रतिभा

ओडिशा के स्थानीय समाचार पत्र संवाद द्वारा जिला स्तर पर दि. 11.09.2022 को चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिला स्तर की इस प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ श्री श्रवण कुमार प्रधान की बेटी सुश्री सिमरन प्रियदर्शिनी को द्वितीय पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया.

10 वर्षीय सक्षम वर्मा पुत्र सचिन वर्मा (वरिष्ठ प्रबन्धक, अंचल कम्प्यूटर कक्ष, चंडीगढ़) ने सौर ऊर्जा आधारित थ्री इन वन घोड़ा गाड़ी बनाई, जो तीन तरह से कार्य करती है. जिसमे विभिन्न खिलौनों को सौर ऊर्जा पैनल से जोड़कर गाड़ी के तीन रूप 1. घोड़े के साथ बग्घी 2. यूनिकोर्न यानि उड़ने वाला घोड़ा एवं 3. गाड़ी को गोल-गोल घुमाता घोड़ा आदि तीन विभिन्न रूप प्रस्तुत किए. प्रतिभावान सक्षम को विद्यालय स्तर पर इस वैज्ञानिक प्रयोग के लिए सम्मानित किया गया.

शश्विका बाजपेयी, प्रांजल बाजपेयी (क्षेत्र प्रमुख जयपुर) की सुपुत्री जिनकी उम्र अभी 3 वर्ष की भी नहीं है, ने अपनी अद्भुत मस्तिष्क क्षमता, बुद्धिमत्ता, सीखने की क्षमता के आधार पर IBR - INDIA BOOK OF RECORD में अपना नाम दर्ज करा के इस नन्ही सी उम्र में न सिर्फ़ बहुत बड़ा सम्मान हासिल किया हैं अपितु पूरे परिवार को गौरवान्वित भी किया है.

दि. 10.08.22 को केन्द्रीय विद्यालय, वालटेर, विशाखपट्टनम में आयोजित विशेष कार्यक्रम में कुमारी एनजीएस कीर्तना, सुपुत्री श्रीमती एनवीएनआर अन्नपूर्णा, सहायक प्रबन्धक, आस्ति वसूली शाखा, विशाखपट्टनम को श्री रवि कुमार ईदरा (IRS), एडीशनल कमीशनर, जीएसटी कमीशनरेट, विशाखपट्टनम द्वारा गीत गायन में विशेष पुरस्कार दिया गया.

हमें गर्व है

क्षे.का.हल्द्वानी की हल्द्वानी मुख्य शाखा के सशस्त्र प्रहरी श्री मदन सिंह को ई-लॉबी एटीएम में दिनांक 02.09.2022 को रु.10,000/- (दस हजार) की अज्ञात रकम प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने तुरंत शाखा प्रमुख, श्री अनिल कुमार आर्या को जमा करवा दिया है. इनका यह कार्य सराहनीय है.

क्षे.का.हल्द्वानी की सितारगंज शाखा के प्रधान खजांची श्री आशू बाल्मिकी ने दिनांक 16.09.2022 को बैंकिंग क्रियाकलापों में ईमानदारी की मिशाल पेश की. श्री आशू द्वारा एक ग्राहक की 1,00,000/- (एक लाख) रुपये की धनराशि जो कि ग्राहक ने भूलवश दी थी, को पूरी जांच के उपरांत सही खाताधारक को वापस की.

आरबीआई रांची की ओर से जलवायु परिवर्तन जोखिम- भारतीय बैंकों के बोर्डों के लिए चुनौतियां विषय पर सभी बैंकों के बीच निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें यूनियन बैंक के विवेक राज, मुख्य प्रबंधक को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. यह पुरस्कार आरबीआई के महाप्रबंधक (प्रभारी अधिकारी) श्री संजीव सिन्हा ने प्रदान किया.

रोहतक शाखा के सशस्त्र प्रहरी, श्री अशोक और लिपिक, श्री अजीत ने ग्राहक के भूलवश गुम हुए 60,000 रुपए वापस करके ईमानदारी का परिचय दिया. गौरतलब है कि रविंद्र कुमार ने 14.09.2022 को खाते से तीन लाख रुपए निकलवाए थे जिसमें से 60,000 रुपए शाखा में ही भूल गए. बाद में श्री अशोक और श्री अजीत ने उस धनराशि को देखकर पूरी तहकीकात की और सीसीटीवी फुटेज की सहायता से ग्राहक (रविंद्र कुमार) का पता लगाकर उन्हें सूचित किया और उनको यह धनराशि वापस लौटाई.

Operational Compliance on Break Open of Safe Deposit Locker

Safe deposit lockers are specially designed lockers which are generally kept at specially built strong rooms for keeping the valuables of hirers. It is a service provided by the bank to its customers for keeping their valuables in the safe deposit lockers. Banks provide specially designed lockers of different sizes kept in specially built strong rooms for keeping the valuables of the customers/locker-holders/ licensees. This provides safety to their belongings against theft/ burglary.

Locker facility is a value added service provided by banks to their customers. Which can be availed by individuals either singly or jointly, partnership firms, Limited companies, Clubs, associations, trusts, societies etc. but not minors. The safe deposit locker facility can be offered to existing as well as prospective customers.

Advantages of Safe Deposit Locker business:

- subsidiary services by bank for keeping valuables
- safety of belongings of customers against theft/ burglary
- Customers visit Banks for operating lockers which provides a contact point and an opportunity to cross-sell more products
- augments non-Interest Income of the branch

However, there are many lockers in branches which are neither being operated by the customer, nor rent is being paid. In the wake of supplementing both revenue generation and resource mobilization, branches shall be in a position to break open the lockers and allot the same to potential customers where rent due is not forthcoming.

Breaking Open of a Locker : Break Opening of a locker is an extreme step and it should be resorted to only after exhausting all available remedies to recover locker rent/ trace the locker holder and after obtaining permission from the Controlling Office.

a. General Procedures

- Branch to issue intimation advice to hirer demanding rent due as per banks format. In case of joint hirers, a separate notice has to be sent to each hirer.
- If it is not paid on due date, branch to issue single notice to the hirer before breaking open locker as per bank format. In case of joint hirers, a separate notice has to be sent to each hirer
- Notice should be served both by 'Registered A.D.' and 'Under Certificate of Posting'. Copy of notice and proof of delivery must be preserved in safe custody
- Breaking open is an extreme step and should be the last resort after obtaining permission from Regional Office
- Breaking open the ???? in the presence of Officer-in-charge of locker vault, Branch Manager/Assistant Branch Manager and two respectable persons from outside or the Bank's Advocate.
- If any contents found they should be listed, signed by the persons present and kept in joint custody. If locker empty, to be recorded accordingly
- In the event Termination Notice hereof is served to the Customer and the Customer does not surrender and vacate the Locker after the end of the notice period stipulated under the Termination Notice
- The Rent remains unpaid for 3 consecutive years
- The Locker remains inoperative (irrespective of whether

Rent is paid or not) for a period of 7 years or more; and the Customer cannot be located by the Bank

- In the absence of acknowledgement, branch should issue Public Notice (Annexure –III) before undertaking exercise of break open the locker.
- Break open exercise of locker should be taken up with all seriousness and with conclusive result. It should not end up with mere issuing of notices/having RO permission etc. (Copy of proposal seeking permission to Break Open the locker from Regional Office attached as Annexure-IV)
- It has to be ensured that the adjoining lockers are not impacted by any such break open operations.
- Upon breaking open of the Locker, having followed the procedure as set out above, if any content is found, the branch should prepare inventory of the contents of the Locker (Annexure-V), duly signed by the persons present at the time and get valuation of the contents done by the Bank's approved Valuer and the contents of the Locker shall be kept in sealed envelope in Iron Safe/Reserved Vacant Locker if any, in the joint custody along with detailed inventory.
- If nothing is found, a report to that effect duly signed by the persons present should be recorded.
- On breaking-open of locker, branch should intimate the locker holder/s through notice (Annexure-VI) to collect the articles found if any by paying the dues. In case of joint licensees separate notice should be sent to each licensee.
- On handing over of contents to the Locker Holder against the recovery of bank dues acknowledgement must be obtained and held on record (Annexure VII).
- Intimation of break-open of locker should be sent to Regional Office (Annexure VIII)
- Publication of notice in the newspaper before breaking open of the locker is not mandatory. However, notice to the licensee about the intention of the bank to break open the locker in case the licensee fails to pay the amount due or fails to operate the locker is a must.
- In addition to the above, the Branch shall also record a video of the break open process together with inventory assessment and safe keep and preserve the same so as to provide evidence in case of any dispute or court case in future.
- Further, the Branch shall also ensure that the details of breaking open of locker is documented in the Core Banking System (CBS), apart from locker register.
- If the licensee of the locker (which has been broken open and in which articles are found) is not traceable despite the best efforts of the branch officials, the Branch would be free to dispose of the articles. For this purpose, two successive public notices at fortnightly interval in leading newspapers of the area will be given. The notice will be published in two newspapers of which one should be in vernacular language having publication in the area of defaulter's last known address.
- The public notice should specify that the licensee of the locker would have to take delivery of the articles against payment of all charges, after establishing their claim to the full satisfaction of the Bank (Annexure-IX).
- Such unclaimed articles should be disposed-off by Public Auction and the sale proceeds should be first utilized to adjust the expenses (including rent due and charges for break open of locker) incurred by the Branch and surplus, if any, should be transferred to Central Office.
- Before conducting a Public Auction, the Branch to estimate the value of contents found in the locker and decide minimum bidding amount after obtaining approval from Regional Office.
- If the sale proceeds are inadequate to meet the expenses incurred, the Branch should initiate action against the locker holder/s for recovering the amount.

d. Procedure for break open of locker in case a locker hirer has lost the key and requests for break open the locker:

- If hirer lost has the key and requests for its replacement, a written request for replacing the locking unit to be obtained
- Charges for it be recovered in advance
- Hirer should be present
- replacement should be entrusted to a company, who has supplied the unit & to ensure that the unit is properly identified at the time of replacing locking unit
- a register for recording details of lockers it be maintained,
- entry to be made in the key register for matching the key with respective unit

Conclusion – As a responsible banker, we need to abide by the guidelines issued by Central Office from time to time. The guidelines related to break in open of safe deposit locker will protect the interests of all persons involved in the process.

Piyush Kumar Jha
Union Learning Academy, Mangalore

सफर-ए-जन्नत

घुमक्कड़ी में कुछ चीजें ऐसी होती है जिनसे आपको बहुत लगाव होता है और घुमई रमणीक प्रदेश की हो, तो फिर कहना ही क्या? कश्मीर अपने आप में इतना खूबसूरत है कि इसके सौन्दर्य को शब्दों में बांध पाना नामुमकिन है. मेरे अनुसार यह जगह जितनी मोहक है उतनी ही शांत भी है. कश्मीरियों की मेहमाननवाजी से आपका हर पल खास हो जाता है. मेरी 7 दिनों की जम्मू और कश्मीर यात्रा कारगिल स्थित युद्ध स्मारक पर वीरों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर शुरू हुई. श्रीनगर, कश्मीर की ओर बढ़ते हुए हल्की बारिश के साथ खुबानी और सेब का आनंद उठाते हुए सिंधु नदी और श्योक नदी के अभिसरण बिंदु को मैंने पार किया. सोनमर्ग में

अमरनाथ यात्रा का अंतिम शिविर भी देखा, जहां भगवान शिव के पवित्र मंदिर में पहुंचने और आशीर्वाद लेने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है. सोनमर्ग की प्राकृतिक सुंदरता के क्या कहने? शिकारा में डल झील पर कश्ती की सवारी कर लाल चौक के बाजारों में कश्मीर यात्रा के याद में मैंने मोमेंटों खरीदे. डल झील के किनारे सुपर कश्मीरी पुलाव का सेवन करना भी अपनी स्वाद ग्रंथियों के लिए एक अलग अनुभव रहा. कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग क्यों कहा जाता है, यह अनुभव करने हेतु प्रत्यक्ष रूप से कश्मीर में ही जाना होगा.

महेश अग्रवाल
क्षे.का. करनाल

Economy of Jammu - Kashmir & Leh

Jammu and Kashmir is a Union Territory of India, which is located in the Northern part of the Indian Subcontinent. The union territory is part of the larger region of Kashmir. Prior to October 31st 2019 it was a state. In August 2019 a legislation was passed and the statehood of Jammu and Kashmir has been split into two parts, one is Jammu & Kashmir and a separate Union territory Ladakh was made which came in to effect from October 31st 2019. Jammu and Kashmir was formerly a princely state of India which has a long legacy and culture.

The economy of Jammu and Kashmir is going through a very tough phase due to unrest and conflict over the last three decades. The geography as well as the political environment of this Union Territory is unfavourable for the growth of the economy. Since Jammu and Kashmir is an import dependent and export driven territory, it faces many supply chain disruptions during conflicts and gives a negative impact on the economy. The major contribution to the region's economy comes from exports of agriculture and allied activities which are partially taxed. So, it doesn't have a robust tax base that results in dependence on the Centre for funds. The resources are not sufficient to cater to the needs of the people.

The total population of Jammu and Kashmir is approx 1.25 crores and the people are mainly engaged in agriculture, floriculture and horticulture for their income. Apart from this Tourism, Handicrafts Industries and also Government Jobs support the economy. Jammu and Kashmir being a tourist place, the tourism and service sector employ a significant population. Approx 63% percent of GSVA comes from the service sector followed by industry 19% and 18% agriculture allied activities. The second major sector is tourism which employs about 10 lakh people. The high quality of handicrafts, (craftsmanship, appealing designs and functional utility) is famous throughout the world and plays an important role in the economy here. The economy of Jammu and Kashmir is mainly based on Service sector Tourism, Industries, Handicrafts, Horticulture, Floriculture and Agriculture and its allied activities.

Economy of Jammu & Kashmir and Its Key Drivers

Service Sector : The service sector of Jammu and Kashmir is the backbone of the economy here. Jammu & Kashmir being a tourist spot, many tourists visit and this gives a major boost in the service sector industries. The growth in Service sector is the highest in comparison to other sectors. The scope for making films and other TV/Video programmes is immense here and this gives a further boost to the economy.

Tourism Sector : The scope of tourism is immense. In addition to traditional recreational tourism, a vast scope of spiritual, religious, pilgrimage and adventurous tours are available. Total tourist arrivals to UT reached 25.24 million in 2020, of which 25.19 million were domestic and 5,317 were foreign tourists. The gradual increase in no of tourists is the source of economic activity and it provides significant employment to skilled as well unskilled workers. It also plays a role in giving employment to the educated as they work as tourist guides. The Major tourist attractions include Chashma Shahi Springs, Shalimar Bagh and the Dal Lake in Srinagar; Gulmarg, Pahalgam and Sonamarg in the Kashmir Valley Vaishno Devi temple and Patnitop near Jammu. It contributes to approx 10% of GDP and provides employment directly or indirectly to approx 1.5 millions of people.

Industries : The industries of Jammu & Kashmir are the second biggest source of economic activity after the service sector and contributes 19% of GSVA. Approximately 25000 MSMEs are operational here that account 60% of total investment and 90% of total employment. Jammu & Kashmir State Industrial Development Corporation is the state's nodal body for the promotion and development of small, medium, and large businesses here. Rangreth, in the Budgam District which is on the outskirts of Srinagar, is the centre for information technology where IT companies provide jobs to the youth of Kashmir. Apart from this, Handicrafts industry is very famous and supports the economy in a big way. It plays an important role in economic sustainability here. The high quality craftsmanship, appealing designs, and functional utility have earned international fame. Handloom, the state's oldest and most widely practised industry, is the largest unorganized sector in the UT and mostly employs craftswomen. The handloom industry specializes in the production of materials such as pashmina shawls, ruffle shawls, shahtoosh shawls, silk sarees etc. which support the economy and provide jobs to the locals.

Horticulture and Floriculture : The climate of Jammu and Kashmir is favourable for horticulture and floriculture. It plays a vital role for the economic development here. Fruits, Vegetables, Aromatic/Medicinal herbs, Spices, Honey etc are the major products. To promote the economy as well as the activities of Horticulture and Floriculture the Government of India has launched many schemes and initiatives. Pradhan Mantri Krishi Sinchayi Yojna for the year 2020-2021 and celebrating Horticulture week by planting seedings have given a significant boost in this sector.

Agriculture and Its allied activities : Agriculture and its allied activities generates 18% of GSVA of the Union Territory. The economy of Jammu and Kashmir is also predominantly dependent on agricultural activities. The major production under agriculture are apples, barley, cherries, corn, millet, oranges, rice, peaches, pears, saffron, sorghum, vegetables, wheat etc. Kashmiri Saffron is also very famous throughout the world and export of this product is a good source of Foreign Exchange. Almost 70% of total production of apples in India comes from Jammu and Kashmir only. The Packing industry, the cold storage industry and the transportation industry here which are directly or indirectly connected with agriculture and its allied activities generate the employment and support the economic development of Union Territory. Apart from this the valley is also known for sericulture and cold water fisheries.

Economy of Leh- Ladakh and Its Key Drivers

Ladakh is located at the Northern part of India. It is the largest and least populous Union territory of India which was formed on October 31st 2019. Ladakh is bound by Tibet to the east, Himachal Pradesh to the South, Both Jammu & Kashmir and Gilgit-Balististan to the west and the southwest corner of Xinjiang across the Karokaram pass in the North. Leh is the largest district of Ladakh which has its own geographical as well as culutural importance. The economy of Leh-Ladakh mainly depends on Tourism, Agriculture, Horticulture and Milk & Dairy production.

Tourism : Ladakh is an important place of tourism for Indian as well as foreigners as it is known for its remote mountain beauty and distinct culture. Ladakh was opened for tourism in the year 1974, Since then it has become the centre of attraction for tourists. Tourism is one of the key area that plays a vital role in generating revenue, jobs and overall growth of regions and contributes more than 50% of Ladakh GDP. Almost 3 lakhs tourist visit every year, which becomes the major source of revenue generation and economic development here.

Agriculture : Agriculture is the second largest source of economy as it engages almost 70% local work force which includes agriculturists, cultivators, livestock rearers and other skilled and semi skilled labourers. The main crops which are produced here are Wheat, Barley and Rice. To support the economy of Ladakh and to boost the agriculture produce Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority (APEDA) partnered with agricultural stakeholders of Ladakh help them in sustaining their economy and improving the income of the farmers.

Industries : Micro and Small scale industries also plays a role in employment as well as economic development. 95% of industries here operate from household levels. Handloom works, Handicrafts and wood works, Metal based works and repairing and servicing are the main industrial activities that support the economy and make it sustainable.

Horticulture : Leh-Ladakh the economy of is well supported by Horticulture activities. Apricots and apples are the main fruits here and apart from these almond, grapes, peach, pear and walnut are grown in the warmer lower belts of Ladakh .

Milk and Dairy : A good number of people are engaged in milk and dairy production. The production of milk in Leh-Ladakh is better than per capita production of the country. The region produces 50% surplus milk which can be exported and becomes a good source of revenue generation. Milk and Dairy products also play a vital role in the economic development of the region.

Conclusion : In the economy of Jammu & Kashmir and Leh-Ladakh, we see that the major contribution of GSVA (Gross sale value added) comes from service sectors in which tourism sector plays an important role. The Union Territories which have its varied and diversified geographic, agro climatic and topographic features face very typical and unique problems of economic development. Closed corner location, remoteness and isolation from major markets, scattered population, lack of economic infrastructure and dislocation of normal civic life during unrest etc arethe major problems that affect the economic activities in the region.

The Government of India is making many special provisions for the Union Territories in the field of infrastructure, power generation, animal and sheep husbandry, agriculture production, horticulture and sericulture development. Tourism being the important part of GDP, the government is exploring new tourism destinations through private and public investment. Tourism is being promoted through vibrant campaigning and holding of National and International events. We can say that the economy of Jammu & Kashmir and Leh-Ladakh has great potential in the field of Tourism, Service sector, Agriculture and Horticulture However the valleys are facing special developmental challenges due to neighbouring conflicts and unrest. The top priority of the government should be to create a secure environment by improving the law and order situation that stop economic activitiy and to make the economy self sufficient and self reliant for both Jammu & Kashmir and Ladakh.

Md Nasim Anwer
S.T.C. Visakhapatnam

जम्मू-कश्मीर एवं लेह का युवा

युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं, वे उसके भावी निर्माता है. 'युवा' शब्द अपने आप में ही ऊर्जा और आंदोलन का प्रतीक है. युवा हमारे राष्ट्र की आशा और उज्ज्वल भविष्य का चित्र है. किसी भी राष्ट्र को उन्नत बनाने में युवाओं का अतुलनीय योगदान होता है. भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी करीब 50% है जो कि विश्व के अन्य देशों के मुकाबले काफी अधिक है. अतीत में भी देश के स्वतंत्रता संग्राम में अनगिनत युवाओं ने बलिदान दिए हैं. युवा वर्ग हमारे समाज का उत्साही और प्रतिभा संपन्न वर्ग है जो वर्तमान में हमारे विकासशील देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए तैयार है. राष्ट्र को विकास के पथ पर ले जाने के लिए युवा ऊर्जा को उचित दिशा की आवश्यकता है.

देश को आगे ले जाने में जैसी भौगोलिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं को करना पड़ा है, वैसी समस्याएं शायद ही किसी अन्य राज्य के सामने आई हों. जम्मू-कश्मीर की करीब 69 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष या उससे कम आयुवर्ग की है, जिसके पास हमेशा से वो प्रतिभा रही है जो उन्हें देश के बाकी हिस्सों के युवाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने में सहायक और आवश्यक है, भले ही अतीत में उन्हें अपनी प्रतिभा निखारने में उचित सहायता और मार्गदर्शन प्रदान ना किया गया हो और उचित मार्गदर्शन के अभाव में कश्मीर घाटी का एक नकारात्मक रूप पूरे देश को देखने को मिला हो, पर युवा अब उन बुराइयों के चक्रव्यूह को तोड़ कर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने की तरफ आगे बढ़ रहा है. कश्मीर घाटी के युवाओं ने नकारात्मकता को त्याग कर सकारात्मकता को अपना लिया है. युवाओं ने विष घोलने वाली राजनीति को नकारते हुए परिवर्तन को अपनाने का निर्णय लिया है. जम्मू-कश्मीर और लेह का युवा अब एक समेकित दृष्टिकोण और नई सोच को साथ लेकर सामंजस्य और शांति के पुलों का निर्माण करके एक गरिमापूर्ण और समृद्ध भविष्य के न केवल सपने देख रहा है बल्कि उन सपनों को पूरा भी कर रहा है.

युवा, समाज में परिवर्तन के अग्रदूत हैं जो समर्पण, दृढ़ विश्वास और नए संकल्पों के साथ ऐतिहासिक प्रयासों का नेतृत्व करते हैं, जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं ने भी परिवर्तन का नया दौर लाया है जिसमें वे दूसरों के लिए उदाहरण बन कर उभर रहे हैं, जहां पूर्व में पूरे देश में जम्मू-कश्मीर के युवाओं की ओर से एक नकारात्मक संदेश जाता था, वहीं अब जम्मू-कश्मीर में युवा विकास, रोज़गार और पढ़ाई जैसे विषयों पर बात कर रहा है. जहां युवा पहले खुद को अंधेरे के गर्त में पाते थे, वही युवा एक नई ऊर्जा के साथ अब पूरे समाज को एक नई किरण प्रदान कर रहे हैं.

जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं की विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि युवा अब अतीत के काले सायों से पीछा छुड़ा कर एक सुनहरे भविष्य की तरफ बढ़ रहे हैं. आज जम्मू-कश्मीर और लेह के युवा देश के अन्य हिस्सों के युवाओं की तरह आगे बढ़ रहे हैं, नए अवसरों की तलाश में हैं, नौकरी की तैयारी कर रहे हैं, पर सिर्फ नौकरी के भरोसे नहीं बैठे हैं, खेल, सिनेमा, शिक्षा या विज्ञान किसी भी क्षेत्र में युवा पीछे नहीं हैं. सरकार द्वारा चलाए जा रहे अलग-अलग कार्यक्रम जैसे कौशल विकास, परामर्श और मनोरंजन आदि ने युवा सशक्तीकरण में एक नई क्रांति लाई है तथा स्टार्टअप प्लेटफॉर्म का प्रयोग करके युवा खुद को आत्मनिर्भर बना रहे हैं.

जम्मू-कश्मीर खेल परिषद और युवा सेवा एवं खेल विभाग द्वारा किए गए प्रयासों को युवाओं ने सराहा है, युवा हर संभव प्रयास कर रहे हैं ताकि वे जम्मू-कश्मीर एवं लेह के साथ-साथ पूरे देश का नाम ऊंचाईयों पर ले जा सकें. कबड्डी और क्रिकेट जैसे खेलों में युवा अपनी रुचि दिखा रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच कर अपने क्षेत्र का ही नहीं बल्कि पूरे देश का नाम रोशन कर रहे हैं. जम्मू के लक्की शर्मा का प्रो कबड्डी लीग सीज़न 9 में टीम जयपुर पिंक पैंथर्स में चयन और कश्मीर के परवेज़ रसूल का भारतीय क्रिकेट टीम में चयन, युवाओं की खेलों में बढ़ती रुचि का प्रमाण है. श्रीनगर में जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा साइक्लोथोन का आयोजन करके जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश को तब बढ़ावा मिला जब साइक्लोथोन में 2000 से अधिक उत्साही युवा साइकिलचालकों ने भाग लिया. जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं में फुटबॉल भी बहुत लोकप्रिय है. जम्मू-कश्मीर फुटबॉल एसोसिएशन ने राज्य खेल परिषद की सहायता से युवा फुटबॉल खिलाड़ियों के लिए यहां के एस्ट्रो टर्फ पर पहली बार फुटबॉल फैनेटिक्स टूर्नामेंट का आयोजन 2015 में किया जिसमें युवा खिलाड़ियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. घाटी में संतोष ट्रॉफी का आयोजन भी किया जा चुका है. एस्ट्रो टर्फ ग्राउंड से यहां के युवा फुटबॉल खिलाड़ियों में नया जोश पैदा हुआ है, जिसके तहत उन्हें अपनी प्रतिभा निखारने के लिए बेहतर मंच मिला है. सिनेमा के क्षेत्र में भी जम्मू-कश्मीर के युवा पीछे नहीं है. सिनेमा क्षेत्र में मुकेश ऋषि, विद्युत जम्वाल और मोहित रैना के नामों से हम सब परिचित ही हैं. अपने कठिन परिश्रम और प्रतिभा से इन्होंने बालीवुड में अपना स्थान बनाकर भविष्य की पीढ़ी के लिए सिनेमा के क्षेत्र में मार्ग प्रशस्त किया है.

खेल और सिनेमा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों जैसे उद्यमिता, शिक्षा आदि में भी युवा पीछे नहीं

हैं. 2020 में शुरू हुए अलग-अलग 4300 यूथ ग्रुप्स में 30000 से भी अधिक युवाओं का पंजीकरण एक नई उमंग का प्रतीक है. इन यूथ ग्रुप्स में युवाओं को डिजिटल मार्केटिंग इन फाइनेंस सर्विस और परिवहन क्षेत्र से संबंधित अलग-अलग शॉट टर्म कोर्स करवाए जा रहे हैं. प्रशासन द्वारा आर्थिक विकास को गति देने और युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नई योजनाओं और नीतियों के निर्माण के लिए कई कदम उठाए गए हैं ताकि वे समाज में योगदान दे सकें. जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं में परिवर्तन की इस नई लहर को देखते हुए वित्त, मानव संसाधन, निर्माण, स्वचालन और सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों की कॉर्पोरेट कम्पनियों के क्षेत्र में भर्तियां की जा रही हैं जिसे युवाओं द्वारा काफी सराहा जा रहा है. जम्मू-कश्मीर और लेह की नई औद्योगिक योजना के तहत जम्मू-कश्मीर में स्थापित होने वाले नए उद्योगों को ध्यान में रखते हुए कुशल कार्यबल की जरूरतों को पूरा करने और यहां के युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसरों का सृजन करने हेतु स्थानीय युवाओं के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जिससे युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिले और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले.

जम्मू-कश्मीर और लेह का युवा सामाजिक कल्याण में भी पीछे नहीं है, व्हाट्सएप के ज़रिए संपर्क में रहने वाले युवाओं के एक समूह ने जम्मू-कश्मीर के सांबा ज़िले में दूर-दराज़ स्थित एक गांव के विद्यालय को गोद लिया है. 'क्राइम पेट्रोल सांबा' के नाम से जाना जाने वाला यह समूह ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने वाला युवाओं का एक मंच है. अपने अभियान के तहत, समूह के सदस्य, छात्रों के लिए सभी आवश्यक वस्तुओं जैसे किताबों, डेस्क, बेंच, वर्दी, लेखन सामग्री आदि की व्यवस्था करते हैं साथ ही इस समूह ने विद्यालय परिसर में निर्माण का कार्य भी करवाया है.

अपनी पहचान और आत्म-सम्मान को पाने का अधिकार हम सभी को है. जब भी हम जम्मू-कश्मीर और लेह की बात करते हैं तो लेह हमेशा जम्मू-कश्मीर के नाम के पीछे कहीं गुम हो जाता है. हालांकि आज इस स्थिति में कुछ सुधार हुआ है. ठंड के मौसम में लेह-लद्दाख का संपर्क पूरे देश से कट जाता है, उस समय लेह-लद्दाख का क्षेत्र मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित रहता है. भारी बर्फबारी होने के कारण लेह लद्दाख में कोई फसल भी नहीं उग पाती है और खान-पान की चीजें भी उन्हें देश के बाकी हिस्सों से पहुँचाई जाती हैं. इन सभी मुश्किलों से जूझते हुए लेह-लद्दाख का युवा अपनी अस्तित्व की लड़ाई भी लड़ रहा है. अपनी शिक्षा पूरी करने और रोज़गार प्राप्त करने के लिए युवाओं को लेह-लद्दाख छोड़कर जम्मू आना पड़ता है.

जम्मू और कश्मीर के साए में जी रहे लेह को अगस्त 2019 में अपने अस्तित्व की प्राप्ति तब हुई जब लेह को स्वतंत्र संघ शासित प्रदेश बनाया गया. युवाओं में आशा की एक नई किरण का उदय तब हुआ जब दशकों से अपनी पहचान की लड़ाई लड़ रहे लेह को स्वतंत्र संघ शासित प्रदेश बनाया गया, इस ऐतिहासिक बदलाव के चलते लेह के युवाओं में ऊर्जा का अभूतपूर्व संचार हुआ, चाहे 664 किलोमीटर की लंबी दूरी तय करके जम्मू पहुंच कर एसएससी (स्टाफ सिलेक्शन कमीशन) की परीक्षा देने की बात हो या फिर समुद्र तल से 3000 से ज्यादा फीट की ऊंचाई पर ऑक्सीजन की कमी में सेना की भर्ती में दौड़ने की, लेह के युवा केवल देश के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में उत्साह, लगन और कड़े परिश्रम का उदाहरण है. लेह भी खेल के क्षेत्र में पीछे नहीं है, युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए और उन्हें बुरी आदतों से दूर रखने के उद्देश्य से लेह की टिप टॉप स्पोर्टस एंड कल्चरल वेलफेयर सोसायटी (टीटीएससीडब्लयूएस) द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया जाता है जिसमें युवा बहुत उत्साह के साथ भाग लेते हैं.

शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता है. वर्षों से अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए जम्मू आने वाले लेह के युवाओं को 2018 में यूनिवर्सिटी ऑफ लद्दाख या लद्दाख यूनिवर्सिटी के रूप में अपना पहला क्लस्टर विश्वविद्यालय मिला जो शिक्षा के क्षेत्र में लेह के भविष्य में एक मील का पत्थर साबित होगा. शिक्षा का सही उपयोग तभी होता है जब वह किसी के काम आए. लेह ने विज्ञान के क्षेत्र में भी काफी प्रगति की है. लेह में विज्ञान का प्रयोग करके जन-कल्याण का एक अच्छा उदाहरण सामने आया है जहां आइस स्तूप तकनीक का आविष्कार किया गया है जो कृत्रिम हिमनदों का निर्माण करती है, जिसका उपयोग करके बर्फ के ढेर के रूप में सर्दियों के पानी का भंडारण किया जाता है, इस आविष्कार के उपयोग से लेह को पानी की कमी से कुछ हद तक छुटकारा मिला है. हम जम्मू-कश्मीर और लेह के युवाओं से सीख सकते है कि कैसे इन सभी समस्याओं का सामना करते हुए भी कैसे जीवन में हार ना मानते हुए आगे बढ़ना है. जम्मू-कश्मीर और लेह का युवा प्रेरणा, सक्रियता और उत्साह के साथ परिवर्तन के इस युग में आगे बढ़ रहा है और शांति पूर्ण तरीकों से राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान के लिए तैयार है.

हिमांशु शर्मा
के.का. मुंबई

उच्च कार्यपालक वेतनमान VIII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

योगेंद्र सिंह, मुख्य महाप्रबंधक

प्रफुल्ल कुमार सामल, मुख्य महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

विपन सिंह, महाप्रबंधक

राजीव कुमार झा, महाप्रबंधक

जीतेंद्र मनिराम, महाप्रबंधक

धीरेंद्र जैन, महाप्रबंधक

जगन्नाथ शेट्टी, महाप्रबंधक

शंकरलाल जी, महाप्रबंधक

एस शक्तिवेल, महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

अरुणराव सारंग जंजड
उप महाप्रबंधक

सुरेश कुमार अंगुराल
उप महाप्रबंधक

मयंक भारद्वाज
उप महाप्रबंधक

संतोष साहू
उप महाप्रबंधक

अभिनव भट्ट
उप महाप्रबंधक

नवनीत दत्ता
उप महाप्रबंधक

गोविंद मिश्रा
उप महाप्रबंधक

हरीश जगदीश शेनवी
उप महाप्रबंधक

तटाले अनुप विनायक
उप महाप्रबंधक

प्रकाश टी
उप महाप्रबंधक

सुब्रमण्यम एस.
उप महाप्रबंधक

हरिंदर सिंह संधू
उप महाप्रबंधक

अश्वनी कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक

अमरनाथ सुरेश मिश्रा
उप महाप्रबंधक

लाल चंद्र झारवाल
उप महाप्रबंधक

योगेश चौरसिया
उप महाप्रबंधक

स्फूर्ति रंजन
उप महाप्रबंधक

एम. चेल्लादुराई
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं

शुभमस्तु...

एस.वी.एस.सुंदरा प्रसाद
मुख्य महाप्रबंधक

बी एस वेंकटेश
मुख्य महाप्रबंधक

सी वी रघुनाथ
महाप्रबंधक

एम. वेंकटेश
महाप्रबंधक

पी. रामा कृष्ण चौधरी
महाप्रबंधक

आर. पी. शिवराम
महाप्रबंधक

ए वी एस आर एन शर्मा
उप महाप्रबंधक

आर राघवेंद्रम
उप महाप्रबंधक

शंकरनारायण
उप महाप्रबंधक

वेलेरियन केस्टेलिनो
उप महाप्रबंधक

के आर नटशेखर
उप महाप्रबंधक

आई सत्यनारायण मूर्ति
उप महाप्रबंधक

धर्मेंद्र कुमार कनवारिया
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

Kashmiri APPLE

"An apple a day, keeps the doctor away" - Benjamin Franklin

Kashmir Apples are blush red and smooth skinned which are superior in terms of quality and taste. The crispy, sweet and juicy texture is a treat to the tongue. The premium quality Kashmiri apples are considered one of the best quality apples in the world that are harvested mainly in the months of September and October. Red Delicious apples are the most selling apples, and for more than 50 years the Red Delicious apple has been the number one apple in America. Apple is the highest consuming fruit than other fruits as it is healthy and tasty.

Apple is also considered as the most profitable fruit crop because of its high consumption and medicinal values. Apple is an essential part of the rose family of the genus Malus. The U.S, China, France, Italy, and Turkey are the most famous apple producers in the World. Among them, China is the largest apple producing country.

Apples and Kashmir : Kashmir is popularly known as a "Paradise on Earth". It is also home to a variety of apples and other temperate fruits for which the state is very famous across the globe. The soil, climate and environment of Kashmir aids cultivation of apples and other temperate fruit trees. One of the most famous places in the valley of Kashmir noted for apple cultivation is Chunt Var as it has a lot of apple yards. The breath-taking and the stunning beauty of the valley of Kashmir and its temperate fruits has been complimented by people from different areas including writers and travellers belonging to different ages and nationalities. Chinese pilgrim Huen Tsang who travelled to Kashmir has made a mention of various temperate fruits like Pears, Wild Plum, the Peach, the Apricot, Grape and the Apple. It was the Mughal emperor Jehangir who named Kashmir as the 'Paradise on Earth' for the valley which is featured with snow capped with peaks and sparkling streams, high pastures carpeted with alpine flowers, fertile valley rich with fruits and grain and its lakes and springs. It has been considered from time immemorial that planting any fruit or nut tree in Kashmir as sacred.

Apple has always been deeply connected with the lives of the people of valley as the fruit provides direct or indirect livelihood to over half of Kashmir's population. Jammu and Kashmir contributes around 77.71% of the total apple production followed by Himachal Pradesh with 19.19%, Uttarakhand with about 2.52%, Arunachal Pradesh with 0.32%, Nagaland with 0.09% and Tamil Nadu with 0.01 tonnes. Apple production in Kashmir is estimated to be worth Rs.10,000 crore. Cultivated in about 4 lakh acres of land, apple cultivation contributes about 8.2% to Jammu and Kashmir's GDP as against 6.8% from tourism.

The people of Kashmir mostly identify any of their native fruit or plant or tree or flower only by their local nomenclature. Apple in their local nomenclature is referred as Chunt, Pear by tang, Apricot by Chaer, Walnut by Duon, Poplar by Fresst, Willow by Weer, Wild cherry by Alich, Plum by Aer, and Grape by dache and so on.

Apple Varieties : Various surveys have identified 113 varieties of apples. In India there are more than 15 apple varieties cultivated and other varieties are imported. Prominent varieties are;

1. **Ambri Apple :** The Ambri Apple is the pride of Kashmir and is also known as Kashmiri Apple. It is widely consumed due to its sweet aroma. It has a greenish and red exterior.
2. **Honeycrisp :** It is a classic sweet apple variant and is famous for its crispy texture and sweetness. Farmers export this due to its ability to last and its freshness and crispy texture.
3. **Granny Smith :** This apple's taste, aroma, and texture make it the most classic variety of apples. People use it to make beverages, cakes, jams, desserts and candies. Also, it has several medicinal advantages.
4. **Tydeman's Early :** Hilly areas of J&K and Himachal Pradesh is the home for this type of apples. It has a red colour with a yellowish-green base, making it more widespread. It is used it in making of desserts and fresh salads.
5. **McIntosh Apple :** McIntosh apples come from the hilly areas of Uttarakhand, UP and Himachal Pradesh. These apples are best for raw eating due to their soft, creamy and mealy flesh. It helps in making apple butter.
6. **Golden Delicious :** As the name says, this apple variety has beautiful greenish-yellow skin. The subtle aroma, smooth texture and delightful sweet flavour of this variety make it popular among all types.
7. **Fuji Apple :** This apple's delicious taste, sweet flesh, subtle flavour, and crisp texture provides it with special recognition.
8. **Chaubattia Anupam :** It is a hybrid variety found by the crossing of Red Delicious and Early Shanburry. Uttar Pradesh and Uttarakhand are the prime producers of this apple variety.
9. **Sunehari :** Sunehari is the variety of hybrid apples, which comes from the crossing of Golden delicious and Ambri apples. It has crunchy and juicy flesh with a sweet- acetous taste.
10. **Red Delicious :** The name of this variety is taken from its dark red colour and delicious taste. It comes from the mountains of Himachal Pradesh. People use this variety to prepare salads, chutneys and jams. Apart from this, it is best for raw eating.

Health Benefits : Doctors advise to include apples in regular diet due to their high medicinal values and health benefits. Let us list some of the benefits;

- Apples provide vitamins A and C, carbohydrates and fibre. Foods with fibre aid digestion and cures constipation
- Apples are good for blood pressure and cholesterol and so good for heart
- Apples support a healthy immune system
- Apples also prevent diabetes risk
- The antioxidants in apples play a vital role in cancer prevention
- Eating apples support healthy weight loss
- Apples also help to control Alzheimer's disease
- Apples also help to protect brain and support fighting asthma

Apple Dishes : Apples can be eaten fresh or served in various methods like salads, cakes, sweets etc. So many mouth-watering dishes can be made of apples in Indian style. Some of them are, Apple Halwa, Apple Cake/ Muffins, Apple Crumble, Apple Kheer, Apple Pie, Apple Chutney, Apple Sabzi, Apple Sheera, Apple Pulav, Apple Pudding, Apple Jalebi, Apple Shake/concentrate, Apple Burfi, Apple Jam, Apple Raita, Sweet and Spicy Apple Curry, Green Apple Instant Pickle.

Let us continue to enjoy tasty and crunchy Kashmir Apples for the health and wealth of the nation.

"If you never tasted a bad Apple,
You would never appreciate a good Apple,
Because you have to experience LIFE,
To understand LIFE"

S B Karimullah Sahib
R.O. Punjagutta Hyderabad

उमलिंग-ला - एक ठंडा रेगिस्तान

हर साल की तरह इस साल भी हमारे ROCKFORT TRECKERS, PUNE ग्रुप के सदस्यों को सूचित किया गया कि जून 2022 महिने मे Bike Expedition का आयोजन किया गया है. पर जैसे जैसे जाने की तिथि नजदीक आ रही थी स्पीती वैली और नजदिकी विस्तार में भूस्खलन के समाचार सुनने में आ रहे थें. वैसे तो लेह लद्दाख विस्तार में भूस्खलन की आम बाते होती है. ज्यादा कुछ सोचे समझे अब हमारे दल के सभी सदस्य इस अभियान पर जाने के लिये पूरी तरह तैयार थे. हमारे तय बाईक अभियान के लिये यात्रा कार्यक्रम पुणे से शुरु होकर चंडीगढ़, चंबा, किलाड, मनाली होते हुए चंडीगढ़ ऐसा था. दोस्तों और घरवालों द्वारा दी हुई शुभकामनाओं से ऊर्जा ग्रहण कर हम निकल पड़े अपने अभियान पर, 3 जून की सुबह पुणे से उमलिंगला की ओर! 40 डिग्री तापमान से तपते हुए पुणे से निकलकर हम 3 जून को 46 डिग्री से तपते हुए चंडीगढ़ में अंकितभाई के घर पहुंच गए. हमारा अभियान दल कुछ इस प्रकार था - तुषार, राहुल, अभिषेक, वरुण, अमर, श्रीकांत, संजीव, मैं और हिमालयन बाईक रेंटल्स - चंडीगढ़ से ली हुई चार हिमालयन बाईक्स और दो 350-बुलेट्स. 4 जून की सुबह हमारा दल चंडीगढ़ से साच पास (4414 Mtr- High Mountain Pass in Chamba District, Himachal) की ओर रवाना हो चुका था. आसमान से सूरज आग के गोले छोड रहा था, तापमान लगभग 48-49 डिग्री था और हमारी गाड़ियों का इंजिन भी गर्मी के कारण साथ नहीं दे पा रहा था. 5 जून की शाम को हमारा दल साच पास पहुंच चुका था, वहा का तापमान शून्य से माईनस डिग्री तक था. यशराज (मुन्नाभाई) की मदद से लिया हवा त्रिशूल हमारे दल की ओर से वहां विराजित भगवान महादेव को अर्पित कर दिया. हमारा अगला पड़ाव था उमलिंगला..!

हिमालय की घाटियों में विचरती हवा में ऐसा कुछ घुला हैं कि वह फेफड़ों में प्रवेश करते ही आपको मदमस्त कर देती हैं. हिमालय पर यत्र -तत्र बिखरे झरनो के जल में जाने क्या हैं कि उसका एक घूँट मात्र ही हलक के नीचे जाते ही आप मदहोश हो जाते हैं. हिमालय के उत्तुंग हिम शिखरों, घने जंगलो और उसके हृदय को चीरकर खिले रंगीन पुष्पो में न जाने क्या हैं कि उन पर नजर डालते ही आप मस्तमौला हो जाते हैं, विवश हो जाते हैं - पुन: पुन: वहाँ लौटने के लिए. ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी हुआ.

उमलिंगला पृथ्वी पर सबसे ऊंची मोटर योग्य (Highly Motorable) सड़कों में से एक है. उमलिंगला भारत में जम्मू और कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र के पूर्व में स्थित समुद्र तल से 5,798 मीटर (19,024 फीट) की ऊंचाई पर एक उच्च पर्वतीय दर्रा है. इस ऊंचाई पर यह दुनिया की सबसे ऊंची वाहन योग्य सड़कों में से एक सड़क है. ड्राइव में एएमएस (ऊंचाई-पहाड़-बीमारी) और पल्मोनरी एडिमा और सेरेब्रल एडिमा के कारण मृत्यु की वास्तविक जोखिम है. 18 दिसम्बर 2021 को श्री. राजनाथ सिंह, माननीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार के करकमलों द्वारा और श्री. आर के माथुर, माननीय उप राज्यपाल, लद्दाख की उपस्थिति में उमलिंगला में विश्व की उच्चतम वाहन योग्य सड़क के साथ में आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत 'प्रथम स्वदेशी डबल लेन मोड्युलर सेतू' का उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित किया गया.

वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल ए सी) के काफी करीब, शिखर तक जाने का रास्ता पूरी तरह से पक्का है. यह 52 किमी (32 मील) लंबा है, चिसुमले से डेमचोक तक, दक्षिणी लद्दाख में यह लेह से 230 किमी दूर है. सड़क सभी यात्री वाहनों के लिए खुली है. इस रणनीतिक सड़क का निर्माण भारतीय सेना के संवेदनशील डेमचोक क्षेत्र में तेजी से संपर्क प्रदान करने के अभियान के एक हिस्से के रूप में किया गया था और चीनी सेना के साथ हालिया विवादों और भारत-चीनी सीमा पर उनके द्वारा किए जा रहे आक्रमणों को ध्यान में रखते हुए रणनीतिक महत्व रखता है. 'प्रोजेक्ट हिमांक' के तहत निर्मित यह सड़क सैनिकों और उपकरणों की त्वरित आवाजाही की अनुमति देती है. शुरुआती दिनों में, जब यह पास लोगों की जानकारी में आया, तो 2017 में और 2018 की शुरुआत में बहुत सारे लोगों ने इसकी यात्रा की. लेकिन भारत-चीन सीमा के बेहद करीब होने के कारण, इस क्षेत्र तक पहुंचना अब गंभीर रूप से प्रतिबंधित है. इस तरह के कठोर और कठिन इलाके में बुनियादी ढांचे का विकास बेहद चुनौतीपूर्ण है क्योंकि सर्दियों के दौरान तापमान -40 डिग्री तक गिर जाता है और ऑक्सीजन का स्तर सामान्य स्थानों की तुलना में लगभग 50% कम होता है. यह उमलिंगला दर्रे की सड़क को सीमा सड़क संगठन द्वारा किए गए इंजीनियरिंग की एक उल्लेखनीय उपलब्धि बनाता है.

वर्ष 2021 में सड़क पूरी तरह से बन गई थी. यह देश की सबसे ऊंची सड़कों में से एक है. दर्रे के आसपास का क्षेत्र बंजर इलाके का एक अंतहीन विस्तार है जिसमें सभ्यता का कोई निशान नहीं है. यदि आप इस मार्ग को चुनते हैं तो कृपया अद्यतन जानकारी प्राप्त करें. शिखर सम्मेलन की सड़क का प्रबंधन बीआरओ (सीमा सड़क संगठन) द्वारा किया जाता है. यह एक हवादार जगह है और यह उन जगहों में से एक है जहाँ आपको एक ही समय में दो दिशाओं से आने वाली ते. ज हवाओं का सामना करना पड़ता है. चुशुल और हनले के लिए परमिट प्राप्त करना कभी-कभी एक समस्या बन सकता है. इसके लिए लेह डीसी कार्यालय से अनुमति की आवश्यकता होती है. चूंकि यह एक संवेदनशील क्षेत्र है, इसलिए पर्यटकों की संख्या को सेना द्वारा सीमित और प्रतिबंधित किया जा सकता है. पूरी दुनिया में सबसे ऊंची मोटरेबल रोड का दर्जा लद्दाख के खारदुंग-ला पर बनी सड़क से छिन गया गया है. अब तक न सिर्फ अपने देश बल्कि दुनिया के ज्यादातर एडवेंचर पसंद करने वाले लोग खारदुंग-ला की सड़क पर दोपहिया और चार पहिया वाहनों से पहुंचते थे. खारदुंग-ला पर बनाई गई सड़क चीन के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती रही

है. क्योंकि सीमा सड़क संगठन ने इस सड़क के निर्माण के साथ भारत की चीन और पाकिस्तान से लगती हुई सीमाओं को सुरक्षा प्रदान की है. खारदुंग-ला पर बनी दुनिया की सबसे ऊंची मोटरेबल रोड 18,380 फीट पर तैयार की गई थी, लेकिन अब पूरी दुनिया में इससे भी ऊंचाई पर 19,024 फीट के उमलिंग-ला पर सीमा सड़क संगठन ने मोटरेबल रोड बना दी है. यह सड़क पिछले साल अगस्त में शुरू की गई थी, लेकिन कोविड प्रतिबंधों और फिर ज्यादा बर्फबारी के चलते पर्यटकों का आना नहीं हो पा रहा था. इस साल उमलिंग-ला पर बनाई गई सड़क पर पर्यटकों की संख्या तेजी से बढ़ी है. तिब्बती भाषा में 'ला' को माउंटेन पास या दर्रा कहते हैं. इस दृष्टिकोण से चीन की सीमा से लगते हुए उमलिंग-ला पर भी दुनिया की सबसे ऊंची सड़क बनाकर तैयार कर दी गई है. हिमालय की लद्दाख रेंज में अभी भी बहुत से ऐसे इलाके हैं, जो सड़कों से लेह और अन्य शहरों से पूरी तरीके से कटे हुए हैं. इसकी मुख्य वजह भौगोलिक परिस्थितियां ही हैं. दरअसल ऊंचे दर्रों वाले पूरे लद्दाख में आबादी तो छिटकी हुई बसी है, लेकिन उस आबादी को सड़क मार्ग से लद्दाख की हिमालयन शृंखलाओं में बसे कस्बों से जोड़ना बड़ी चुनौती माना जाता रहा है. सीमा सड़क संगठन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों के मुताबिक इसी चुनौती को पूरा करना ही उनके संगठन का मुख्य उद्देश्य है. यही वजह है कि पूरी दुनिया में सबसे ऊंची सड़क उमलिंग-ला पर बनाकर न सिर्फ लद्दाख के पूर्वी इलाके के कस्बों को जोड़ा गया है, बल्कि सैन्य दृष्टिकोण से बनाए गए दुनिया के सबसे ऊंचे सड़क मार्ग से देश की सीमा की सुरक्षा और मजबूत हुई है. उमलिंग-ला पर बनाई गई 52 किलोमीटर लंबी सड़क से पूर्वी लद्दाख के चुमार सेक्टर स्थित कई कस्बे आपस में जुड़ गए हैं. साल के ज्यादातर महीनों में उमलिंग-ला बर्फ से ढका रहता है. बावजूद इसके बनाई गई इस सड़क से चिसुमले और डेमचोक जैसे आबादी वाले इलाके सीधे जुड़ गए हैं.

हमारी योजना के हिसाब से हमें क्लिफ हैंगर (THE CLIFF HANGER-Worlds Most Dangerous Road) जाना था इसलिए हम किलाड़ की ओर निकल पड़े, किलाड़ पहुँचते हमें रात के दस बज चुके थे. खराब मौसम और थकान के चलते क्लिफ हैंगर जाने का अभियान रद्द करना पड़ा, जो कि मैं और हमारे दल के प्रमुख तुषार भाई ने पिछले साल पूरा किया था. किलाड़ रुकने के बाद दूसरे दिन हम उमलिंगला के सफर पर निकल पड़े. उमलिंगला एक ऐसी जगह है जहां Google Map भी काम नहीं करता, फिर हमारा हर साल का अनुभव और वहां के स्थानीय लोगों की मदद से हमने उमलिंगला जाने का ROUTE MAP तैयार कर लिया था. कीचड, धूल से भरे रास्ते और ऊंची ऊंची पहाड़ियों को चीरते चीरते हुए हमने लगभग 100-150 कि. मी. की दूरी पूरी कर ली थी, तभी असमान में बादल छा गये और वातावरण मे कुछ ज्यादा ही बदलाव आ गया. बारिश चालू होने के कारण तापमान में भी 1-2 डिग्री तक कमी आई थी. केलाँग (KEYLANG) में रुकने के बाद सर्चू, पांग,घाटा लूप्स, मोर प्लेन होते हुए हमें हनले पहुँचना जरुरी था, क्योंकि तय की हुई योजना के तहत हमारे पास दिन कम बचे हुये थे, मौसम हमारा साथ नहीं दे रहा था उसी कारण हमें मजबूरन सोकर (TSOKAR) मे रुकना पड़ा, पर अगले दिन वहां पर हो रही हिम वर्षा के कारण ये मजबूरी एक शानदार जश्न में बदल गयी क्योंकि लेह - लद्दाख आने के बाद हर Bike Rider की एक ख्वाहिश होती है कि उनको पूरी यात्रा में हिम वर्षा मिले और वो उसका मजा ले पाए. सोकर से हनले (Hanley - Indian Astronomical Observatory Ladakh) जाते हुये न्योमा नामक एक आर्मी कैंप से गुजरना पडता है. वहां सेना का एक कैफे है, वहां पर हमें जलपान करने का मौका मिला. खाना ऐसा था कि हमें घर की याद आ गयी. रेतीले रास्ते, ठंडी हवाएं और बीच बीच मे रेतीले चक्रवात का मजा लेते हुये हम हनले पहुंच गए.

वैसे तो उमलिंगला जाने के लिये तीन रास्ते हैं, उसमें से पहला हैं - फुकचे - कोयुल - डेमचोक - उमलिंगला, दूसरा है हनले - फोटीला - उमलिंगला यह यात्रियों का सबसे पसंदीदा मार्ग है, और तीसरा मार्ग है, हनले - उकदूंगले - उमलिंगला. हनले से उमलिंगला जाने के लिए हमने जो रास्ता चुना था वहां से रास्ते का अनुमान लगाना मुश्किल है. हाल ही में सफर तय कर चुकी गाड़ियों के Tyre Marks देखकर आप आगे का सफर तय कर सकते हैं और उसमे भी बारिश या हिमवर्षा आ जाये तो आप रास्ते से भटक सकते हो. हमारे सभी साथी Tyre Marks का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ते गये, पर एक मुकाम पर आने के बाद हमें पता चला कि हम गलत मुकाम पर पहुंच गये थे, जिसका नाम था झुरसार (ZURSAR-ये एक भारत - चीन सीमा स्थित भारतीय आर्मी का चेक पोस्ट) वहाँ से आर्मी ऑफिसर्स की सलाह लेकर हम सही रास्ते पर निकल पड़े. अभी भी हम हमारी मंजिल से काफी दूर थे .धीरे धीरे हम समुद्र तल सीमा से ऊपर जा रहे थे और अब हम एवरेस्ट बेस कैंप (North Base Camp 16900 ft) से भी ज्यादा ऊंचाई पर थे. वहां हमें एक बोर्ड पर लिखा हुआ भी मिला - "YOU ARE NOW HIGHER THAN EVEREST BASE CAMP" वहां से उमलिंगला का विहंगम दृश्य नजर आ रहा था. वहां पहुंचने के लिये और उसे देखने के लिये हमारे सभी साथी बहुत ही उत्सुक थे. एक नयी उमंग और उत्सुकता के साथ हम सभी साथी अब समुद्र तल से 19024 फीट पर यानि उमलिंगला पहुंच चुके थे और ROCKFORT TRECKERS का अभियान पूरा हो चुका था. 9 जून 2022 को दोपहर के ठीक 12 बजकर 39 मिनट पर हमारे भाग्य और मेहनत ने साथ देते हुए हमे उमलिंगला तक पहुंचाया था. आसमान एकदम साफ था - नीला दूर -दूर तक कोई नहीं, सिवा सन्नाटे के. कोई जीव नहीं - कोई पक्षी नही (अंतिम बार पक्षी हमे 'मनाली' में ही दिखे थे) इस तरह हमने हनले - नूरबूला टॉप (17328 ft) -उमलिंगला - फोटीला (18124ft) -हनले एक सर्किट पूरा कर लिया और लेह की ओर निकल पड़े....

यह एक आश्चर्यजनक यात्रा है, एड्रेनालाईन-पंपिंग मार्ग कमजोर दिल वाले लोगों के लिए नहीं है. तो आप सभी मजबूत इरादों वाले यात्रियों- आप कब इस अभियान पर जा रहे हैं?

यह एक आदर्श उदाहरण है कि कठिन सड़कें अक्सर खूबसूरत गंतव्यों की ओर ले जाती हैं.

शशिकांत व्यवहारे
फैजपुर शाखा, नासिक

Agriculture of Jammu-Kashmir & Leh

Introduction:

Agriculture: Indian agriculture is typically identified with the 'Green Revolution' that started in the 1960s enabling the nation to make great strides in domestic food production and significantly contributing to progress in agriculture and allied sectors. It transformed India from a food-deficit nation to a food-surplus, export-oriented country. India is now looking to further improve the agri infrastructure by the year 2030.

Agriculture in Jammu and Kashmir: Jammu and Kashmir(J&K) is spread over a total 42.24 lakh hectors out of which gross cultivation happens over 12.44 lakh hectors (29.45%). Out of the gross cultivated area, 3.48 lakh hectors (27.97%) are irrigated land. A total of 11.93 lakh families (70% of total population) are dependent on agriculture as a source of their family income.

Agriculture in J&K goes through tough climatic challenges and scarcity of essential resources like irrigation and efficient transportation. Even though the Union Territory has the potential to produce off season vegetables, which the Govt. is focusing on to improve farmer income. GOI has also allocated schemes like RKVY, NSM, NMSA, NMOOP, Crop Insurance, NMAET, NSFM, PMSKY etc to further aid to the development of agriculture in the UT.

Major Crops: Rice, the staple of Kashmiri's, is widely cultivated in this region, followed by maize, pulses, wheat and barley. J&K is one of the largest cultivators of saffron in the world.

Tulips, lotuses, lavender and marigold are among the major flowers grown in the region.

Kashmir has Asia's largest tulip garden having more than 65 varieties. Most of the flower's blossom in spring making it a favourite tourist destination.

Major fruits grown in Kashmir include apples, pears, peaches, cherries, almonds, apricots etc. 75% of total apples grown in India are from Kashmir making it the largest producer of apples in the country.

Agriculture portfolio of our Bank in Jammu and Kashmir: Our Bank has 17 Branches in Jammu and Kashmir and has disbursed 252 KCC accounts. Our bank has also given 82 Jewel Loans, 579 Mudra Loans in the union territory. It is also worth mentioning that our Bank has surpassed the targets allocated under Annual Credit Plan 21-22 for the UT under Agriculture and Priority sector lending.

Agriculture in Union Territory of Ladakh: Ladakh is a cold desert, and present climatic changes have adversely hit agriculture in Ladakh. Almost 90% of the farmers of Ladakh are dependent on snow melted water for irrigating their agriculture lands. The major crop of the region is barley. Barley is ground into powder and called 'Tsampa' which is the staple food of Ladakh. Cereals are grown for twin purpose of food and fodder. Of the total 21,611 Hectares under cultivation, wheat (3,762 Ha) and barley (8,490 Ha) occupy 56.69% of the total area sown. Other major crops include vegetables, mustard, apples and apricots.

Cropping patterns: Mono Cropping patterns in UT Ladakh and the period of sowing of wheat and barley are March to May in UT Ladakh.

Climate and rainfall of Ladakh: Due to its high altitude and cold desert, Ladakh is always freezing cold and dry for most of the year. The air is so thin that you can feel the sun's heat intensely. Average annual precipitation is roughly 3 inches, fine, dry, flaked snow is frequent and sometimes falls heavily.

Agriculture and agricultural infrastructure in Ladakh: Solar power, solar farming, irrigation including water harvesting and rainwater management, warehousing including accredited warehouses. As part of expansion of PM-KUSUM yojana, a target of 20 lakh farmers for setting up stand-alone solar pumps has been set and another 15 lakh farmers to be helped to solarize their grid-connected pump sets. A scheme to enable farmers to set up solar power generation capacity on their fallow/barren lands and to sell it to the grid is also introduced. (Source PLP 2021-22 NABARD)

Financial Inclusion

Introduction: The prime focus of Govt. of India under Financial Inclusion is to bring each individual of the society under Financial Services/ Banking Network. FI is a flagship programme of the Govt. of India, and the Govt. is meticulously devising innovative strategies to make our country reach one hundred percent coverage. India is considered as the pioneers in Financial Inclusion and Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY), is a major tool which plays a pivotal role in the success of FI in India.

Financial Inclusion in Jammu & Kashmir and Leh: Jammu & Kashmir and Leh are the northern most newly formed Union Territories of India. Financial Inclusion in this region will help the economically underprivileged to be able to access the Financial Services and develop a habit for savings.

Keeping this in mind the UTLBC, has setup Financial Literacy Centres in the region to spread awareness to inculcate Financial Discipline.

PMJDY is a flagship scheme of Govt. of India and the performance under PMJDY for the UTS are as under:

S. No	State Name	Total Beneficiaries	Balance in beneficiary accounts (in crore)	No. of RuPay cards issued to beneficiaries
1	Jammu & Kashmir	26,00,529	1,585.32	18,57,118
2	Ladakh	20,887	24.13	18,393

Data pertains to all Banks performance.

Performance of Our Bank under Financial Inclusion:

Union Territory	No of PMJDY A/Cs	PMJJBY	PMSBY	APY Enrolments
LADAKH	24	13	348	6
JAMMU & KASHMIR	13883	5061	10796	1184
Grand Total	13907	5074	11144	1190

Concluding Remarks:

1. There is good scope for our Bank to tie-up with Govt. Authorities and Finance Agriculture infra projects, which will help to create a conducive environment for the people dependent on Agriculture as source of Income
2. There is ample scope for improvement under key FI parameters to ensure each individual has extended banking services and is covered under the social security schemes offered by the Govt. of India.
3. Further expanding BC/CSP network for ease of doing transactions.

Ishaan Bali
F.G.M.O. Delhi

घाटी में आतंकवाद का चेहरा

जब जब जम्मू-कश्मीर की चर्चा होती है तो इसके पूर्ववर्ती इतिहास एवं वर्तमान दोनों पक्षों पर चर्चा होती है. कश्मीर की घाटियों एवं वादियों में एक तरफ अद्भुत प्राकृतिक नजारा देखने को मिलता है तो दूसरी तरफ इसका गौरवशाली इतिहास घाटी की बुलंदियों को भी बयां करता है. कश्मीर घाटी को हम लोग दो भागों में देख सकते हैं. पहला 90 के दशक के पहले का कश्मीर जब स्वर्ग कहे जाने वाली इन घाटियों में दिन-रात खुशियां गुलजार हुआ करती थी तो दूसरी तरफ 1990 के बाद का कश्मीर, जो आतंकी घटनाओं के कारण लगातार चर्चा में रहने लगा.

चारों तरफ गोलियों की आवाज के कारण सैलानियों से एकदम खाली कश्मीर. आंतकी बर्बरता के कारण घाटी को छोड़कर पलायन करते लोग तथा इसी क्रम में उनकी नृशंस हत्या. सचमुच यह भयावह सच हमें इन हसीन वादियों के ऊपर लगे ग्रहण को दर्शाता है. 1990 का वह दशक जब पूरी घाटी में चीखें सुनाई दे रही थी. आतंकवाद का चेहरा बने कुख्यात आतंकवादी निर्दोष नगारिकों की जान के प्यासे बन गए थे. वह काली रातें जो कश्मीर में अस्थिरता लेकर आईं तथा अभी भी वह कमोबेश जारी है.

घाटी में आंतकी गतिविधियां : घाटी में आतंकवाद का घिनौना रुप जिसने मानवता को कलंकित किया है तथा पूरी घाटी में लोगों के बीच भय का वातावरण कायम किया जो आज भी किसी न किसी रुप में अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने का प्रयास करता है.

कश्मीर में अनेक आतंकवादी समूह पूर्णत: सक्रिय हैं जो कश्मीर को स्थिर होने देना नहीं चाहते हैं. इसमें लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, हरकत-उल-मुजाहिदीन और हिजबुल मुजाहिदीन के अलावा कई छोटे समूह जैसे तहरीक-उल-मुजाहिदीन, अल बदर, अल बरक, अल जिहाद आदि सक्रिय हैं जो आए दिन आंतकी घटनाओं की जिम्मेदारी भी लेते हैं. घाटी में सक्रिय आतंकी संगठनों में अधिकतर पाकिस्तानी मूल के आतंकी संगठन हैं जो कश्मीर घाटी को अस्थिर करने का हमेशा प्रयास करते हैं. इनमें कुछ प्रमुख आतंकी संगठन निम्नलिखित हैं:

1. **लश्कर-ए-तैयबा :** पाकिस्तान की जमीन पर बना लश्कर-ए-तैयबा कश्मीर घाटी में सक्रिय एक आतंकी संगठन है जो पूरे कश्मीर सहित दक्षिण एशिया के सबसे बड़े आतंकवादी संगठनों में से एक है. हाफिज़ मुहम्मद सईद ने इसकी स्थापना अफगानिस्तान के कुनार प्रांत में की थी. वर्तमान में यह पाकिस्तान के लाहौर से अपनी गतिविधियां चलाता है, एवं पाक अधिकृत कश्मीर में अनेक आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर को संचालित करता है. इस संगठन ने भारत के विरुद्ध कई बड़े हमले किए हैं.

2. **जैश-ए-मुहम्मद :** जैश-ए-मुहम्मद पाकिस्तान में स्थित एक जिहादी उग्रवादी संगठन है जिसका एक ध्येय कश्मीर में आतंकियों को तैयार कर घाटी को अस्थिर करना है. इसकी स्थापना मसूद अज़हर नामक पाकिस्तानी कट्टरवादी नेता ने मार्च 2000 में की थी. इसे भारत में हुए कई आतंकवादी हमलो के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया है.

3. **हिज़बुल मुजाहिदीन :** हिजबुल मुजाहिदीन अप्रैल, 1990 में अस्तित्व में आया एक अलगाववादी संगठन है. इसका गठन मुहम्मद एहसान डार ने किया था. अक्तूबर 2016 में जम्मू-कश्मीर में ज़ाकिर मूसा को हिजबुल का नया कमांडर बनाया गया. इसने बुरहान वानी की मौत के बाद उसकी जगह ली थी. भारत सहित विश्व के कई देशों द्वारा इस संगठन को आतंकवादी संगठन करार दिया गया है.

4. **हरकत-उल-मुजाहिदीन :** हरकत-उल-मुजाहिदीन अल-इस्लामी, पाकिस्तान स्थित एक जिहादी समूह है जो मुख्य रूप से कश्मीर में सक्रिय है. समूह को ओसामा बिन लादेन और अल-कायदा के साथ सम्बन्धित माना गया है और समूह को भारत सहित विश्व के कई देशों द्वारा एक आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है. इसके पश्चात इस संगठन ने अपना नाम बदलकर हरकत-उल-मुजाहिदीन कर लिया.

5. **टी.आर.एफ. (द रेजिस्टेंस फ्रंट) संगठन :** पाकिस्तान ने दुनिया को दिखाने के लिए एक नई चाल चली और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा एवं हिजबुल मुजाहिद्दीन के आतंकी संगठनों पर कार्रवाई करते हुए प्रतिबंध तो लगा दिया परंतु दरअसल पाकिस्तान ने यह कार्रवाई सिर्फ दुनिया को दिखाने के लिए ही की थी. जबकि इन आतंकी संगठनों की जगह पाकिस्तान ने एक नए आतंकी संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट'

(टीआरएफ) की नींव भी रख दी. टी.आर.एफ. को पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैयबा एवं जैश-ए-मुहम्मद से जुड़ा आतंकी संगठन माना जाता है. टी.आर.एफ. के बारे में ऐसा माना जाता है कि इसके कैडर लश्कर और जैश से आते हैं.

6. **जमात-ए-इस्लामी** : जमात-ए-इस्लामी एक धार्मिक कट्टर संगठन है. घाटी की सुरक्षा और स्थिरता के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती है. हलांकि इस कट्टरपंथी जमात-ए- इस्लामी पर प्रतिबंध लगा कर इसे नेस्तनाबूद करने का प्रयास किया गया. जमात के खिलाफ़ की गई यह कार्रवाई कारगर साबित हुई है, लेकिन यह कट्टरता का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त नहीं है. कहा जाता है कि जमात-इस्लामी के कार्यकर्ता और वफ़ादार समर्थक समाज के कई धड़ों से जुड़कर स्लीपर सेल के रुप में कार्य कर रहें हैं जोकि सबसे बड़ी चुनौती बन रहे हैं.

घाटी में वर्तमान स्थिति : यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कश्मीर घाटी में आतंकवाद की स्थिति को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि घाटी में सुरक्षा की स्थिति पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले में बेहतर हुई है. विगत कुछ महिनों में हुई आतंकवादी गतिविधियों को देखते हैं तो इसमे लगातार कमी देखी जा रही है. सुरक्षा की स्थिति के आकलन का एक पैमाना हम मार्च/अप्रैल 2022 में यहाँ पहुंचे पर्यटकों की संख्या को मान सकते हैं. यह वक्त आम तौर पर पर्यटकों के आने का चरम समय होता है. इसके अलावा भी अन्य पैमाने हैं, जिनके आधार पर हम इस सकारात्मक आकलन की पुष्टि कर सकते हैं. उदाहरण के तौर पर सुरक्षा अधिकारियों का दावा है कि पिछले दस वर्षों में यहां आतंकी गतिविधियों का ढांचा इस वक्त सबसे कम हो गया है. जहाँ तक भौगोलिक स्थिति का सवाल है तो उत्तर कश्मीर, जो एक वक्त में आतंकवादी घटनाओं का केंद्र था, में हालिया वर्षों में काफी कम हिंसा देखने को मिली है. हलांकि अभी भी आतंकी गतिविधियों का केंद्र दक्षिण कश्मीर बना हुआ है. श्रीनगर में भी आतंकी गतिविधियां बढ़ी हैं, लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो हिंसा का स्तर काफी कम हुआ है. श्रीनगर और उसके आसपास सुरक्षा बलों की मौजूदगी अभी भी बनी हुई है, लेकिन राजधानी के शहर के बाहर यह काफी कम हो गई है.

घुसपैठ : वर्ष, 2019 के बाद से नियंत्रण रेखा के पास से होने वाली घुसपैठ में काफी कमी आयी है. एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष, 2022 में अप्रैल तक घुसपैठ की केवल दो ही कोशिशें की गईं, जिन्हें सशस्त्र सेना बल ने विफल कर दिया. भारतीय सेना के अनुसार पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में अब भी 100 से ज्यादा आतंकी लॉन्च पैड्स सक्रिय हैं. इसके बाद भी सीमा पार से नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ की गतिविधियों में वृद्धि नहीं हुई है. इसका कारण यह है कि कश्मीर में सुरक्षा कवच बेहद मजबूत है.

आतंकियों के द्वारा लक्ष्यित हत्याएं : अभी वर्तमान में कश्मीर घाटी में हो रही आतंकी घटनाओं को देखा जाए तो ऐसा लगता है कि यह लक्ष्यित हत्याओं को अंजाम दिया जा रहा है. हिंदू, सिख नागरिकों और पुलिसकर्मी तथा सुरक्षाकर्मियों को निशाना बनाया जा रहा है. इसके साथ हमें यह देखने को मिला है कि अधिकांश मामलों में सुरक्षा बलों ने इन हत्यारों को या तो गिरफ्तार कर लिया है या फिर मार गिराया है. वर्ष, 2019 में केंद्र सरकार के द्वारा किए गए संवैधानिक सुधारों के बाद अनेक आतंकी संगठन धर्मनिरपेक्ष सदृश्य नामों की आड़ लेकर उभरे हैं. इसमें रेसिस्टंस फ्रंट, एंटी-फासिस्ट फोर्स और कश्मीर टाइगर्स शामिल हैं. इसके अलावा कुछ इस्लामिक नामधारी मसलन अल क़िसास, अल जेहाद, मुस्लिम जंगबाज फोर्स और मरकजुल वाल अरशद का भी समावेश है. यहां यह उल्लेखनीय है कि यह सब पहले से मौजूद आतंकवादी संगठन जैसे लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के ही मुखौटा हैं. इसके बावजूद भारतीय सुरक्षा बलों को इनमें से कुछ संगठनों की पहचान कर उनके आतंकवादियों का खात्मा करने में सफलता मिली है. उदाहरण के तौर पर रेसिस्टंस फोर्स के कुल 31 आतंकी, जिसमें पांच कमांडर्स शामिल हैं, को सुरक्षा बलों ने मौत के घाट उतार दिया है. यह संगठन हालांकि अभी मौजूद है और सक्रिय भी, लेकिन अब यह निर्दोष एवं बेकसूर नागरिकों के खिलाफ छिटपुट हिंसा ही कर पा रहा है.

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार कश्मीर में इस वक्त 160 के करीब आतंकी सक्रिय हैं, जिसमें आधे पाकिस्तानी और आधे स्थानीय आतंकवादियों का समावेश है. उत्तर कश्मीर में सक्रिय आतंकवादियों में 75 प्रतिशत पाकिस्तानी आतंकवादी हैं. इनके प्रोफाइल में पहले के मुक़ाबले ज्यादा अंतर नहीं आया है. अधिकांश नए आतंकवादी गरीब परिवारों से और बेहद कम शिक्षा पाने वाले होते हैं.

वर्तमान में भले ही आतंकी गतिविधियों में कमी देखने को मिल रही है परंतु अभी भी घाटी में आतंकवादी गतिविधियां देखी जा सकती है. इसका मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों में दहशत तथा डर का माहौल कायम करना है. हालांकि इन सब के बावजूद भी अब घाटी में आतंकवादियों के लिए ज्यादा जगह नहीं बची है तथा हम उम्मीद करते हैं कि हमारे जाबांज सुरक्षा बल जल्द ही घाटी को आतंकवाद से मुक्त करने में सफल हो जाएंगे.

कुमार चंदन सिह
क्षे.का. पटना

Ankush Kumar Gupta
MD/Owner of Imperial Hotel, Katra

M/s Hotel Imperial - A unit of A-one Guest House is incorporated in 2013. My Company is dealing with Katra Branch since 2015 with satisfactory conduct. The Hotel Unit is registered and is situated at Railway Road Katra. I was born and brought up in Katra and I an the owner of the Unit. I completed my B.C.A from Jammu University in 2013. After completing my graduation my vision was very clear to expand my inherited business and to do so I chose Katra Branch of Union Bank of India as my banking partner.

My Unit is engaged in Hospitality Business and enjoying good market reputation started with the aim to provide best hospitality service in the town so that tourists who come to the holy city of Katra and pay obeisance to Mata Vaishno Devi Shrine should return with unforgettable experiences. With a vision to provide the best possible hopitality service to the tourists, we set up M/s Hotel Imperial – A unit of A-one Guest House.

My entire family has maintained a healthy relationship with your Bank. Other than this hotel unit, I am also running another hotel "Gupta Palace" which is also in Katra. "Gupta Cloth House" is one of the famous shops in the town running satisfactorily. We trust your Katra branch with accounts of all our firms. I and wish to continue banking with your Bank lifelong.

- Ashray Mahajan, Katra Branch

पंकज महाजन
ग्राहक-छन्नी हिम्मत शाखा

पंकज महाजन यूनियन बैंक ऑफ इंडिया छन्नी हिम्मत शाखा के पिछले दस वर्षों से ग्राहक हैं. वे कहते हैं कि 'मेरा छन्नी हिम्मत शाखा में महाजन ट्रैडर्स के नाम पर चालू खाता है. जब मैंने अपना व्यापार शुरू किया था तो इसे छोटे स्तर पर किया था परंतु बैंक के वित्तीय सहयोग के कारण आज व्यापार बहुत अच्छा चल रहा है. मैंने शाखा से हर प्रकार की सुविधाओं का लाभ उठाया है जैसे बचत खाता, गाड़ी के लिए ऋण, व्यापार ऋण, गोल्ड लोन, SUD लाइफ आदि. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता से मुझे मेरा व्यापार विस्तार करने में मदद मिली है. मेरे पिताजी का भी भगवती ट्रेडर्स के नाम से इसी शाखा में खाता है और उनकी पच्चीस लाख की सीसी लिमिट चल रही है. बैंक ने समय समय पर मेरे व्यापार को बढ़ाने व विस्तार करने में मेरी मदद की है. छन्नी हिम्मत शाखा के सभी कर्मचारी-अधिकारी बहुत अच्छे और सकारात्मक व्यवहार से कार्य करने वाले हैं. मुझे यहाँ पर बैंकिंग करने में कभी भी कोई दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा है. शाखा प्रबंधक श्री आदित्य महाजन का व्यवहार ग्राहकों के प्रति और बैंकिंग सेवाओं के प्रति काफी सकारात्मक है. मैं आगे भी बैंक द्वारा समय समय पर जारी की जाने वाली योजनाओं में प्रतिभागिता करूंगा. मैं दुआ करता हूँ कि बैंक खूब तरक्की करे व आगे बढ़े.'

- मोनिका भट्ट, छन्नी हिम्मत शाखा

Ajaz Ahmed
Managing Director
Kashmir Motors/ JK Stationeries

I am very thankful to the Union Bank of India Lal chowk Srinagar established in 1971. We have also opened an account here and after one year we have being sanctioned a CC limit of Rs. 25000. We have been working very hard in the last 50 years and the bank has proved very lucky for us. Today we are leaders of many national as well as multinational companies as :-

1. Honda India power products Ltd.
2. V. E. commercial vehicles private limited (Eicher Group)
3. TVS motor company limited
4. Kinetic green energy and power solutions limited
5. Honda Motorcycle and scooter India private limited
6. Exide industries limited

Today our turnover is very good and is still our main branch Union Bank of India, Lal chowk Srinagar branch.

Thanks to the officers and the staff whom we have been dealing with in these 50 years. We congratulate Union Bank of India Lal Chowk branch in this silver jubilee year of 50 years business with Kashmir Motors and JK stationers.

- Baljit Singh, Srinagar Branch

संजीव कुमार
(एमआरएफ़ टायर्स)
ग्राहक-ऊधमपुर शाखा

मैं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा ऊधमपुर में वर्ष 2012 से ग्राहक हूँ. मैं बैंक की सेवा से पूर्णत: संतुष्ट हूँ. मैंने बैंक से 2018 में 24.90 लाख की सीसी लिमिट ली थी. बैंक के सहयोग से मेरी एमआरएफ़ टायर्स की फ्रेंचाईजी ठीक ढंग से चल रही है. बैंक ने बिना कोई दिक्कत के मुझे सीसी लिमिट प्रदान की थी. बैंक द्वारा प्रदान की गई सीसी लिमिट से मेरा कार्य अच्छा चल रहा है. इसके लिए मैं बैंक के प्रबंधन का शुक्रगुजार हूँ. साथ ही साथ शाखा के स्टाफ का भी शुक्रिया अदा करता हूँ कि वे संतुष्टिपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रहे हैं.

- समीर जी फ़ोतेदार, ऊधमपुर शाखा

Anubhav Dutt
MD (VD Advertising)

V. D. GROUP INCORPORATED in the year 2005 the group started with the business of outsourcing of advertising jobs. With gradual pace and loan facility from the bank, V D Group has diversified business interest viz advertising and branding (V.D. Advertising Co.) and renewable energy (V.D. Motors) with offices in J&K and Himachal. Union Bank of India has been instrumental in this journey of growth of our business. I Anubhav Dutt, the Managing Director of the group do acknowledge the unconditional support we have had from the bank. We enjoy a total exposure limit of Rs 60 Lacs from the Union Bank of India. The never ending & encouraging support we enjoy with the bank has been pivotal in our business growth. It is pertinent to mention that each and every member of the bank has a humane approach of dealing with the customers thus making our bond stronger. I take this opportunity to thank Union Bank of India for their support. Each & every member of the bank lives up to its motto and tag line "Good people to bank with"

- Pushwindra Raina, Jammu Main

Moti Lal Zutshi / Nancy Zutshi
Kunjwani Baipass,
Jammu branch customer

It gives me to start immense pleasure that I am a satisfied customer of Union Bank of India for the last 43 yrs. In 1979 I opened a savings bank account in Union bank situated at Court Road Srinagar. At that time I was working in a renowned Travel Agency viz Sita World Travel. Since then we were regularly dealing with Union Bank of India even we shifted thoush to Jammu. At present I am a premium A/C holder of Union Bank of India.The present branch manager Mr Brij Lal is very helpful and a cordial persion. I salute your bank and higher officials and wish you great progress.

- Brijlal, Kunjwani Bypass Branch

Rinchen Dorje
MD / Owner, Hotel
Togochey, Chubi Road
Leh Ladakh 194101

I am running hotel Togochey since 2016 in Leh Ladakh. When I was planning to start my hotel business I availed a loan from one of the financial institutions at a very high interest rate. After a few days Union Bank of India opened its very first branch in Leh in August 2021. I was introduced to the bank through a friend and later I opened a saving Bank account and liked the customer service and attractive products and interest rates. My hotel loan was taken over by Union Bank and the same was sanctioned within a very short time at a good interest rate. I have had the best banking experience doing business with Union Bank of India.

- Stanjin Neema, Leh Branch

तेजिन्द्र सिंह
ग्राहक-पुंछ शाखा

मैं तेजिन्द्र सिंह पुंछ में Tejindrer Fruit & Vegetable की दुकान चलाता हूँ. मैं यूनियन बैक ऑफ इंडिया से पिछले पाँच सालों से जुड़ा हुआ हूँ. पुंछ जैसी मध्यम जगह पर व्यवसाय करना चुनौतीपूर्ण कार्य है. फिर भी बैंक के सहयोग से यह संभव हो पा रहा है.

मैंने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से करीब पाँच साल पहले दो लाख की सीसी लिमिट लेकर अपना व्यवसाय शुरू किया था. व्यापार में वृद्धि होने पर मैंने अपनी सीसी लिमिट बढ़वाकर दस लाख करवा ली है. बैंक हर कदम पर सहयोग प्रदान कर रहा है. आसपास में पहाड़ियों से घिरे हुए शहर पुंछ में फल और सब्जी के व्यवसाय में काफी संभावनाओं के चलते मैंने यह व्यवसाय शुरू किया था जो बैंक के सहयोग से भली भांति चल रहा है. बैंक से सीसी लिमिट लेने में मुझे कोई परेशानी नहीं आई व शाखा के स्टाफ से सहयोग मिला. इसके लिए मैं बैंक की शाखा व स्टाफ का शुक्रिया अदा करता हूँ.

मैं बैंक की समय समय पर लाई जाने वाली योजनाओं का लाभ उठाता हूँ. बैंक की पुंछ शाखा का स्टाफ अपने ग्राहकों से बहुत बढ़िया से पेश आता है. मैं बैंक की तरक्की की कामना करता हूँ.

- अंकित महाजन, पुंछ शाखा

मोहम्मद शौकत
ग्राहक-पुंछ शाखा

मैं मोहम्मद अजीम छोटी सी चाय की दुकान चलाता हूँ. अभी हाल ही में मैं यूनियन बैंक से जुड़ा हूँ. मुझे अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री मुद्रा ऋण की आवश्यकता थी. इधर उधर काफी भटकने के बाद मुझे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से बिना किसी परेशानी के पचास हजार का मुद्रा ऋण मिल गया. अपनी इसी ऋण सहायता से मैंने चाय की दुकान शुरू की है जो अच्छे से चल रही है. मैंने बैंक की आर्थिक सहायता से अपनी दुकान में सामान भी डाला है व आगे मैं व्यवसाय में वृद्धि करना चाहूँगा. मेरा मानना है कि व्यवसाय चाहे छोटा हो या बड़ा, अगर समय पर आर्थिक सहायता मिल जाये तो अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने में कोई दिक्कत नहीं होती है. हमारे देश में अपने खुद के व्यवसाय के लिए मुद्रा ऋण सबसे बेहतर है जो मुझे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की पुंछ शाखा से मिला. इसके लिए मैं बैंक की शाखा का शुक्रिया अदा करता हूँ. मैं बैंक की समय समय पर लाई जाने वाली योजनाओं का लाभ उठाता हूँ. बैंक की पुंछ शाखा का स्टाफ अपने ग्राहकों से बहुत बढ़िया से पेश आता है व यहाँ के शाखा प्रबंधक श्री जितेंद्र सिंह जी का व्यवहार बहुत अच्छा है. मैं बैंक की तरक्की की कामना करता हूँ.

- जितेन्द्र सिंह, पुंछ शाखा

Industrial development in Jammu and Kashmir

Its Jammu and Kashmir shares the joint crown of India with extravagant beauty of Himalayas. The geographical area of Jammu and Kashmir is 2,22,236 square km.

Kashmir is famous for its natural beauty and has often been referred to as the Switzerland of the East. Kashmir is well known for its handicrafts, its shawls and carpets. For establishment of industries, connectivity plays an important role and Jammu and Kashmir has excellent connectivity. The Government of India upgraded Srinagar airport which connects internationally worldwide. Northern Railway connects Udhampur and through local trains it connects Kashmir to Baramulla and National highways 1-A connects the capital cities of Srinagar and Jammu with the rest of the country.

The state of Jammu Kashmir is one of the most beautiful part of the world and is blessed with a salubrious climate. Natural factors are more conducive for handicrafts, village and small scale industries and less to large and heavy industries. However, Jammu and Kashmir has a very strong handicraft sector with its shawl, carperts paper mache and wood carving products being popular not only in India but across the world.

Jammu and Kashmir is heavily dependent on its tourism industries. The government is trying to build an industrial atmosphere in the state by inviting leading industries of the country. However, the state faces severe terrorism threats and insurgencies. The people of the state need jobs and since the industrial process is time taking, only small scale industries of Jammu Kashmir can help to generate employment that will be helpful for the young generation. Some of the most important industries are silk textile, carpet making and woolen textile, foresting industries, agro based industries, paper mache, cement industry, industrial complex. Textile is one of the most important industries. Kashmiri silk goods are renowned the world over. Kashmir known as the 'Heaven on Earth' has a tremendous opportunity for local youth who aspire to become entrepreneurs.

Kashmir is largest producer of apples, cherry, walnuts, saffron (one of the most expensive spice globally) Kashmir is also famous for willow bats used in the game of cricket industrial.

The industrial sector has been declared as the growth engine of Jammu and Kashmir besides industrial providing employment to the educated. At present 51 industrial estates and many more are in the process of being developed across the state.

Industries fall under the secondary economic activity. To undertake the manufacture of goods, inputs in the form of capital, labour, power and raw materials are required.

The location of an industry, thus, largely depends on the availability of inputs. The establishment of industry is also influenced by the general climatic conditions, weather, industrial inertia, historical accident and the government policy.

The state of Jammu and Kashmir, though rich in water and forest resources, has very few metallic mineral resources. The non-availability of iron-ore, copper, good quality coal, petroleum and natural gas are the major constraints in the development of basic industries and manufacturing centres.

Nevertheless, the Kashmiris have an age-old tradition in the manufacturing of carpets, silk textiles, shawls, raffle, woodwork and handicrafts. In the rural areas, leather industry, oil-crushing, pottery, blacksmith, carpentry, paper machine, willow-wicker, soap making, food processing, cricket bat and toys making are some of the important industries which provide full or part-time employment to the people.

The Kashmiris have earned a great reputation as artisans and were celebrated in the old days for their skill in art and manufacturing. The chief centre of Kashmiri industries is Srinagar, but other localities are also famous for their special manufactures. For example, Islamabad (Anantnag) churns out excellent embroidery work; Kulgam is famous for lacquered woodwork.

Bijbahera has a reputation for its excellence in wood-carving, while the villagers of the Zainagir Circle are famous for their

soft woolen cloth. Every Kashmiri seems to excel as a weaver, and the home-spun cloth woven in the winter is appreciated all over the world.

1. Silk Textile : Silk textile is one of the most ancient industries of the state. Kashmiri silk-goods are renowned all over the world for their quality, colour and shades. There are historical evidences which prove that silk fabrics used to be exported to Persian, Greeks and Roman empires. During the medieval period, the Mughals were great lovers of silk clothes. They patronized this industry in the Valley of Kashmir.

According to the data of 1995-96, silk industry and its allied activities provided employment to about 2.50 lakh people and, contributed about Rs. six crores (60 million) to the income of the state. It also provides raw material for shawl making, carpet, gabha, namda, hosiery and embroidery making.

There are two silk factories in the state. One of them is located at Jammu. The Department of Sericulture Development which produces improved varieties of silkworms, takes care of the mulberry trees. The Rambagh Silk Factory was established in May 1897 by Raja Ranbir Singh under the supervision of Malton.

2. Carpet-Making and Woolen Textile: Carpet-making is one of the oldest industries in Kashmir. Kashmiri carpets are famous all over the world for their excellent designs and natural patterns. Though carpets are made in almost all the towns of the valley, their major factories are in and around the city of Srinagar.

In the manufacturing of Kashmiri carpets, the warp is drawn in cotton, while the leaves and texture, is done by wool, silk and synthetic fibres. The number of knots per sq cm/inch determines the quality and value of carpet, together with the quality of yarn, dye-stuff and finish. Kashmiri qaleens (carpets) are manufactured by government undertakings as well as by private manufacturers.

Some of the important carpet manufacturing centres in Srinagar are, the Cottage Industry Exposition, C.A.E. Carpet Factory, the Kashmiri Carpet Factory, the East-India Carpet Factory, the Oriental Carpet Factory and the John Carpet Factory.

In most of these factories, children and teenagers from the poor families are employed. These workers get low wages. Having inadequate nourishment, they work under unhygienic conditions. Consequently, their health, efficiency, literacy and education are adversely affected.

About 75 per cent of the total carpets production is exported to the countries of Middle East and North-West Europe (U.K., France, Netherland, Germany, Denmark, Italy and Belgium). Carpet export is one of the leading item of foreign exchange.

Carpet-making has many allied and ancillary crafts and cottage industries. Namda and Gohha are the special types of woolen carpets, generally used by the Kashmiris to combat cold. Namda is a type of felt made of raw wool and cotton mixed in different proportions according to their grade and quality.

3. Forest-based Industries: The state of Jammu and Kashmir has about one-third of its total area under forest. Most of the forest species in the higher altitudes belong to the conifers, while in the lower altitudes, pine and deciduous broad-leaves trees are more prominent. These forests provide raw material to a number of forest- based industries. Paper, pulp, match, delicate boxes, sports goods (cricket bats), furniture, toys, artifacts and decorative pieces are some of the agro-based industries well developed in the Valley of Kashmir.

4. Agro-based Industries: The state of Jammu and Kashmir has an agrarian economy. In fact, agricultural products not only yield over 50 per cent of the state Gross Domestic Product (GDP), it provides raw materials to a number of industries. Fruit- canning, edible oil extraction, flour mills, rice-husking factories, bakery and alcohol preparation draw their raw materials from agriculture.

The plain areas of the Jammu Division and the Valley of Kashmir produce huge quantities of rice. Over 60 per cent of the total population of the state is rice eating. Consequently, there are numerous rice-husking factories in the state, situated mainly in smaller towns of the rice growing areas.

The rice mill of Barbarshah (Srinagar) is quite large. A modern rice factory was established at Laithpora (near Pampore) in 1981. The rice husk and rice bran are used for the extraction of fatty oil which finds application in soap-making industry.

The Valley of Kashmir has large tracts under apples, almond, walnut, cherry, peach and pear orchards. Transportation of these perishable fruits to the distant markets by roads is quite expensive. The processing of fruits, making jam, jelly, juice, etc., is an important industry in the state.

Numerous fruit processing and canning factories have been located in Baramulla and Anantnag districts. The Food Corporation of India (FCI) has to take initiative towards the establishment of more food and fruit processing factories.

5. Papier Mache: Papier mache is made from the pulp of paper. The lacquer-workers apply their beautiful designs to smooth wood. These designs are very intricate, and the drawing is all freehand. The pen-boxes (qalamdan), tables, cabinet, trays, boxes are the main articles of papier mache. Papier mache still has great national and international market. After 1989, papier mache suffered as the disturbed political conditions discouraged the arrival of tourists. Papier

mache industry is largely confined to the City of Srinagar and its adjacent areas.

Kashmir is well known for the production of leather goods. In many of the villages around Srinagar, Islamabad (Anantnag), Baramulla and Badgam, hides are prepared by the Watals and then are sold in the markets of Srinagar where they undergo a refining process.

Skins are brought in raw, and are prepared in the city. It is claimed for the leather of Srinagar that saddles last forever. Kashmir has a good reputation in furries. The recent law for the protection of game, under which the sale of skins and horns is prohibited, has curtailed the business of furries. In addition to these, the Kashmir and Jammu artisans have great skill in the manufacturing of copper utensils, shawls, pottery and basket making.

6. Cement Industry: The raw materials for the manufacture of cement are calcareous and argillaceous materials. Mixed in suitable proportions to form the raw mix limestone, gypsum, coal; bauxite and clay are the main ingredients of this industry. Limestone and gypsum are available in large quantities in Bara¬mulla and Anantnag districts

The Wuyan Cement Factory is the largest cement supplier to the Valley of Kashmir. This cement factory was established in 1962 to which raw material is supplied from Uri and Baramulla areas. This factory provides employment to about 275 workers and produces about 2,000 tonnes of ce¬ment annually. In 1982, a large cement factory was established at Khrew. This factory is known as the J & K Cements Ltd. Khrew. There are more than 500 workers employed in this factory producing about 600 tonnes of cement a day.

There are several chemicals manufacturing units, tiles factory (Pam- pore), lignite briquetting plant (Shalateng) glass-making and electric goods manufacturing units in the state. The Hindustan Machine Tools watch factory was established at Zai- nakot in the 1970s. There are about 1,500 workers who are employed in this factory. It produces about five lakh watches annually. The Indian Telephone Industry has been established at Hyderpora (Srinagar). It is a branch of the Indian Telephone Industry, Bangalore which produces telephone parts and accessories. It is a small unit in which about 150 persons are employed.

7. Industrial Complexes: Since 1980, the Government of Jammu and Kashmir has been paying adequate attention towards the establishment of agro-based, forest-based and mineral-based industries. The State Industrial Development Corporation has established a number of industrial complexes at Rangreth, Khunamoh and Doabgah in Kashmir and at Bari Brahman in Jammu.

The Rangreth factory assembles television sets, radios, transistors, electronic clocks, stabilizers, electric blankets, tape recorders and jewels for watches. Joinery articles, matches, automobiles batteries and tiles are manufactured at Khonamoh.

Bari Brahmana has become an important industrial complex of Jammu, producing detergents, resin products, vanaspati, steel rollings, scooters, textiles, sunmica, paper, pistons, hosiery, electric goods, light machines, rubber and plastic goods, chemicals, drugs, paper, printing, and transport goods.

In the towns and villages of the state. leather processing, shoe-making, oil pressing, pottery blacksmithy, carpentry, bee-keeping, basket-making, soap-making, fruit preservation etc. are the main cottage and small scale industries in which the rural population are finding employment.

The state of Jammu and Kashmir has not seen much of industrial growth. The industrial underdevelopment is mainly due to the non-availability of basic minerals and lack of infrastructural facilities. Industrial complexes are however, slowly emerging.

The development of new power projects, widening of road-network and progress of the state on the railway map of the country have helped in creating a conducive atmosphere for the growth and development of industries. A number of industrial areas have been set up and various steps are being taken to help the development of industries. The number of registered factories has gone upto 876 and the small scale industries to about 5600 in 1998.

Looking for most demandable business idea for startups : Tourism in Jammu and Kashmir is the Crown of India it is rich in culture, religion, spot adventure, and sightseeing. It is famous for its snow clad mountains bubbling streams, flowers, meadows, colourful orchids and the rare fauna. All such features of Jammu and Kashmir have always attracted the tourists from all over the world. Tourism has been the most important and one of the major contributors of the states economy.

Opportunities in Jammu and Kashmir : In Jammu and Kashmir there is tremendous opportunities for business entrepreneurs. Tourism there is a scope of hospitality like tour and tourism like hotels, restaurants and other things which attracts tourists across the world. It will also help to generate employemt for localites.

Neeraj Kumar Kashyap
STC, Visakhapatnam

प्रतियोगिता क्र. 163

नई प्रतियोगिता / New Contest

Contest No. 163

फोटो - **कुमार धीरज जी.**
अडाजन शाखा, सूरत

स्लोगन लिखें / Write a Slogan

क्या यह तस्वीर आपको कल्पना की उड़ान भरने या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की-बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरु करें और इस तस्वीर से संबंधित बढ़िया-सा स्लोगन, एक या दो पंक्तियों में लिखकर क्षेत्र के संवाददाता को ई-मेल करें.

सभी संवाददाता अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को समेकित कर निर्धारित समय सीमा में हमारी ई मेल आईडी uniondhara@unionbankofindia.bank पर प्रेषित करें.

शीर्षक अंग्रेजी या हिंदी में भेजा जा सकता है. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.

यदि आपका स्लोगन हमारे स्तर पर चुना जाता है, तब आपको पुरस्कृत किया जाएगा.

जल्दी करें, प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की **अंतिम तिथि 31 दिसंबर, 2022 है**.

संपादक

Does this photograph fire your imagination or spontaneously inspire you to express your feelings? Then what are you waiting for? Start keying in and email your superb, classy slogan in one or two lines relating to the photograph to the correspondent of your Region.

All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region within stipulated time and send them to our email id uniondhara@unionbankofindia.bank

The captions can be sent in English or Hindi. Both the categories have different prizes. Please note that this contest is open only for the working staff members of the Bank.

If your slogan is chosen, then you will be awarded a prize.

Hurry, as the last date to receive entries is **31st December, 2022**.

Editor

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्रमांक 162 - 'स्लोगन लिखे'

पुरस्कार	हिंदी खंड	अंग्रेजी खंड
प्रथम	**आलोक चंद्र गुप्ता,** क्षे.का., कानपुर	**मनीष,** क्षे.का., बठिंडा
द्वितीय	**रेणु बाला,** क्षे.का., बठिंडा	**प्रदीप गुप्ता,** क्षे.म.प्र.का., भोपाल
तृतीय	**एस आर शंकर,** क्षे.म.प्र.का., चेन्नई	**महेंद्र सरन,** क्षे.म.प्र.का., भोपाल
प्रोत्साहन	**पूजा वर्मा,** क्षे.का. बेंगलूरु (दक्षिण)	**पलक ठक्कर,** क्षे.का. गांधीनगर

निजात

दस दिन पूर्व पांव में मोच आई तो मुझे फिर खाट पकड़नी पड़ी. मोर्निंग वॉक से लौटते समय जाने कैसे पांव गड्ढे में पड़ गया. दो माह पूर्व कोहनी उतरी तो पन्द्रह रोज पट्टा बंधा था. उसके पहले भी जाने कितनी बार भुगतना पड़ा है. सात वर्ष पूर्व पांव की हड्डी टूटी तब तीन माह खाट में पड़ा था. तब तो सुमित्रा थी, बिचारी ने बहुत सेवा की, पर अब तो बेटे-बहू ऐसे देखते हैं मानो बार-बार पूछ रहे हों, ''देखकर नहीं चल सकते क्या? मम्मी जब से ऊपर गई है, ऊपर ही देखते रहते हो !''

ये बला जाने कैसे आ गई? ऊपर से बैरी बुढ़ापा. वाकई जीने का समय तो मात्र जवानी है. यौवन सर्वत्र सुरभि बिखेरता एक पल्लवित वृक्ष है, लेकिन बुढ़ापा ऐसा ठूंठ है जो पल-पल गिरने का इंतजार करता है. जिस अवस्था में शरीर ही साथ न दे तो और कौन देगा?

सांझ से घर में अकेला पड़ा हूँ. बेटा-बहू नौकरी कर आठ बजे तक आते हैं. लेटे-लेटे अपने दुर्भाग्य को कोस रहा हूं. कुछ पल आंखें मूंदी तो जाने किस लोक में चला गया. आंखें खोली तो सामने एक आकृति देखकर हैरान रह गया. काली छाया-सी यह आकृति मुझे स्पष्ट तो नहीं दिखाई दी, पर निश्चय ही कोई तो था? मैंने चीखकर पूछा, ''तुम कौन हो?''

पहले तो उसने इधर-उधर छुपने का प्रयास किया फिर जाने क्या सोच कर सम्मुख होकर बोला, ''मैं दुख हूँ. तुम्हारी याद आई अत: पुन: तुम्हारे समीप चला आया.'' उसकी तेज आवाज से कमरा गूंज उठा.

''तुम फिर चले आए? तुम्हें क्या मैं ही दिखता हूँ? कितनी बार मैंने तुम्हें मार-मार कर भगाया, पर तुम हो कि हर बार पतली गली से चले आते हो ! समय-असमय कुछ नहीं देखते. इतना उपहास, धिक्कार एवं दुत्कार मिलने पर भी कोई क्या किसी के यहां पुन: आता है? इतना ही नहीं, तुम आकर चाती की तरह चिपक जाते हो. दुनिया में और भी तो हैं?'' बिना सांस रोके मैं बोलता गया.

''आप तो खामख्वाह नाराज हो गए. मैं तो सर्वत्र समान रूप से विचरता हूँ. आप जैसे विद्वान् तो फिर भी मेरे प्रभाव को दर्शन, चिंतन एवं अध्यात्म के बल से क्षीण कर देते हैं. अन्यत्र तो मेरे प्रवेश करते ही त्राहिमाम् हो जाता है. खैर! अब कोसो मत. आया हूँ तो कुछ समय तो रहूंगा.''

''अरे! तू गया कब था? मुझे तो सम्पूर्ण जीवन यात्रा में तू दांये-बांये नजर आया. बचपन में माँ चल बसी, कुछ बड़ा हुआ तो पिता चले गए. उसके बाद नौकरी प्राप्त करने में कितनी मशक्कत हुई ! विवाह कौन-सा आराम से हो गया? अनाथ को कोई लड़की देता है क्या? वो तो भला हो सुमित्रा के पिता का, जिन्हें मुझ पर दया आ गई. वह थी तब तक तुझसे लड़ भी लेता था, लेकिन तेरी कृपा से वह भी पांच साल पहले स्वर्ग सिधार गई. अब तो निपट अकेला हूँ. तुझे क्या पता है पत्नी के साथ तेरा प्रभाव आधा एवं उसके बिना दस गुना हो जाता है. बेटे-बहू सेवा करते हुए ऐसे देखते हैं जैसे कह रहे हो, ''अब और कितना जिओगे? मम्मी ऊपर अकेली है, आप भी चले क्यों नहीं जाते !''

''आप तो लट्ठ लेकर पीछे पड़ गए. ऐसे कह रहे हो जैसे मेरा भाई सुख कभी आपके यहां आया ही नहीं?''

''उसका आना तुझे कब सुहाया दुर्मुख! वह तो घड़ी भर सावन की फुहार की तरह कभी-कभी आता था. उसे तूने टिकने कब दिया? उसके साथ क्षणभर सांस लेता उसके पहले तो तू आ जाता. इतना ही नहीं, जब भी आता, पसर कर बैठ जाता. मुझे तो लगता है तेरी सुख से सांठ-गांठ है. घड़ी भर उसको भेजकर तू हरी-हरी चरवाता है फिर हाथ में कटार लिए ऐसे आता है जैसे बकरा काटने कसाई !''

''इतना भी नाराज क्यों होते हो? माना कि मैं जीवन भर आपके इर्द-गिर्द रहा, लेकिन क्षणभर ठण्डे दिमाग से सोचकर देखो कि अगर मैं न होता तो क्या आप इतना संघर्ष करते? मैं न होता तो क्या आपके भीतर आस्था का प्रादुर्भाव होता? क्या आप प्रभु को तहे दिल से पुकार पाते? क्या आपके अनुभव इतने विलक्षण होते? मुझे इतना न कोसो ! चिंतन की मथनी में मथकर मैंने आपके कितने विकारों को बाहर किया. मैं न होता तो आप घमंडी, आततायी एवं दुराचारी बन जाते ! यह मेरा ही अंकुश एवं भय था जिससे सहमे आप सदैव सत्पथ पर रहे. मेरी वजह से ही आपमें गांभीर्य का प्रादुर्भाव हुआ. मेरे कारण ही आप में युक्तियुक्त बोलने की कला आई, आपके कर्मबंधनों का विमोचन हुआ. मेरी वजह से ही आपकी आत्मा उच्चतर सोपानों पर चढ़ी. मैंने ही विटामिन की तरह आपकी आत्मा का पोषण किया. मैं न होता तो इस भौमनरक से आत्मोत्सर्ग की दुर्लभ यात्रा आपको कौन करवाता? मेरे त्याग का सिला आप यूं धिक्कार से दे रहे हैं?

उसके गूढ़ वचन सुनकर क्षणभर के लिए मैं सहम गया. वह और कुपित न हो जाए, अत: ठण्डे होकर प्रश्न किया, ''यह भौमनरक क्या है भाई?''

''भौमनरक यानि यह पृथ्वी, भू-लोक नरक है. यहाँ वे आत्माएं ही गिरती हैं जिनके पुण्य क्षीण हो गए हों. भांति-भांति की यातनाएं देकर मैं ही उनके पापों को काटता हूँ. मेरे बिना कोई भी पुण्यरथ पर चढ़ ही नहीं सकता .....''

उसकी बात पूरी भी न हुई थी कि मेरे पांव में पुन: दर्द हुआ. शायद बातों-बातों में एक पांव पर दूसरा पांव आ गया. दर्द से कराहते हुए मैंने उसे पुन: आडे हाथों लिया, ''अब बस कर! ज्यादा ज्ञान मत बघार! कुछ बताना ही चाहता है तो सिर्फ यह बता कि तुमसे निजात कैसे सम्भव है?''

मेरी बात सुनकर उसने पहले तो अट्टहास किया फिर रुककर बोला, ''मुझसे निजात तो तुम्हें मेरी मां ही दिला सकती है. तुम कहो तो उसे बुलाऊं?''

''हां-हां, तुरंत बुलाओ.'' मैं अधीर होकर बोला.

तभी एक और काली आकृति कमरे में प्रविष्ट हुई. वह दु:ख की काली आकृति से कई गुना विकराल एवं भयानक थी. उसे देखते ही दु:ख ने चरणस्पर्श किए तो उसने कंधों से पकड़कर उसे प्रेमपूर्वक उठाया, उसका माथा चूमा, फिर आशीष देते हुए बोली, ''पुत्र! अपनी माँ के लिए तुमसे अधिक त्याग करने वाला कोई पैदा नहीं हुआ. तभी तो मैंने तुम्हें चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया है. जाओ! तुम अजर रहोगे, अमर रहोगे !''

मातृ आशीर्वाद से उपकृत दु:ख मुस्कुराता हुआ कमरे से निकल गया. लेकिन मेरी गति तो सांप-छछूंदर वाली थी. एक आकृति ने छोड़ा तो दूसरी सामने आ गई. मैं विह्वल होकर बोला, ''अब तुम कौन हो?''

''मृत्यु !'' इतना कहकर उसने मुझे अपने आगोश में ले लिया.

हरिप्रकाश राठी
सेवानिवृत्त, जोधपुर

काल भैरव
एक धर्म निरपेक्ष देव

वेदों से या फिर कहो, वैदिक काल से 'काल भैरव' एक धर्म निरपेक्ष शक्तिशाली देव (Diety) के रूप में जाना व पूजा जाता है. वाराणसी में काशी विश्वनाथ के पहले काल भैरव की पूजा की जाती है. इन्हें काशी का कोतवाल (थानेदार) भी कहा जाता है. हर बड़े देवी मंदिर के पास काल भैरव का स्थान प्राय: अवश्य होता है इसीलिए कहा गया है कि सिद्धपीठ देवियों (Godesses) के 52 भैरव है. क्षेत्रीय भाषा में काल भैरव को भैरुजी व भैरव नाथ इत्यादि नामों से भी जाना जाता है. कहीं इनकी पूजा देवी पूजा के पहले होती है तो कहीं देवी पूजा के बाद ! उदाहरण के लिए प्रसिद्ध वैष्णो देवी मंदिर में माता के दर्शन के बाद ही काल भैरव की पूजा होती है. काशी विश्वनाथ बनारस में शिवपूजा के पहले काल भैरव पूजा जाता है.

काल भैरव धर्म निरपेक्ष क्यों कहलाता है, यह बताउंगा, क्योंकि मैं स्वयं काल भैरव का उपासक हूँ. यहाँ पूजा के लिए सर्वोतम लौंग, बतासा माना गया है. दूसरे मुख्य प्रसाद है'- लड्डू पान, इत्र गुलगुले (पुआ) पुड़ी, बाटी, बाकला (दाल) आदि. भैरव के बाल रूप को लांगुरिया कहते हैं, इसीलिए बच्चों की ड्रैस, पैंट, कमीज का जोड़ा तथा तौलिया, रूमाल इत्यादि भी भेंट किया जाता हैं. मांस, मदिरा का प्रयोग पूजा के रूप में धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है. यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई भी पूजा के लिए आते हैं. अब सभी धर्मों के लोग क्यों पूजते हैं, इसको समझाने का प्रयास करते हैं.

इन्हें संकटहर्ता तथा मंगलकर्ता माना जाता है. इन्हें माँ काली का पुत्र तथा शिव का अवतार भी माना जाता है. काशी के कोतवाल तो हैं ही. ये सुखदाता हैं. अत: कौन इनकी पूजा नहीं करना चाहेगा?

भय, डर को हरने वाले हैं, इसीलिए पूर्व काल में लड़ाईयों (Battles) के पहले माँ काली तथा उनके पुत्र काल भैरव की पूजा होती थी. जो भैरव माता से पहले पूजे जाते हैं, उन्हें अग्रणी भैरव कहते हैं. लांगड़ा बलबीर भी इन्हीं में से एक हैं. जोबनेर राजस्थान में राव राजपूत इनके उपासक हैं और पूजा भी करवाते है. पूर्व काल में दो सेनाओं के बीच युद्ध होने से पहले दोनों पक्ष काल भैरव व माँ काली की पूजा करते थे. काल भैरव ने शिव का भार कम करने के लिए स्वयं शिवजी का रूप धारण किया था. इनकी घोर गर्जना से डर तो दूर भागता ही है, अपितु मनुष्य के सभी मनोरथ भी पूर्ण होते हैं.

इनके सिर पर चंद्रमा विराजते हैं, जो हिन्दू, मुस्लिम तथा सिक्ख धर्म में विशेष स्थान रखता है. ईद का त्योहार, चाँद दिखने से संबंध रखता है. हिंदू धर्म में तो चाँद की बहुत महिमा है शरद पूर्णिमा पर चाँद की रोशनी में खीर पकाई जाती है. गुरु पूर्णिमा का संबंध सिक्ख व ईसाई धर्म से भी बहुत गहरा है. ईसाई लोग भी Full moon में नौका विहार तथा सैर सपाटे के लिए निकल पड़ते हैं. गणेश चतुर्थी पर चाँद नहीं देखते हैं पर करवा चौथ पर पत्नियाँ चाँद देखकर ही खाना खाती हैं.

भैरव दु:खों का नाश तथा मन को प्रमोदित करता है. निर्भय होकर इनका गुणगान करने वाला प्रसिद्धी तथा सभी निधियों को पाता है. इन्हें भूतनाथ भी कहा जाता है. भूतों से भला कौन छुटकारा नहीं पाना चाहेगा? इन्हें महाकाल का भी काल माना जाता है. इनकी सवारी श्वान (Dog) है. काल भैरव धैर्यवान व बलवान हैं.

पुराणों में वर्णित है कि भैरव मदपान करके शिव के गुणगान करते हैं. मद का मतलब शराब नहीं गहरे समर्पण से हैं.

"शंकर के अवतार कृपाला रहे चकाचक पी मद प्याला"

मद को दारू या शराब कहकर अनर्थ न करें.

काल भैरव अपने दंड से प्रहार करते हैं तो बड़े से बड़ा पाप भी नष्ट हो जाता है. इनके भजनों से आनंद व धन की वृद्धि होती है. इनका रूप कृष्ण की तरह काला है, क्योंकि यह काली के पुत्र है और राम-श्याम जैसे ही पूजनीय हैं.

एम. सी. राव
सेवानिवृत्त, नई दिल्ली

A passionate sport personality : Ramanjee

We all face hardships, but for many, the thought of losing our sight is a horrifying prospect. Despite facing immense difficulties as a result of vision loss, there are some people in the world who have overcome their disability to achieve amazing things. In this article, we highlight one of the most inspiring visually impaired employee of our organization Mr. Raman Ji, who did not only overcome his weakness but also converted it into his strength. He has played many national and international para games, and also won medals for our country. The story of India's Para Games National record holding sprinter and jumper and 4 time Asian Games participant is an awe inspiring one.

Ramanjee was born in the small village of Sanghopatti in Bihar with 100% visual impairment. The lack of educational facilities for the visually challenged in this small village led him being home bound till the age of 9 years. However, as fate would have it, a small survey team from Patna noticed him; and, took over the responsibility of educating him at the Patna Blind School. The intelligence and spirit of hard work in the young boy was clearly visible. The management allowed him to clear 4 classes in straight 2 years. In 2001, Ramanjee found himself in Delhi under the care of the Blind Relief Association (BRA) to further hone his talents. The young boy consistently stood first in his class and was a natural athlete. In 2004, after a lot of field training, the Blind Relief Association took him to the IBSA National Sports Meet where he bagged his first ever Gold Medal in 100m sprint running. In 2006, despite various challenges, he became one of the first 100% visually challenged athletes to represent India in the FESPIC Games (now known as the Asian Games) at Kuala Lampur in Malaysia. In 2012, he joined the then. 'Corporation Bank', now Union Bank of India. The following year, Ramanjee represented India on behalf of the Bank and Delhi State in the International and National Competitions. Ramanjee has full support and co-operation of the Bank in all his endeavors. Ramanjee has been felicitated by the then CMD. Mr. S.R. Bansal Of ECB for his splendid performance and achievement.

Q :- When and how did you join our bank?

I joined the bank in 2012 through IBPS recruitment process, with erstwhile Corporation Bank.

Q :- What fascinated you to play?

My inspired passion for sprinting and that's why I choose 100m race & long jump as a career in sports.

Q :- Who was your guiding star in your initial struggling days?

When I was in school, the sports department and my teachers guided me to in sports along with my studies.

Q :- Who is your Role Model?

My role model is Usain Bolt who has inspired me to run.

Q :- What piece of advise would you like to give to all Visually Impaired athletes?

My suggestion to the Visually Impaired athletes is first to embrace fitness as a mantra in your life.Acquire knowledge about various kinds of parasports & try to choose one of them as a profession along with your academics.

Q :- Any Expectations from the Bank management?

The Bank is doing splendid work for Visually Impaired employees and there are many initiatives taken to make the Visually Impaired more efficient & technically enabled at their job. As far as sports is concerned the bank is doing outstandingly for the para sports as well. I hope in future, we continue to get more opportunities so that para athletes can bring laurels to the Bank / Nation.

Q :- Any particular unforgettable incident associated with your art?

In 2013 when I was practicing for long jump, I had a severe injury, I thought I might quit sports, but my passion kept me geing accepting that the injury was a part & parcel of sports. I recuperated well and I started playing sports once again.

Sports Achievements / Awards

Participated Continuously in 4 Asian Para Games, 2006, 2010, 2014 & 2018

Performance at International Level:-

1. *Participated & got 4th place in Asian para Games-2018, Jakarta, Indonesia, 6th to 12th October-2018.*
2. *Won 1 silver & 1 Bronze medal in Sharjah 8th International Open Para Athletics Meeting 18th to 20th March 2018, Sharjah, UAE.*
3. *Won 1 Bronze Medal in World Para-Athletics Grand Prix-2018, (10th Fazaa Para-Athletics Championship-Dubai 2018) 13th to 16th March 2018, Dubai, UAE.*
4. *Participated & got 4th place in 7th Sharjah International Open Athletics Meeting-2017, 25th to 27th March 2017, Sharjah, UAE.*
5. *Participated in IBSA World Games-2015, 10th to 17th May 2015, Seoul, South Korea.*
6. *Participated in Asian Para Games-2014, 14th to 24th October-2014, Incheon, South Korea.*
7. *Won 1 Silver Medal in 4th Sharjah International Open Athletics Meeting-2014 (IPC Event), 20th to 25th February 2014, Sharjah, UAE.*
8. *Won 1 Silver Medal in IPC Athletics Grand Prix-2014, (6th Fazaa International Athletics Competition 2014) 20th to 25th February 2014, Dubai, UAE.*
9. *Participated in Asian Para Games-2010, 12th to 19th December-2010, Guangzhou, China.*
10. *Participated in 2006 FESPIC Games (Asian Para Games – 2006) 25th November to 1st December 2006, Kuala Lumpur, Malaysia.*

Performance at National Level:-

1. *Won 2 Gold Medals in Indian Open National Para-Athletics Championships-2019, 23rd to 24th September – 2019, SAI, Netaji Subhash Southern Centre, Bengaluru- 560056, Karnataka.*
2. *Won 1 Gold Medal in 21st IBSA National Athletics Championshiops-2018, 10th to 13th December-2018, New Delhi.*
3. *Won 2 Gold & 1 Silver Medal in Indian Open Para Athletics Championshiops-2018, 10th to 12t July- 2018, Bengaluru, Karnatka.*
4. *Won 2 Silver Medals in 18th Senior National Para Athletics Championshiops-2018, 25th to 29th March-2018, Panchkula, Haryana.*
5. *Won 2 Gold & 2 Silver Medals in 17th National Para Athletics Championshiops-2017, 31st March to 4th April-2017, Jaipur, Rajasthan.*
6. *Won 2 Gold & 1 Silver Medal in 20th IBSA National Sports Meet for the Blind-2016, 12th to 15th December-2016, New Delhi.*
7. *Won 2 Gold & 1 Silver Medals in 16th Senior National Para Athletics Championshiops-2016, 26th to 30th March-2016, Panchkula*
8. *Won 2 Gold Medals in 15th Senior National Para Athletics Championshiops-2015, 19th to 22nd March-2015, Ghaziabad, Uttar Pradesh.*
9. *Won 4 Gold Medals in 19th IBSA National Sports Meet for the Blind-2014, 13th to 16th December- 2014, New Delhi.*
10. *Won 2 gold & 1 Bronz Medals in 18th IBSA National Sports Meet for the Blind-2012, 11st to 14th December-2012, New Delhi.*

Q :- How was your childhood and what prompted you to choose 'track and field?'

According to my teachers & seniors, as a child I was very agile. Therefore very often they used to tell me about the track & field, thats when I gained interest and inclination towards the track & field.

Q :- Which track and field events did you represent?

I am a National record holder in long jump & 100 meter race and till date. I have represented the nation 9 times in the ASIAN GAMES and INTERNATIONAL OPEN ATHLETECIS MEET & WORLD CHAMPIONSHIP & 5 International and several National Medals.

Q :- Did you practice for the above races since the beginning?

I am pursuing the sport since the beginning and ever today, I practice in the morning & evening as well.

Q :- Can you say something about your Coaches and Mentors?

There have been many Coaches & Mentors who have trained me to do my best in the field of sports. Currently, I am training from a renowned coach; DRONACHARYA AWARDEE Dr. Satyapal Singh. As far as para sports is concerned he is the only para athlete coach who nurtured para sports since the beginning till date.

Q :- Can you mention some of the International events for which you have represented our country?

I represented India consecutively four times in the ASIAN PARA GAMES. I took part in the IBSA (International Blind Sports Association) world games that was held in Seoul (South Korea) and in 5 International Open Athletics meet.

Q :- How was your experience participating in these games?

Whenever I participate in any game, it is a new experience always. Overall my experience has been very good.

Q :- Apart from track and field, what are the other sports you are interested in?

On and off, I like to play chess.

Q :- Your greatest moment as an athlete?

When I won the 1st International medal in Dubai Open Athletics Meet in 2013.

Q :- What has been your greatest achievement till date?

I have won a gold medal in long jump in the 7th Sharjahan International Para Athletics Meet & I finished 4th place in the last ASIAN PARA GAMES, Jakarta, Indonesia.

Q :- What keeps you going?

My passion towards sports.

Q :- Tell us something about your family?

We are 4 siblings and I am the youngest. My father is a retired Head Master and my mother is a homemaker.

Q :- While playing, how do you take care of your fitness?

It is a very challenging task but to keep fit, I maintain a balanced diet plan and I focus on warming up and cooling down exercises.

Q :- How do you see the future of track and field for the Visually Impaired in India?

The future of track and field sports for those visually challenged in India is very bright. I struggled very hard during my initial days. Now the status of this discipline has become equal with the able bodied sports.

Any blind sports person who wants to pursue sports can do so easily but they will have to work very hard with dedication and devotion so that they can compete at the national and international level, because the level of discipline is very high.

Q :- Tell us about your role as a banker?

I play an important role in the bank as well. I look after Grievance cell and I ensure that all complaints are addressed within the stipulated timeline.

Q :- What is your message to the young generation regarding fitness and mental health?

People who exercise regularly have better fitness, mental health and emotional wellbeing, and lower rates of mental illness. Exercise is very important for people with mental illness – it not only boosts our mood, concentration and alertness, but improves cardiovascular and overall physical health. Any exercise is better than none. Hence, for keeping ourselves physically and mentally fit we must choose at least one sporting activity to achieve this fitness mantra. Exercise doesn't have to be strenuous, structured or take a long time to have benefits.

उषा
क्षे.का. दिल्ली (उत्तर)

जीवन के लिए जागरूकता
डॉ. रेड्डीज फाउंडेशन ऑफ हेल्थ एजूकेशन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने बैंकिंग क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए अपने मानव संसाधन को विभिन्न संभावित तरीकों से प्रशिक्षित किया है. हालांकि मौजूदा समय में जब पूरी दुनिया विभिन्न बीमारियों जैसे हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल एवं तनाव से जूझ रही है. ऐसी परिस्थिति में कर्मचारियों को अपना शारीरिक एवं भावनात्मक/मानसिक ध्यान रखना भी बहुत जरूरी हो जाता है.

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आसमान छूने वाले संगठनों में कर्मठ, रचनात्मक कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है. इसलिए हमारा बैंक शुरुआत से ही अपने स्टाफ सदस्यों के प्रति सजग रहा है. इसी को ध्यान में रखते हुए, हमारे स्टाफ सदस्यों हेतु "जीवन के लिए जागरूकता (एएफ़एल)" (Awareness for Life) कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने 12 सितंबर, 2022 को डॉ रेड्डी के साथ समझौता किया है. डॉ. रेड्डीज फाउंडेशन ऑफ हेल्थ एज्यूकेशन (डीआरएफ़एचई) डॉ रेड्डीज लाइबोरेटरीज़ लिमिटेड का एक हिस्सा है. यह संस्था स्वास्थ्य के क्षेत्र में कॉर्पोरेट कर्मचारियों के लिए अद्वितीय तथा समयबद्ध परीक्षण जागरूकता कार्यक्रम एवं डॉक्टरों, नर्सों एवं सहायक स्टाफ सदस्यों के लिए व्यवहार कौशल आधारित प्रशिक्षण संचालित करता रहा है. DRFHE ने पूरे भारत में 2600+ "जीवन के लिए जागरूकता (एएलएफ़)" कार्यक्रम संचलित किए हैं तथा विभिन्न सेक्टर से लगभग 1.4 लाख से अधिक कॉर्पोरेट कर्मचारी इस सुविधा का लाभ ले रहें हैं. यह कार्यक्रम लगभग 60-90 मिनट का होता है जिसमें न्यूनतम 40 कर्मचारियों को शामिल किया जाता है. इस कार्यक्रम के प्रवक्ता एक प्रतिष्ठित विशेषज्ञ चिकित्सक DRFHE द्वारा बुलाए जाते हैं. यह कार्यक्रम कॉर्पोरेट संस्थानों एवं कर्मचारियों के लिए नि:शुल्क है.

बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को इसकी सुविधा देने के लिए, सक्षम प्राधिकारी ने सभी क्षेत्रीय कार्यालय/ क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय/ केंद्रीय कार्यालय में "जीवन के लिए जागरूकता (एएलएफ़)" कार्यक्रमों के संचालन के लिए मंजूरी प्रदान की है. यह कार्यक्रम विभिन्न कॉर्पोरेट संस्थानों में होता रहा है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गुवाहाटी
विषय - मिर्गी पीड़ितों की देखभाल + सावधानियाँ एवं रोकथाम 16 नवंबर, 2022 को शाम 4 बजे, **वक्ता** - डॉ मानसी कश्यप - न्यूरोलॉजिस्ट विशेषज्ञ

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, लुधियाना
विषय- मिर्गी पीड़ितों की देखभाल + सावधानियाँ एवं रोक थाम 16 नवंबर, 2022 को शाम 4 बजे, **वक्ता** - डॉ विनीत - न्यूरोलॉजिस्ट विशेषज्ञ

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, बड़ौदा
विषय - मधुमेह पीड़ितों की देखभाल + सावधानियाँ एवं रोक थाम 15 नवंबर, 2022 को शाम 4 बजे, **वक्ता** - डॉ मुद्रिक पटेल - मधुमेह विशेषज्ञ

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मंगलोर
विषय - ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता
वक्ता - डॉ रामनाथ शेनॉय

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, धनबाद
विषय - किडनी केयर एवं स्टोन प्रीवेंशन, **वक्ता** - डॉ साकेत कुमार

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मदुरै
विषय - मधुमेह पीड़ितों की देखभाल एवं हाइपरटेंशन, **वक्ता** - डॉ कन्नन

पुरस्कार एवं सम्मान

दि. 21.09.2022 को 'आशीर्वाद, मुंबई' द्वारा आयोजित 30 वां आशीर्वाद राजभाषा पुरस्कार 2022 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को 'श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वन हेतु उत्कृष्ट पुरस्कार', बैंक की त्रैमासिक हिन्दी गृहपत्रिका 'यूनियन सृजन' को 'श्रेष्ठ गृहपत्रिका' पुरस्कार एवं डॉ. सुलभा कोरे को उनकी पुस्तक 'अंतिम क्षितिज का प्रदेश' के लिए श्रेष्ठ साहित्यिक कृति का पुरस्कार राजभवन, मुंबई में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी द्वारा प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री रजनीश कर्नाटक, कार्यपालक निदेशक; श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) एवं डॉ. सुलभा कोरे, संपादक, यूनियन धारा/ सृजन.

On 16.09.22 Union Bank of India bagged three awards for successfully implementing reforms (Winner in Governance and outcome centric HR, 2nd Runner up in 24x7 banking & 2nd Runner up in Collaborating for synergistic outcomes) in EASE 4.0 during FY 2021-22. Awards were given by Hon'ble Union Minister of State for Finance Shri Bhagwat Kishanrao Karad. This event was organized by IBA in Mumbai.

On 02.07.22 Union Bank of India, Training System, was adjudged a Winner and awarded the 1st Prize for Innovative Training Practices under Services (BFSI and IT/ITES) Category from Indian Society for Training & Development (ISTD) for the year 2020-21.

On 08.09.22 Union Bank of India was declared a Winner by ASSOCHAM at the 17th National Summit & Awards on Banking and Financial Sector Lending Companies held in Mumbai, under Large Bank in three categories (Overall Champion, Lending & Non-lending).

On 13.09.22 Union Bank of India, Staff college Bengaluru was declared winner of The BML Munjal Awards for 'Business Excellence through Learning & Development' under the Public Sector Category in its 16th Edition, 2021 at Hyatt Residency, New Delhi.

समाचार (केन्द्रीकृत)

Announcement of Financial results of Union Bank of India for the Quarter 2 F.Y. 2022-23 ended Sept. 2022. Seen in the photograph Ms. A. Manimekhalai, MD & CEO, Union Bank of India, flanked by Shri Nitesh Ranjan, Shri Rajneesh Karnatak and Shri Nidhu Saxena, Executive Directors of the bank.

On 08.07.22 Union Bank of India announced the launch of Metaverse Virtual Lounge & Open Banking Sandbox environment 'Uni-verse' at an event held at Mumbai.

On 08.08.22 Union Bank of India along with India's Fitness Icon Milind Soman, flagged off the 2nd edition of 'The Unity Run' from the Bank's Headquarters at Mumbai. in which Milind Soman ran solo for the 2nd edition of The Unity Run 450 kms from Jhansi to Delhi in 8 days.

On 01.08.22 Union Bank of India launched an Industry-first, dedicated, men-focused Committee 'EmpowerHim' as part of its flagship HR initiative 'Prerna'. The program aims to promote the employees' career trajectory and improve diversity in the Bank by picking out and resolving individual as well as common existing challenges.

On 12.07.22 Union Bank of India donated Raincoats made by underprivileged and unemployed men and women from urban and rural India to Mumbai Policemen at the office of Additional commissioner of Police, Armed Forces & Additional Commissioner of Police, Central Region for Armed Police Personnel.

On 20.09.22 Union Bank of India become the pioneer Bank to launch Credit Card payment through UPI and UPI Lite. This was launched in Mumbai by Hon'ble RBI Governor Shri Shaktikanta Das in the presence of Shri Nandan Nilekani, advisor to NPCI at a Global Fintech Fest.

On 23.09.22 Union Bank of India inaugurated 'Ethical Hacking Lab' at the Cyber security Centre of Excellence (CCoE) Hyderabad. The Lab was inaugurated by Ms. A. Manimekhalai, MD & CEO, Union Bank of India in presence of Executive Directors Shri Nitesh Ranjan, Shri Rajneesh Karnatak, and Shri Nidhu Saxena.

On 20.08.22 Union Bank of India entered into partnership with JCB India Ltd (JCB) for extending Equipment Finance to the Customers of JCB. The Memorandum of Understanding (MoU) was signed at Mumbai by Shri C.M. Minocha, Chief General Manager, MSME, Union Bank of India and Shri Anuj Tomar, Associate Vice President and Head - Retail Finance, JCB India Ltd.

On 15.07.2022 Union Bank of India launched an Industry-first, dedicated, women-focused Committee 'EmpowerHer' as part of its flagship HR initiative 'Prerna'. The program aims to promote women's career trajectory and improve diversity in the bank by navigating through existing biases and challenges.

जुलाई- सितंबर, 22 तिमाही में सीडैक के सहयोग से सीसो कार्यालय द्वारा पूरे भारत के समस्त बैंक ग्राहकों हेतु ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया था. इस दौरान कुल छह कार्यक्रम, छह क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय (बेंगलूरु, भुवनेश्वर, भोपाल, वाराणसी, चंडीगढ़ और पुणे) में आयोजित किये गए.

एमडी एवं सीईओ का वाराणसी एवं भोपाल दौरा

दि. 17-18.08.22 को एमडी एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै के वाराणसी दौरे के अंतर्गत कारोबार एवं सीएसआर संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों में उनके साथ कें.का. से मुख्य महाप्रबंधक, श्री एस. के. मोहपात्रा एवं श्री योगेंद्र कुमार सिंह, महाप्रबंधक श्री बी.एस. राव व क्षेत्र महाप्रबंधक वाराणसी श्री गिरीश जोशी, क्षेत्र प्रमुख वाराणसी श्री सुनील कुमार उपस्थित रहे. इस दौरान वाराणसी अंचल की कारोबारी समीक्षा बैठक, टाउन हॉल बैठक, वाराणसी एयरपोर्ट पर बैंक के प्रचार-प्रसार के लिए फव्वारा एवं उद्यान का उद्घाटन और राजकीय वृद्ध एवं अशक्त महिला गृह का जीर्णोद्धार भी किया गया.

दि. 19.09.22 को मध्य प्रदेश दौरा के अंतर्गत प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा क्षे.का. भोपाल(दक्षिण) क्षेत्र के हरदा जिले से डिजिटल केसीसी योजना का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत एक एनजीओ को सिलाई मशीन तथा अन्य उपयोगी सामग्री का वितरण किया गया एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को वित्तपोषित भी किया गया. इस अवसर पर महाप्रबंधक डिजिटाइजेशन, श्री संजय नारायण एवं क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री रूप लाल मीना एवं अन्य कार्यपालक गण के साथ ग्राहकगण भी उपस्थित थे.

दि. 08.09.22 को मऊ में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, श्री योगी आदित्यनाथ द्वारा यूनियन बैंक की विभिन्न सरकारी योजनाओं के अंतर्गत मंजूर किये गए ऋण लाभार्थियों को वितरित किये गए.

On 22.07.22 The premises of relocated CPPC, Delhi was inaugurated by the Executive Director, Shri Rajneesh Karnatak in the presence of Shri R. K. Jaglan, General Manager, Government Business and Relationship, Delhi.

दि. 25.07.22 को आज़ादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश सरकार के वित्तीय समावेशन एवं औद्योगिक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत मऊ में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के तत्वाधान में मेगा ऋण वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री दुर्गा शंकर मिश्र, मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन, विशिष्ट अतिथि, श्री शिव सिंह यादव, महानिदेशक, संस्थागत वित्त, उत्तर प्रदेश शासन, श्री अरुण कुमार, जिलाधिकारी मऊ, श्री गिरीश चंद्र जोशी, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी, श्री मिथिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, मऊ, एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित रहे.

दि. 15.08.22 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण कर राष्ट्रीय ध्वज को सम्मान देते हुए श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक, श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख, पटना तथा अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 16.07.22 को क्षे.म.प्र. चंडीगढ़, श्री अरुण कुमार ने क्षे. का. लुधियाना दौरे के दौरान कार्यनिष्पादन की समीक्षा की और मार्गदर्शन प्रदान किया. इस अवसर पर उनके साथ उप अंचल प्रमुख, श्री नवनीत गुप्ता, क्षेत्र प्रमुख, श्री राकेश कुमार मित्तल, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अजय भाटिया, शाखा प्रबंधक गण और कई स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 21.07.22 को क्षे.का. रायपुर द्वारा रीटेल लोन मेला का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र महाप्रबन्धक, भोपाल, श्री रूप लाल मीना एवं क्षेत्र प्रमुख, रायपुर, श्रीमती कविता श्रीवास्तव के साथ-साथ रायपुर क्षेत्र शाखा प्रबन्धक भी उपस्थित रहे.

दि. 01.07.22 हिसार क्षेत्र की सफीदों शाखा द्वारा यूनियन नारी शक्ति के तहत स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रू. 67 लाख रुपए की राशि संपादक, यूनियन धारा तथा राजभाषा प्रभारी, डॉ सुलभा कोरे, श्री राजीव कुमार (उप क्षेत्र प्रमुख) एवं श्री नीरज कुमार (सरल प्रमुख) की उपस्थिति में वितरित की गई.

दि. 03.09.22 को क्षे. का. कानपुर द्वारा आयोजित एमएसएमई ऋण शिविर अनेक एमएसएमई ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र एवं सैद्धांतिक रूप से स्वीकृति हेतु सहमति प्रदान की गई, इस अवसर पर श्री संतोष शुक्ला, उप अंचल प्रमुख, क्षेमप्रका लखनऊ; श्री संजीव कुमार, क्षेत्र प्रमुख, कानपुर; श्री ए. के. सिंह, डीजीएम, एनएसआईसी; श्री अजय कुमार यादव, असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ इंडिया, संयुक्त निदेशक एमएसएमई तथा मर्चेन्ट ऑफ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के चेयरमैन मिथिलेश गुप्ता सहित शाखा/ कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे.

दि. 16.07.22 को एसएसआई, भदोही शाखा में क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी, श्री गिरीश जोशी की अध्यक्षता में एक्स्पोर्टर्स मीट का आयोजन किया गया. इस दौरान क्षेत्र प्रमुख, प्रयागराज श्री संतोष कुमार, एलडीएम श्री प्रदीप कुमार झा, सहित कई ग्राहक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 22.07.22 को रायपुर क्षेत्र के शाखा प्रबन्धकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. क्षेत्र महाप्रबन्धक, भोपाल, श्री रूप लाल मीना द्वारा शाखाओं की समीक्षा की गई. जिसमें क्षेत्र प्रमुख, रायपुर, श्रीमती कविता श्रीवास्तव एवं उप क्षेत्र प्रमुख, रायपुर, श्री सौरभ चापेकर सहित कई ग्राहक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

'हर घर तिरंगा' के राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत भटिंडा टीम के साथ क्षेत्र प्रमुख, श्री आशीष सुवालका द्वारा भारत - पाकिस्तान सीमा, फाजिल्का-जलालाबाद सीमाओं पर बीएसएफ़ के समन्वय के साथ 'तिरंगा' वितरित किये गए.

दि. 06.08.22 को क्षे. का. हल्द्वानी द्वारा होटल क्रिस्टल ग्रांड, हल्द्वानी में एमएसएमई आउटरिच कैंप लगाया गया, जिसमें (बाएँ से) क्षेत्र प्रमुख, श्री गौरव कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री कमलेश बर्गली व एमएलपी प्रमुख, श्री धीरज कुमार (मुख्य प्रबन्धक) उपस्थित रहे और लाभार्थियों का वित्त पोषण किया गया.

दि.01.10.22 को क्षे. का. लुधियाना द्वारा कुल कारोबार रु 10000 करोड़ की प्राप्ति की गई और इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री राकेश कुमार मित्तल ने सभी स्टाफ सदस्यों को शुभकामनाएं दी और अगले लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित किया.

दि.30.08.22 को जवाहर नवोदय विद्यालय, मऊ में आयोजित दो दिवसीय क्षेत्रीय बालिका कबड्डी प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में मऊ क्षेत्र प्रमुख, श्री मिथिलेश कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए बैंकिंग सुविधाओं से सभी को अवगत कराया. साथ में जवाहर नवोदय विद्यालय, मऊ के प्राचार्य, श्री मुख्तार आलम एवं अन्य अतिथिगण उपस्थित रहे.

दि. 14.08.22 को क्षे. का. मऊ के सभागार में देश की विभाजन विभीषिका पर एक प्रदर्शनी स्थायी तौर पर लगाई गई, जिसका लोकार्पण क्षेत्र प्रमुख, श्री मिथिलेश कुमार व मुख्य अतिथि ग्रामीण पत्रकार समिति, मऊ के जिलाध्यक्ष, श्री हरिद्वार राय द्वारा किया गया.

दि. 06.08.22 को क्षे. का. प्रयागराज के सम्मेलन कक्ष में क्षेत्र प्रमुख श्री संतोष कुमार के नेतृत्व में अखिल भारतीय मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें सभी एमएसएमई उद्यमियों के साथ शहर की शाखाओं के शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दि 06.08.22 को क्षे. का. रायपुर द्वारा अखिल भारतीय मेगा एमएसएमई आउटरीच कैप आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र प्रमुख, रायपुर, श्रीमती कविता श्रीवास्तव एवं उप क्षेत्र प्रमुख, रायपुर, श्री सौरभ चापेकर सहित कई ग्राहक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 15.08.22 को स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर क्षे. का. प्रयागराज व पुलिस विभाग के स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में झण्डा फहराकर स्वतंत्रता दिवस मनाया गया व स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

दि. 01.09.22 को क्षे. का., मऊ में शारदा नारायण हॉस्पिटल, मऊ द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों हेतु नि:शुल्क स्वास्थ्य कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शारदा नारायण हॉस्पिटल, मऊ के डॉक्टर सुजीत कुमार के साथ क्षेत्र प्रमुख, श्री मिथिलेश कुमार एवं क्षेत्रीय कार्यालय व स्थानीय शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 07.09.22 को शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री अमरेंद्र कुमार, महाप्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई. साथ में श्री ज्ञान रंजन सारंगी, क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची; श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख, पटना तथा अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 15.07.22 को एसएसआई भदोही शाखा द्वारा मदर हलीमा स्कूल में 'खाता खोलो अभियान' का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल के छात्र एवं छात्राओं के खाते खोले गए. इस अवसर पर शाखा के स्टाफ सदस्यों ने अपना सक्रिय योगदान दिया.

दि. 28.09.22 को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधि के अंतर्गत क्षे. का. दिल्ली-मध्य की राजेंद्र नगर शाखा द्वारा 'आर्या महिला वृद्धा आश्रम' पूसा रोड को अलमारियां प्रदान की गई.

सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का भुवनेश्वर दौरा

दि. 04.08.22 को क्षे.म.प्र.का. भुवनेश्वर एवं क्षे.का. कटक द्वारा आयोजित टाउनहाल बैठक में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै. साथ में मुख्य महाप्रबन्धक, एमएसएमई श्री सीएम मिनोचा, मुख्य महाप्रबंधक सीआरबीडी, श्री योगेंद्र सिंह एवं मुख्य महाप्रबंधक, डीएमडी, श्री प्रवीण शर्मा.

दि. 05.08.22 को भुवनेश्वर अंचल की कारोबारी समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. उक्त बैठक में (बाएँ से दायें) मुख्य महाप्रबन्धक, सीआरबीडी श्री योगेंद्र सिंह, मुख्य महाप्रबन्धक, डीएमडी श्री प्रवीण शर्मा, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै, मुख्य महाप्रबन्धक, एमएसएमई श्री सीएम मिनोचा, मुख्य महाप्रबन्धक सीआरएलडी, श्री अशोक चंद्र.

दि. 04.08.22 को अपने भुवनेश्वर दौरे के अंतर्गत प्रबन्ध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै ने माननीय मुख्यमंत्री, ओड़ीशा श्री नवीन पटनायक से ओड़ीशा सचिवालय में मुलाक़ात की. इसी भेटवार्ता के दौरान ओड़ीशा पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु बनायी गई टी शर्ट को भी प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा दिखाया गया.

दि. 04.08.22 को प्रबन्ध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै अपने भुवनेश्वर दौरे के अंतर्गत वित्त सचिव, ओड़ीशा श्री विशाल कुमार देब से चर्चा करते हुए. साथ में महाप्रबन्धक, भुवनेश्वर श्री रमाकांत प्रधान.

दि. 05.08.22 को अद्भुत चिल्ड्रेन होम में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधन प्रस्तुत करती, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै. इस आयोजन के अंतर्गत 125 बच्चों के लिए बेडशीट, स्कूल बैग्ज एवं शूज का वितरण किया गया.

दि.15.08.22 को क्षे.म.प्र.का. कोलकाता एवं क्षे.का. कोलकाता मेट्रो द्वारा संयुक्त रूप से श्री जी.के. सुधाकर राव, क्षे.म.प्र. कोलकाता की उपस्थिति में 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया गया एवं शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई. इस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री के.एल. राजू, महाप्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय उपस्थित थे.

दि. 07.09.22 को क्षे.म.प्र. भुवनेश्वर श्री रमाकांत प्रधान, क्षे.प्र. भुवनेश्वर, श्री सोवन सेनगुप्ता तथा उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अशोक कुमार मिश्रा द्वारा बालुगाँव शाखा के नए परिसर एवं नए एटीएम का उद्घाटन किया गया तथा स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) ऋण एवं कृषि ऋण मेला के अंतर्गत लगभग रु. 2.5 करोड़ के ऋण का वितरण किया गया.

दि. 06.08.22 को क्षे.म.प्र. कोलकाता, श्री जी.के. सुधाकर राव एवं उप अंचल प्रमुख, श्री संजय कुमार की अध्यक्षता में क्षे. का. कोलकाता मेट्रो, ग्रेटर कोलकाता एवं हावड़ा के ग्राहकों के साथ संयुक्त रूप से मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें श्री बरुन कुमार, क्षेत्र प्रमुख कोलकाता, श्री अमित कुमार सिंहा, क्षेत्र प्रमुख ग्रेटर कोलकाता एवं श्री समीर कुमार, क्षेत्र प्रमुख हावड़ा के साथ ही ग्राहकगण भी उपस्थित थे.

दि. 06.07.22 को क्षेत्र प्रमुख, श्री बरुन कुमार की अध्यक्षता में क्षे.का. कोलकाता मेट्रो के अधीनस्थ शाखाओं के शाखा प्रमुखों हेतु कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्र महाप्रबन्धक कोलकाता श्री जी.के. सुधाकर राव एवं उप अंचल प्रमुख श्री संजय कुमार उपस्थित थे.

दि.06.08.22 को क्षे.का. सिलीगुड़ी द्वारा कोर्टयार्ड मेरियट, सिलीगुड़ी में अखिल भारतीय मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप किया. जिसमें श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री निरंजन कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का. सिलीगुड़ी एवं विभिन्न शाखाओं के प्रमुख सहित लगभग 50 सम्माननीय उद्यमियों ने भाग लिया.

दि. 02.08.22 को क्षे. का. भुवनेश्वर में उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अशोक कुमार मिश्रा द्वारा स्वर्ण ऋण योजना के प्रचार-प्रसार हेतु प्रमोशनल वैन की शुरुआत की गई. इस वैन ने 30 दिनों तक सभी शाखाओं के निकटतम क्षेत्र में जाकर स्वर्ण ऋण योजना का प्रसार प्रचार किया.

दि. 25.08.22 को क्षे.का. सिलीगुड़ी द्वारा कलिंगपाँग के निकट योक श्रीमटाम गाँव में किसान पाठशाला का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, श्री असीम कुमार पाल ने स्थानीय किसानों की जागरूकता के लिए उन्हें बैंक के कृषि एवं अन्य संबंधित उत्पादों के बारे में जानकारी दी.

समाचार (पश्चिम)

संसदीय समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा क्षे.का. सूरत का राजभाषा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा सूरत, गुजरात का निरीक्षण दि. 11.09.22 से 15.09.22 तक किया गया. दि. 13.09.22 को क्षे. का. सूरत का निरीक्षण किया गया. जिसमें श्री रजनीश कर्नाटक, कार्यपालक निदेशक; श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक; श्री विट्ठल बनशंकरी, क्षेत्र महाप्रबंधक एवं डॉ. सुलभा कोरे, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा बैंक की ओर से सहभागिता की गई.

श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक का अहमदाबाद दौरा

दि. 05.08.22 को क्षे.म.प्र.का. अहमदाबाद के अधीन सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, सरल एवं यूएलपी के कारोबार की समीक्षा, श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक; श्री एस के महापात्रा, मुख्य महाप्रबंधक; श्री अमरेन्द्र झा, महाप्रबंधक एवं श्री विट्ठल बनशंकरी, क्षेत्र महाप्रबंधक द्वारा की गई.

दि. 05.08.22 को अहमदाबाद में "टाउन हॉल मीटिंग" का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्रीय कार्यालय से श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक; श्री एस के महापात्रा, मुख्य महाप्रबंधक; श्री अमरेन्द्र झा, महाप्रबंधक; क्षेत्र महाप्रबंधक श्री विट्ठल बनशंकरी के साथ अहमदाबाद अंचल के सभी क्षेत्र प्रमुखों सहित 200 से अधिक कर्मियों ने भाग लिया.

दि. 04 से 06.07.22 तक भारत सरकार द्वारा गांधीनगर, गुजरात में "डिजिटल इंडिया सप्ताह 2022" का आयोजन किया गया, जिसका उदघाटन देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया. इस आयोजन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की डिजिटल प्रदर्शनी का नेतृत्व श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक, श्री राजीव मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक एवं श्री विट्ठल बनशंकरी, क्षेत्र महाप्रबंधक अहमदाबाद एवं अन्य कार्यपालकों ने किया.

दि. 04.07.22 को क्षे.म.प्र.का. अहमदाबाद द्वारा अहमदाबाद एवं गांधीनगर क्षेत्र के सभी कार्यपालकों के लिए आयोजित 'शिखर बैठक' में संबोधित करते हुए श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक एवं उनके साथ श्री विट्ठल बनशंकरी, क्षेत्र महाप्रबंधक एवं श्री पी के अवस्थी, उप अंचल प्रमुख, अहमदाबाद.

दि. 12.08.22 को यूबीआईएचएल (UBIHL) समीक्षा के दौरान कार्यपालक निदेशक, श्री रजनीश कर्नाटक का क्षे.का. मुंबई (ठाणे) में आगमन हुआ और इस अवसर पर उन्होंने क्षे.का. ठाणे के स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया.

दि. 20.07.22 को 'विशेष वसूली कैम्प' में अंचल का मार्गदर्शन करने हेतु श्री अशोक चन्द्र, मुख्य महाप्रबंधक, केन्द्रीय कार्यालय का स्वागत करते हुए श्री विट्ठल बनशंकरी, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद एवं उप अंचल प्रमुख श्री पी. के. अवस्थी.

दि. 24.09.22 को महाप्रबन्धक (मासं) श्री गोकुलानंद दास, उप महा प्रबन्धक, श्री अशोक कुमार, सहायक महा प्रबन्धक, श्री अनुज आनंद की उपस्थिति में क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई (वाशी) द्वारा 'हावरे टियारा हौसिंग सोसाइटी' में बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया.

दि. 15.08.22 को क्षे.म.प्र.का. मुंबई में आज़ादी का अमृत महोत्सव, भारतीय स्वतंत्रता का 75 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया, जिसमें क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री मनोज कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया. इस अवसर पर श्री गोविंद कुमार झा, उप महाप्रबंधक, क्षे. का., मुंबई (दक्षिण), श्री अनुज सिन्हा, उप अंचल प्रमुख; श्री राजेश मिश्रा, सहा. महाप्रबंधक; श्री मुकेश कुमार, सहा. महाप्रबंधक (ज़ेडवीसी) एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 06.08.22 को क्षे. का. नागपुर के अधीनस्थ चंद्रपुर शाखा ने एमएसएमई कैंप का आयोजन एमआईडीसी, चंद्रपुर में किया था, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एमआयडीसी चंद्रपुर, अध्यक्ष, श्री मधुसूदन रूंगठा उपस्थित थे. साथ ही सरल नागपुर से सरल प्रमुख, श्री मुरली कृष्णा, शाखा प्रमुख एवं गणमान्य ग्राहक उपस्थित थे.

दिनांक 30 जुलाई 2022 को एच. आर. सप्ताह 2022 के अंतर्गत क्षे. का., अमरावती द्वारा समूह प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. इस उपलक्ष्य में क्षेत्र प्रमुख श्री अनूप तराले, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रमोद ठाकुर एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 03.08.22 को क्षे.म.प्र. मुंबई, श्री मनोज कुमार की अध्यक्षता में मुंबई (ठाणे) क्षेत्र के शाखा प्रबन्धकों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई. इस अवसर पर श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले शाखा प्रमुखों एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्यों को क्षेत्र महाप्रबंधक महोदय द्वारा सम्मानित किया गया.

दि. 09.09.2022 को क्षे.का. गोवा द्वारा शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि क्षेत्र महाप्रबंधक पुणे, श्री राजीव पट्टनायक तथा क्षेत्र प्रमुख, गोवा श्री अशोक उपाध्याय के साथ शाखा प्रमुख गण उपस्थित थे.

दि. 06.08.22 को क्षे.का. मुंबई (ठाणे) एवं जगदाले ग्रुप (रियल एस्टेट संगठन) के संयुक्त तत्वावधान में वर्तक नगर शाखा में ऋण मेले का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता, क्षेत्र प्रमुख, सुश्री रेणु नायर एवं जगदाले ग्रुप के प्रमुख, श्री राहुल जगदाले द्वारा की गयी.

दि. 19.07.22 को क्षे.का. नागपुर में 54 वें बैंक राष्ट्रीयकरण दिवस पर उप क्षेत्र प्रमुख, श्री हरीश बेठा द्वारा स्टाफ सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में केक काटकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का 54वाँ राष्ट्रीयकरण दिवस मनाया गया.

दि. 15.08.22 स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में क्षे. का. नागपुर के अधीनस्थ सिविल लाइंस शाखा में क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रशांत कुमार साहू द्वारा ध्वजारोहण एवं वृक्षारोपण किया गया, इस कार्यक्रम में कई स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 05.08.22 को क्षे.का. नागपुर के अधीनस्थ रामटेक शाखा द्वारा हिवरी गांव में कृषि ऋण मेले का आयोजन किया गया, जिसमें शाखा प्रमुख, श्री कुशाल बंगाले ने गाँव के किसानों को कृषि संबंधित ऋण की जानकारी दी.

दि. 19.07.22 को क्षे. का. वाशी (मुंबई) में क्षेत्र प्रमुख, श्री अशोक कुमार दास, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अनुज आनंद की उपस्थिति में मानव संसाधन सप्ताह का आरंभ किया गया और मानव संसाधन विभाग की तरफ से शामिल नए अधिकारियों को सम्मानित किया गया.

On 22.09.22 CAG Vashi team organized an Account opening camp in AAMCHI SHALA (School) to mobilize saving accounts and open new accounts with Branch Head, Mrs. Jayeta Das.

लोगों में स्वर्ण ऋण से संबंधित जागरूकता फैलाने एवं स्वर्ण ऋण लेने हेतु जनता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से क्षे.का. नागपुर के अधीनस्थ गढ़चिरोली शाखा द्वारा सायकल रिक्शा के माध्यम से प्रचार एवं प्रसार किया गया.

दि. 25.08.22 को क्षे.का. नागपुर के अधीनस्थ विभिन्न शाखाओं में कृषि पाठशाला का आयोजन किया, जिसके अंतर्गत किसानों को बैंक द्वारा दिये जा रहे विभिन्न उत्पादों की जानकारी दी गई.

दि. 08.07.22 को आणंद क्षेत्र में मेगा क्रेडिट कैंप का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री नीरज सिंह द्वारा ग्राहकों को ऋण मंजूर पत्र प्रदान किये गए.

दि. 03.09.22 को क्षे. का. मुंबई वाशी में क्षेत्र प्रमुख, श्री अशोक कुमार दास, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री अनुज आनंद की उपस्थिति में सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा सतर्कता जागरूकता की शपथ ली गई.

समाचार (दक्षिण)

सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलुरू का दौरा

दि.18.07.22 को बैंक की प्रबंध निदेशक व सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै के स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में आगमन पर क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री आलोक कुमार व प्राचार्य, श्री हृषीकेश मिश्रा द्वारा पुष्प गुच्छ से उनके स्वागत के उपरांत उनके द्वारा परिसर में वृक्षारोपण के पश्चात् नवनिर्मित पार्क में लगाए गए खूबसूरत फव्वारे का उद्घाटन किया गया.

दि. 18.07.22 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में आयोजित एक समारोह में प्रबंध निदेशक व सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा संकाय, श्री सचिन बंसल द्वारा तैयार संदर्भ पुस्तिका "एसडब्ल्यूओ-ए बीगिनिंग" का विमोचन किया गया. उनके साथ क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री आलोक कुमार, प्राचार्य, श्री हृषीकेश मिश्रा व सहायक महाप्रबंधक, श्री दीपक नागर.

दि. 12.08.22 को क्षे. का मदुरै द्वारा आयोजित महिला स्वयं सहायता समूह लोन मेला में सायलगुडी शाखा के स्वयं सेवा समूहों को एम.डी एवं सी.ई.ओ, सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा 3 करोड़ 75 लाख का चेक प्रदान किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री पी रामनाथ दिवाकर एवं अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे.

दि. 12.08.22 को एम. डी एवं सीईओ, सुश्री ए.मणिमेखलै क्षे.का मदुरै द्वारा सायलगुडी में आयोजित महिला स्वयं सहायता समूह मेले में चेक वितरण समारोह के दौरान वहाँ के निवासियों से मिली एवं उनके द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी की प्रशंसा भी की.

दि. 20.08.22 को कार्यपालक निदेशक, श्री नितेश रंजन ने क्षे म.प्र.का., मंगलूरु में टाउन हॉल बैठक के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया. इस अवसर पर के.का. के महाप्रबंधक, श्री बिजू वासुदेवन, श्री आर रथीश एवं श्री अरुण कुमार; क्षे म.प्र., मंगलूरु श्री एम रवीन्द्र बाबू, अधीनस्थ क्षे.का. के क्षेत्र प्रमुख एवं अन्य वरिष्ठ कार्यपालक गण उपस्थित थे.

दि. 04.07.22 को माननीय राज्यसभा सांसद श्रीमती जेबी मेथर ने बैंक डिजिटलीकरण अभियान का उद्घाटन किया. इस अवसर पर श्री देवराज आर, क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम (ग्रामीण); श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम क्षेत्र तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

On 15.08.22 i.e. 76th Independence Day Mr. Prudhvi Tej Immadi IAS, Joint Managing Director - HR & Admin, AP state inaugurated 110 Nos of solar panel units 540Wp each at FGMO Vijayawada office building in the presence of FGM Vijayawada, Dy ZH Vijayawada, and RH Vijayawada along with other executives.

दि. 01.09.22 को श्री नवनीत कुमार ने क्षेत्र महाप्रबंधक विजयवाड़ा एवं संयोजक- राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त होने पर मुख्य मंत्री आवास पर आंध्र प्रदेश राज्य के माननीय मुख्यमंत्री, श्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी से सरकारी कारोबार पर चर्चा की.

दि.12.08.2022 से 14.08.2022 तक क्षे.का., तिरुवनंतपुरम में विभाजन-विभीषिका- स्मृति दिवस का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन बीएसएफ सेक्टर मुख्यालय, उप कमाडेंट, श्री श्याम कुमार ने किया. साथ में, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सनल कुमार एन एवं अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे.

दि.16.09.22 को सीसीओई (CCoE) सीओ उपभवन, हैदराबाद में श्री जी.नरेंद्र नाथ, संयुक्त सचिव, राष्ट्रीय सुरक्षा काउंसिल, सचिवालय, नई दिल्ली द्वारा साइबर वार्ता प्रस्तुत की गई, जिसमें सीओ उपभवन और क्षे. का. सैफाबाद के कर्मचारियों द्वारा उपस्थिति दर्ज की गई.

दि. 08.07.22 को माननीय मुख्यमंत्री, आंध्र प्रदेश श्री वाई. एस. जगन मोहन रेड्डी एवं क्षेत्र महाप्रबंधक विजयवाड़ा श्री वी. ब्रह्मानंद रेड्डी व संयोजक राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति द्वारा ग्राहकों को जगनान्न तोडु ऋण योजना की घोषणा आंध्र प्रदेश सेक्रेटेरिएट में की गई.

दि. 08.09.22 को सीसीओई (CCoE) हैदराबाद में आरबीआई नामित निदेशक, श्री अरुण कुमार सिंह द्वारा साइबर सुरक्षा जागरूकता पुस्तिका का अनावरण किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (लेखा परीक्षा एवं निरीक्षण) एवं सीसीओई से स.म.प्र श्री ए. शिव प्रसाद एवं स.म.प्र श्री किशन राव उपस्थित थे.

On 06.08.2022. Shri M V Balasubramanyam, CGM, Treasury & IB inaugurated the Exporter's meet at Ernakulam, flanked with FGM Mangaluru, Shri M Ravindra Babu; Regional Head, Ernakulam Rural, Shri R Devaraj & Regional Head, Ernakulam, Shri Manjunathaswamy CJ.

On 24.08.22 FGM Mangaluru, Shri M Ravindra Babu; inaugurated the NRI meet at Ernakulam. flanked With GM, Gold loan vertical, C.O. Shri Amarendra Kumar Jha; Regional Head, Ernakulam, Shri Manjunathaswamy CJ and Regional Head, Ernakulam Rural, Shri R Devaraj

दि. 05.08.22 को क्षे.का. कोषि़क्कोड द्वारा पालक्काड में एनआरआई ग्राहकों के लिए एनआरआई बैठक आयोजित की गई जिसमें क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूर श्री रवीन्द्र बाबू ने ग्राहकों को संबोधित किया.

दि. 02.07.22 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में आयोजित बेंगलूरु अंचल के क्षेत्र प्रमुखों की समीक्षा बैठक का शुभारंभ करते हुए क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री आलोक कुमार व प्राचार्य, स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु, श्री हृषीकेश मिश्रा. साथ में श्री मनोहर एम. आर., क्षेप्र, बेंगलूरु (उत्तर), श्री अरविंद हेगड़े, क्षेप्र, कलबूरगी, श्री अनंत के.एस., क्षेप्र, मैसूर, श्री टी. नंजुंडप्पा, क्षेप्र, बेंगलूरु (दक्षिण), श्री सुनील कुमार यादव, उप अंचल प्रमुख, बेंगलूरु, श्री के. नटशेखरा, उप महाप्रबंधक, श्री ए.राजमणि, क्षेप्र, शिवमोग्गा व डॉक्टर टी.प्रकाश, क्षेप्र, बेलगावी.

दि. 15.08.22 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर क्षे. का. बेंगलूरु दक्षिण द्वारा ध्वजारोहण कर शहीदो के बलिदानों को याद किया गया एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए. इस अवसर पर क्षेत्र महा प्रबंधक, श्री आलोक कुमार, उप अंचल प्रमुख, श्री सुनील कुमार यादव, क्षेत्र प्रमुख- क्षे. का. बेंगलूरु (दक्षिण) श्री टी. नंजुंडप्पा सहित सशस्त्र प्रहरीगण एवं सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

On 06.08.2022 Ernakulam and Ernakulam Rural Regions jointly conducted a Mega outreach camp at Ernakulam which was inaugurated by Shri M V Balasubramanyam, CGM, Treasury & IB, C.O. FGM Mangaluru, Shri M Ravindra Babu; RH, Ernakulam (Rural), Shri R Devaraj & RH, Ernakulam, Shri Manjunathaswamy CJ were also present.

दि. 05.09.22 को क्षे.म.प्र.का. मंगलूरु, क्षे.का. मंगलूरु एवं कें. का. एनेक्स, मंगलूरु के स्टाफ सदस्यों हेतु साइबर सुरक्षा जागरूकता विषय पर टाउन हाल बैठक का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में अध्यक्ष, साइबर सुरक्षा कार्पोरेशन, डॉ. हेराल्ड डी.कोस्टा का स्वागत करते हुए मंगलूरु अंचल प्रमुख, श्री एम रवीन्द्र बाबू. ट्रांजेक्शन बैंकिंग के महाप्रबंधक, श्री आर रथीश एवं अन्य वरिष्ठ कार्यपालक गण भी इस अवसर पर उपस्थित रहे.

दि. 19.09.2022 को श्री एम रवीन्द्र बाबु, अंचल प्रमुख, क्षे.म.प्र.का मंगलूर द्वारा क्षे.का. तिरुवनंतपुरम का दौरा कर सभी शाखा प्रबंधकों की समीक्षा की गई. उनके साथ क्षेत्र प्रमुख तिरुवनंतपुरम, श्री सुजीत एस तारीवाल एवं अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे.

दि. 25.07.22 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में पदस्थापन के उपरांत महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन व विकास) श्रीमती अन्नपूर्णा एस. ने प्राचार्य श्री हृषीकेश मिश्रा व समस्त स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में वृक्षारोपण कर परिसर को हरा-भरा रखने हेतु समस्त सदस्यों द्वारा सहयोग का आह्वान किया.

दि.25.08.2022 को उप क्षेत्र प्रमुख, कोझिक्कोड, श्री विशु कुमारा यू. ने यूएमएफबी शाखा का उद्घाटन किया, साथ में शाखा प्रमुख, सुश्री बिजिशा एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 15.08.22 को क्षे.का., तिरुवनंतपुरम् में स्वतंत्रता दिवस समारोह में श्री सुजीत एस तारीवाल, क्षेत्र प्रमुख ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया, जिसमें अन्य कार्यपालक सहित स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 17.08.22 को सतर्कता जागरूकता के अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, कोझिक्कोड श्री टी. ए. नारायणन के साथ उप क्षेत्र प्रमुख, श्री विशु कुमारा यू., अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्यों ने सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा ली.

On 12. 08.22 HAR GHAR TIRANGA was celebrated by all the staff members of FGMO Vijayawada and RO Vijayawada at FGMO premises. Around 200 staff members participated in the campaign led by shri Vege Ramesh, Dy ZH Vijayawada.

दि. 13.08.2022 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन व विकास) श्रीमती अन्नपूर्णा एस. व प्राचार्य, श्री हृषीकेश मिश्रा द्वारा महाविद्यालय में कार्यरत समस्त सदस्यों को तिरंगा प्रदान कर 'हर घर तिरंगा अभियान' का शुभारंभ किया गया.

दि. 15.08.22 को क्षे.का. कोझिक्कोड के प्रांगण में क्षेत्र प्रमुख, श्री टी ए नारायणन द्वारा ध्वजारोहण कर स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया. जिसमें स्टाफ एवं महत्वपूर्ण ग्राहकों ने कार्यक्रम की शोभा बढाई एवं कार्यक्रम में पूर्व सैनिकों, वरिष्ठ ग्राहकों को सम्मानित भी किया गया.

दि. 12.08.22 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर क्षे. म.प्र.का. विजयवाड़ा के परिसर में सत्यनिष्ठा की शपथ लेते हुए कार्यपालक गण, अधिकारी व कर्मचारी गण.

दि. 08.09.22 को क्षे. का मदुरै के स्टाफ सदस्यों द्वारा ओणम पर्व मनाया गया, इस अवसर पर महिला स्टाफ सदस्यों द्वारा ओणापूक्कलम भी बनाया गया.

दि.15.08.2022 को क्षे.म.प्र.का. विजयवाड़ा में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अंचल प्रमुख, श्री वी. ब्रम्हानन्दा रेड्डी द्वारा ध्वजारोहण कर सशस्त्र गार्डों, सुरक्षा गार्डों और अन्य व्यक्तियों को सम्मानित किया गया. इस कार्यक्रम में श्री वेगे रमेश, उप अंचल प्रमुख तथा श्री एन श्रीनिवास राव, क्षेत्रीय प्रमुख,विजयवाड़ा के साथ साथ स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे.

नदरू यख़नी

कश्मीर के प्रत्येक व्यंजन कश्मीर के लोगों की सादगी एवं प्राकृतिक सुंदरता उसकी विविधता को दर्शाती है, ऐसी ही एक सब्जी है नदरू जिसकी खेती बहुतायत मात्रा में की जाती है. नदरू अर्थात कमल ककड़ी कश्मीरी शाकाहारी (व्हेज) एवं मांसाहारी (नॉन व्हेज) व्यंजनों में प्रयोग की जाने वाली सब्जी है.

सामग्री: ½ किलो नदरू तलने के लिए तेल, ¼ छोटा चम्मच हींग, ½ छोटा चम्मच जीरा, ½ छोटा चम्मच जीरा पाउडर, 1 बड़ी इलायची, 3/2 सौंफ पाउडर, ½ चम्मच अदरक पाउडर (अदरक पेस्ट), ½ चम्मच गरम मसाला, 2 छोटी इलायची, 2 तेजपत्ता, आधी इंच दालचीनी का टुकड़ा, 2 छोटी कटोरी दही मथी हुई, नमक स्वादानुसार.

नदरू को अच्छे से धोकर टुकड़ों में काट लें. एक कड़ाही में तेल गरम करें, गरम तेल में 2 साबुत छोटी इलायची, जीरा, 1 बड़ी इलायची, तेजपत्ता, दालचीनी के टुकडें का तड़का डालें तथा तड़का चटक जाने के उपरांत हींग डाल कर नदरू के टुकड़ों को हल्का सुनहरा होने तक नमक डाल कर भून लें. नदरू भूनने के उपरांत निकाल लें. उसी तेल में अदरक पेस्ट, सौफ पाउडर, जीरा पाउडर का घोल बनाकर कड़ाही में डालकर ½ मिनट के लिए भून लें. धीमी आंच पर, फेटी हुई दही, कड़ाही में एक हाथ से डालते रहें तथा दूसरे हाथ से उसे लगातार चलाते रहें, उसे तब तक चलाते रहें जब तक ग्रेवी पूरी तरह से गाढ़ी न हो जाए, स्वादानुसार नमक डालें. ग्रेवी गाढ़ी होने के उपरांत नदरू डालें तथा 10 मिनट के लिए धीमी आंच पर रखने के उपरांत गैस बंद कर दें, अंत में धनिया पत्ती और गरम मसाला डालें.

तनीशा शर्मा
के.का. मुंबई

जंक फूड कितना हानिकारक

बच्चे हों, युवा हों या बुज़ुर्ग, भागती-दौड़ती ज़िंदगी में हर किसी को स्वादिष्ट भोजन तो चाहिये ही, साथ ही जल्दी बनने वाला खाना भी चाहिये. शायद यही वजह है कि इन दिनों जंक फूड की लोकप्रियता हर उम्र के लोगों में बहुत तेजी से बढ़ी है. आप किसी शहर, किसी क़स्बे और गांव में जाइये आपको बर्गर, पिज़्ज़ा फ्रेंच फ्राइज़ और नूडल्स की दुकानों पर लंबी-लंबी कतारें दिख जाएंगी. जंक फूड में स्वाद तो है ही, साथ ही झट-पट तैयार भी हो जाता है. शायद ही कोई ऐसा हो जो जंक फूड के नुकसान से वाक़िफ़ न हो लेकिन ज़ुबान के आगे स्वास्थ्य बहुत पीछे छूटता जा रहा है. ऐसा नहीं है कि हम जिसे पश्चिमी, चाइनीज़ या थाई फूड कहते हैं वहीं जंक फूड के रूप में बिकता है, लंबे समय से भारतीय रसोई का हिस्सा रहे कुलचे- छोले, छोले- भटूरे, पकौड़े इत्यादि भी इसी जंक फूड की श्रेणी में आते हैं.

जंक फूड के स्वाद से तो हम सब परिचित हैं लेकिन, संभव है कि हम उसके उन पहलुओं से परिचित न हो जो लतागार हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहे हैं. तो आइए इस बार हेल्थ टिप्स में जानते हैं जंक फूड से होने वाले नुकसान के बारे में -

जंक फूड खाने से होने वाले नुकसान में सबसे पहले बात करेंगे सिरदर्द जैसी समस्या की. दरअसल, फास्ट फूड में मोनोसोडियम ग्लूटामेट (MSG) का उपयोग होता है. इस कंपाउंड से चाइनीज रेस्टोरेंट सिंड्रोम हो सकता है. इसमें फास्ट फूड खाते ही सिरदर्द और अन्य लक्षण नजर आने लगते हैं. रिसर्च के अनुसार, जंक फूड से मांसपेशियों में संकुचन होता है, जिससे सिरदर्द होता है.

जंक फूड खाने के नुकसान में डिप्रेशन की समस्या भी शामिल है. ईरानी बच्चों और व्यस्कों पर हुए एक अध्ययन से पता चलता कि जंक फूड के सेवन से कई तरह की मानसिक समस्याएं होती हैं, जिनमें से एक अवसाद भी है. इसके अलावा, कोला और कार्बोनेटेड पेय में मौजूद कैफीन की मात्रा बच्चों में अति सक्रियता/ध्यान की कमी के लिए जिम्मेदार होती है.

अध्ययन की मानें, तो जंक फूड हृदय रोगों का भी एक प्रमुख कारण है. यह धमनियों में प्लाक बनाता है, जिसकी वजह से हृदय के नीचे की ओर रक्त को पंप करते समय अधिक दबाव पड़ता है. वहीं, ऊपर की ओर हृदय में रक्त की वापसी में भी कमी होती है. इसकी वजह से हृदय को दो तरह के नुकसान हो सकते हैं. पहला हृदय में थकान और दूसरा ऑक्सीजन की आपूर्ति में नुकसान होना, इसी वजह से जंक फूड के नुकसान में हृदय रोग की समस्या को भी गिना जाता है.

जंक फूड के नुकसान में मधुमेह की समस्या भी शामिल है. मधुमेह एक क्रोनिक मेटाबोलिक डिसऑर्डर है, गौर हो कि डायबिटीज मेलिटस टाइप 1 और टाइप 2, इन दो प्रकार का होता है. जंक फूड के सेवन से 90% से अधिक मामले टाइप 2 मधुमेह के हो सकते हैं. इस आधार पर मान सकते हैं कि फास्ट फूड के सेवन से मधुमेह का जोखिम भी बढ़ता है.

फास्ट फूड खाना कभी भी सही नहीं माना गया है. बावजूद इसके लोग इसका सेवन लगातार करते हैं. अब दोबारा इसके सेवन से पहले लेख में बताए गए फास्ट फूड खाने के नुकसान पर जरूर गौर करें. भले ही स्वाद में जंक फूड अच्छा हो, लेकिन जंक फूड खाने के कई नुकसान हैं. खाने का कभी मन भी हो, तो इसकी मात्रा एकदम सीमित रखें. वैसे हमेशा जंक फूड के बजाय पौष्टिक आहार को ही तवज्जो दें, क्योंकि आज की सतर्कता, कल के स्वास्थ्य संबंधी नुकसान से बचा सकती है.

नितिन वासनिक
के.का. मुंबई

यूनियन बैंक की कॉर्पोरेट गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का जून 2022 अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका को पढ़ने में विषय वस्तु से गागर में सागर भर देने का आभास हुआ. पत्रिका में वर्तमान में प्रासंगिक डिजिटल लर्निंग व साइबर क्राइम पर रचनाएँ, बशीर जी का जीवन परिचय और मानव संसाधन के विकास पर रचनाएँ ज्ञानप्रद हैं. पत्रिका में देश की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन स्थलों का सुंदर वर्णन एवं बाली के मनोहर दृश्यों का मनमोहक चित्रण किया गया है. तिमाही में बैंक में राजभाषा एवं कारोबार गतिविधियों, उपलब्धियों, आदि का समावेश अत्यंत सराहनीय है. पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को बहुत -बहुत बधाई एवं मेरी असीम शुभकामनाएँ.

- बी. एल. मीना

निदेशक (राजभाषा विभाग), गृह मंत्रालय, भारत सरकार

भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'यूनियन धारा' का अप्रैल-जून 2022 अंक प्राप्त हुआ. अंक की शुरुआत आपने सुनील अगरवाल के 'डिजिटल लर्निंग' पर एक महत्वपूर्ण लेख से की है. यह पहल स्वागत योग्य है. एक ऐसे समय में जब कोरोना ने आम आदमी का अपने जरूरी कार्यों के लिए घर की दहलीज लांघ कर बाहर निकलना दूभर कर दिया है और डिजिटल बैंकिंग की अवधारणा अपरिहार्य होती जा रही है, ऐसे में आपने इस जरूरी विषय को उठाकर अपनी उत्कृष्ट संपादकीय दृष्टि का परिचय दिया है. इसी अनुक्रम में साइबर क्राइम और डिजिटल करेंसी के बारे में भी आपने जानकारीपूर्ण लेख दिए हैं. पत्रिका में हमारे प्रिय शायर बशीर बद्र पर अपूर्वा सिंह ने बहुत अच्छा लिखा है. जनसेवक बाबा आमटे के व्यक्तित्व पर प्रमोद जी ने अच्छा प्रकाश डाला है. अंक की साज-सज्जा और अन्य तकनीकी पक्ष भी पाठकीय संतोष देते हैं. एक संग्रहणीय अंक के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ.

- शशांक युगल किशोर दुबे

महाप्रबंधक (राजभाषा), कॉर्पोरेट कार्यालय, आईडीबीआई बैंक

आपके कार्यालय की उक्त गृह पत्रिका का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद. हमें प्रसन्नता है कि आपने इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के विभिन्न रचनात्मक आयामों को उद्घाटित करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किया है. पत्रिका में समाहित बैंकिंग जगत से जुड़े आलेख, काव्य संकलन, कहानियां एवं अन्य गतिविधियां उल्लेखनीय हैं. पत्रिका की विषय-वस्तु और संकल्पना उत्कृष्ट है. पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद.

- माधुरी केलकर

सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक

आपके कार्यालय की 'यूनियन धारा' गृह पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. हमें प्रसन्नता है कि आपने इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी को रचनात्मक रूप से सशक्त बनाने में सफल योगदान दिया है. राजस्थान विशेषांक में ज्ञानवर्धक आलेखों को समाहित करने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है. पत्रिका में राजस्थान की संस्कृति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्राकृतिक तथा खनिज संपदा, स्थापत्य कला, त्योहार, व्यंजन, साहित्य, ऐतिहासिक व्यक्तित्व जैसे विविध आयामों को सारगर्भित रूप में समाहित करने का सराहनीय प्रयास किया गया है. इससे स्टाफ सदस्यों में हिन्दी में सृजनशीलता को बढ़ावा मिलेगा और कार्यालय में हिन्दी कार्यान्वयन उत्तरोत्तर बेहतर होगा. पत्रिका की संकल्पना, साज-सज्जा और सम्पूर्ण कलेवर सृजनात्मक रूप से उत्कृष्ट है. पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद. हमें आशा है कि भविष्य में भी कलात्मकता एवं नवोन्मेषिता से परिपूर्ण आपका यह प्रयास जारी रहेगा. शुभकामनाओं सहित,

- सुशील कृष्ण गोरे

उप महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक

आपके बैंक की गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' का अप्रैल-जून 2022 अंक प्राप्त हुआ. तदर्थ धन्यवाद.

पत्रिका सुंदर तथा संग्रहणीय है. पत्रिका का कवर अत्यंत आकर्षक है. पत्रिका में संकलित उर्दू के लफ्जों से सजा मुहब्बत की शमशीर हूँ, हाँ मैं बशीर हूँ, खूबसूरत एवं ऐतिहासिक नगर - राजगीर, शकुन-अपशकुन अंधविश्वास या वैज्ञानिक तर्क, एवं बाबा आमटे- एक जन सेवक आदि विविध लेख संतुलित, रोचक व ज्ञानवर्द्धक हैं. पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मंडल, सभी रचनाकारों व लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

- राजीव वार्ष्णेय

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

यहां मीलों कोई, आता जाता नहीं
सदियों की शांति, कोई आवाजें नहीं
प्रकृति रंग बदलती सी, यहां पल पल
अब बर्फ के सिवाय यहां कुछ भी नहीं

कविता : डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा, कें. का. मुंबई

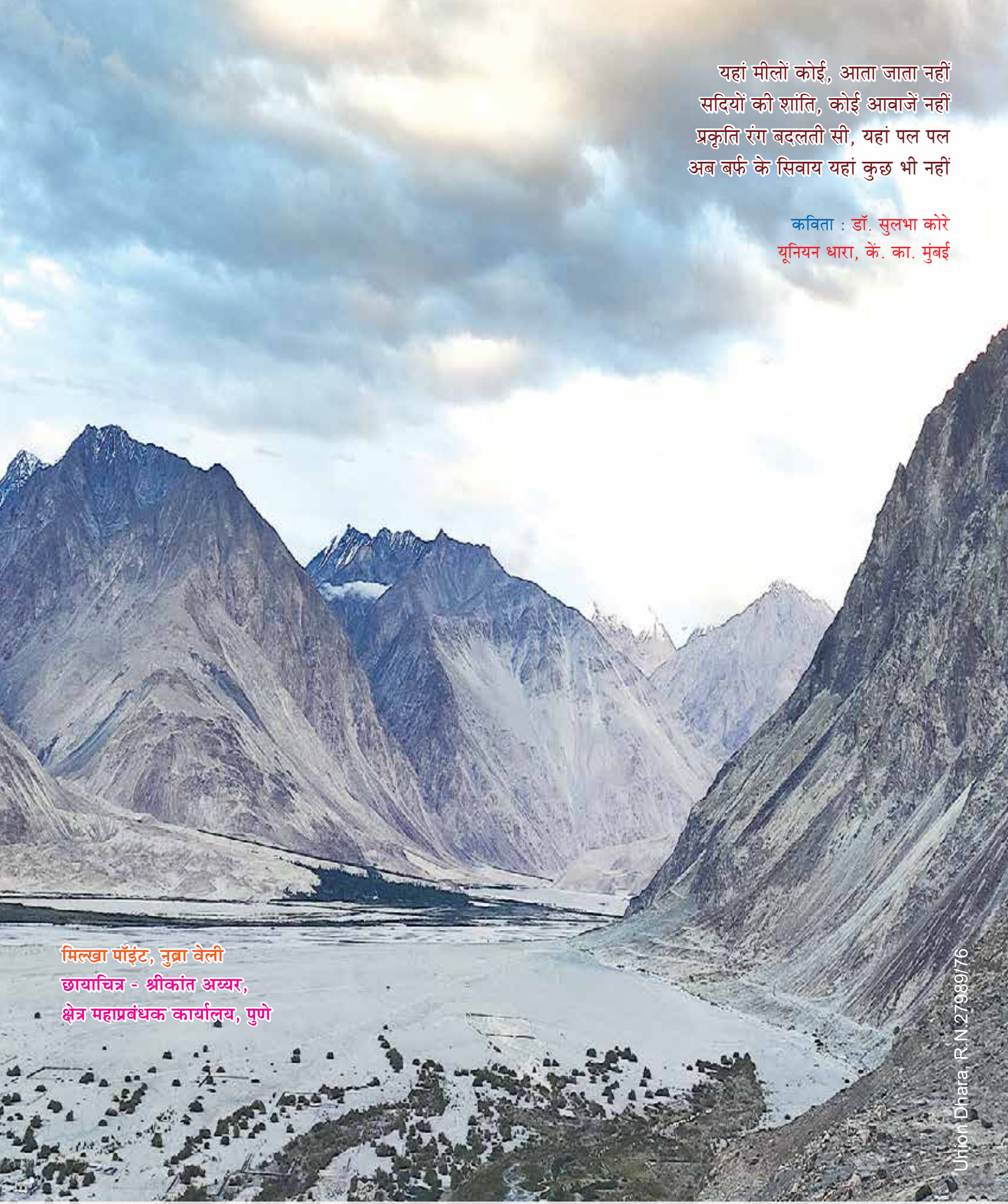

मिल्खा पॉइंट, नुब्रा वेली
छायाचित्र - श्रीकांत अय्यर,
क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, पुणे

Union Dhara, R.N.27989/76

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Dr. Sulabha Kore.